

धर्म संग्रह

डॉ. राम अवतार अग्रवाल



धर्मसंग्रह

यह पुस्तक

पूज्य पिताजी स्व. श्री नत्थी लाल जी मंगल एवं
माताजी स्व. रेशम देवी मंगल
निवासी जगनेर

तथा

स्व. श्री सोहन लाल जी अग्रवाल एवं
स्व. श्रीमती शान्ति देवी अग्रवाल
निवासी अलवर
(डॉ. रेनू अग्रवाल के पिता जी - माता जी)

को समर्पित है।

प्रस्तावना

राम और कृष्ण ये दो शब्द, शब्द नहीं बल्कि भारत वर्ष, हिंदू धर्म और सनातन संस्कृति की आत्मा हैं। श्री राम की रामायण (रामचरितमानस) और श्री कृष्ण की गीता (श्रीमद्भागवत गीता), ये दो महाग्रंथ आदर्श गृहस्थ धर्म, आदर्श राज धर्म, आदर्श पति व्रत धर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन के साथ साथ भक्ति, ज्ञान वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाले हैं। ये दोनों ग्रंथ स्त्री पुरुष, बालक वृद्ध और युवा, शिक्षित, अशिक्षित, अमीर, गरीब सबके लिए समान उपयोगी है। इन ग्रंथों की प्रत्येक पंक्ति स्वयं सिद्ध मंत्र है, जिनका श्रद्धा पूर्वक पाठ करने तथा अपने जीवन में पालन करने से परम पुरुषार्थ एवं भगवान की प्राप्ति होती है।

मनुस्मृति भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग के कर्तव्यों की पूरी व्याख्या है।

आज की युवा पीढ़ी स्कूल कॉलेज की पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और उसके बाद लंबे लंबे समय की नौकरी के कारण इन ग्रंथों को पढ़ने तथा मनन करने का समय नहीं निकाल पाती। उन्हें अपनी इस महान संस्कृति का ज्ञान ही नहीं हो पाता। अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्राप्त करने के कारण हिन्दी व्याख्या भी नहीं समझ पाते और यह विचार बना लेते हैं कि ये ग्रंथ उनके लिए नहीं है। ऐसे ही युवाओं, व्यवसायियों, कॉर्पोरेट एवं ब्यूरिक्रेट्स को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में गीता, रामचरितमानस और मनुस्मृति के चुने हुए श्लोक दोहा एवं चौपाई को सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है, ताकि ये हमारे मन मस्तिष्क में पहुँच सके और इन्हें हम अपने जीवन में उपयोग में लें।

भारतीय संस्कृति पूर्व जन्म और इस जन्म के कर्म सिद्धांत पर आधारित है। संसार में सर्वत्र सुख दुख, हानि लाभ, जीवन मरण, अमीरी गरीबी, रुग्णता और स्वस्थता स्पष्ट दिखायी देती है। इन सब का कारण पूर्व जन्म और इस जन्म के कर्तव्य होते हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ क्षण ऐसे होते हैं जब उसकी बुद्धि निर्मल और सात्विक रहती है। उन क्षणों में किए गए कर्म शुभ कामनाओं से पूर्ण एवं पुण्यवर्धन करने वाले होते हैं।

24 घंटे के समय में से यदि हम कुछ समय भगवान की आराधना व परोपकार के शुभ कार्यों में लगायें तो उसका पुण्य फल हमें एवं हमारी संतानों को अवश्य मिलेगा।

प्रस्तुत पुस्तक में यही प्रयास है कि हम भगवान के बताये रास्ते पर चलें और अपना जीवन भक्तिमय बनाकर पुण्य लाभ लें।

यद्यपि इस पुस्तक में बहुत सी गलतियाँ मिलेंगी, आपसे निवेदन है कि उसके लिए मुझे क्षमा करें। आपके योग्य जो ज्ञान और भक्ति मिले उसे आप अपने जीवन में उपयोग में लें।

। जय भारत ।

डॉ. राम अवतार अग्रवाल
एम.बी.बी.एस., एम.डी.

Ram and Krishna, these two words are not just words but the soul of Bharat (India), Hinduism, and Sanatan culture. The Ramayana (Ramcharitmanas) of Shri Ram and the Gita (Shrimad Bhagavad Gita) of Shri Krishna are two great scriptures that impart teachings on ideal household conduct, ideal governance, ideal marital conduct, and ideal family life, along with devotion, knowledge, renunciation, and good conduct. These scriptures are equally useful for everyone, whether male or female, young or old, educated or uneducated, rich or poor. Every line of these scriptures is a self-evident mantra, whose recitation and adherence with devotion lead to supreme achievement and realization of God.

Manusmriti is an integral part of Indian culture, providing a comprehensive explanation of the duties of every section of society.

Today's younger generation, due to school and college studies, preparation for competitive exams, and then long job durations, cannot find the time to read and reflect on these scriptures. As a result, they remain unaware of this great culture. Due to education in English medium, they do not understand the Hindi commentary and form an impression that these scriptures are not for them. Keeping such youth, businessmen, corporate professionals, and bureaucrats in mind, selected verses, couplets, and quatrains from the Gita, Ramcharitmanas, and Manusmriti have been translated into simple Hindi and English in this book, so they can reach our minds and we can utilize them in our lives.

Indian culture is based on the principles of karma from past and present lives. Everywhere in the world, happiness and sorrow, gain and loss, life and death, wealth and poverty, sickness and health are clearly visible. All these are the results of the deeds from past and present lives.

In every person's life, there are moments when their intellect is pure and virtuous. The deeds performed in those moments are filled with good intentions and lead to the accumulation of merit.

If we devote some time from the 24 hours to worship God and perform good deeds for the welfare of others, the merit from those actions will surely benefit us and our descendants.

This book is an attempt to walk on the path shown by God and make our lives devotional to gain merit.

Though there might be many mistakes in this book, I request you to forgive me for them. Please utilize the knowledge and devotion you find appropriate in your life.

Jai Bharat

Dr. Ram Awatar Agrawal
M.B.B.S., M.D.

विषय सूची

समर्पण	2
प्रस्तावना	3
प्रथम पृष्ठ	ERROR! BOOKMARK NOT DEFINED.
रामचरितमानस	12
तुलसीदास जी – एक परिचय	13
बालकाण्ड	14
अयोध्याकाण्ड	39
अरण्यकाण्ड	57
किष्किंदा कांड	70
सुंदर कांड	77
लंकाकांड	85
उत्तर कांड	91
श्रीमद्भागवत गीता	117
मनुस्मृति	151
आरती	165
प्रातः कालीन वंदना	167
क्षमा याचना	168
गायत्री महामंत्र	169
महामृत्युंजय मंत्र	170
गणेश जी	171
लक्ष्मी जी	172
बाँके बिहारी जी	173
अम्बे जी की आरती	174
सन्तोषी माता	176
जगदंबा माता	177
शिव जी	179
कुंजबिहारी जी	180
ओम जय जगदीश हरे	181
राम चंद्र जी	182
रामायण जी	183
हनुमान जी	184
हनुमान चालीसा	185
हनुमान अष्टक	187
बजरंग बाण	189

भजन	191
गणेश जी	192
गाइये गणपति जगवंदन	193
घर में पधारो गजाननजी	194
गोरा ढूंड रही किसी ने गजानन देखा	195
गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ	196
श्री रामचंद्र जी	197
भए प्रगट कृपाला दीनदयाला	198
मेरी झोपड़ी के भाग	199
नगरी हो अयोध्या सी	200
जन्मे है राम रघुरैया	201
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे	202
राम को देख कर के जनक नंदिनी	203
शिव जी	204
सकुचाती चली इठलाती चली	205
गोपी बने भोलेनाथ	206
शिव शंकर चले कैलाश	207
कैलाश के निवासी	208
मैं तो शिव ही शिव को ध्याऊँ	209
तेरा पल पल बीता जाए	210
राधा	211
राधे तेरे चरणों की	212
मन भूल मत जइयो, राधा रानी के चरण	213
एक नजर कृपा की कर दो	214
मीठे रस से भरी रे, राधा रानी लागे	215
राधा कौन से पुण्य किये तूने	216
नन्द के आनंद भयो	217
राधे तू राधे, राधे तू राधे, तेरा नाम रटूँ मैं	218
श्री कृष्ण	219
श्री गोवर्धन महाराज महाराज	220
श्री राधे गोविन्द गोपाल काट भव जाल	221
अकेली घेर लई मधुवन में	222
सिर पर सीताराम फ़िकर फ़िर क्या करना	223
यशोदा जायो ललना मैं वेदन में सुन आई	224
होली	225
होली खेलन आयो श्याम आज	226
नैनन मे पिचकारी दई, मोहे गारी दई, होरी खेली ना जाय	227
एकादशी	228
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा	229
ग्यारस माता से मिलन कैसे होय	230
सत्संगी भजन	232

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने.....	233
यदि नाथ का नाम दयानिधि है.....	234
दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली	235
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है	238
राम नाम के हीरे मोती.....	239
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं	240
राम नाम सुखदाई भजन करो भाई.....	241
श्री गंगा मैया तेरी लहर मन भाई.....	242
श्री गंगा मैया तेरी लहर मन भाई.....	243
गुरु जी के भजन	244
मेरे सर पर रख दो गुरुवर	245
हे मेरे गुरुदेव करुणा.....	246
संतन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी	247
गुरु चरण में जब	248
हनुमान जी	249
जय जय जय हनुमान जी राम राम	250
वीर हनुमाना अति बलवाना.....	251
दुनिया चले ना श्री राम के बिना.....	252
आज मंगलवार है महावीर का वार है	253
शालिग्राम.....	254
श्री शालिग्राम जी सुनो विनती	255
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी	256
तुलसी महारानी नमो-नमो.....	257
मिश्री से मीठे बोल हमारी राधा रानी के.....	258
श्याम चंदा है श्यामा चकोरी	259
मेरे बाँके बिहारी लाल.....	260
बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?	261
दुर्गा माता	263
मंदिर में उड़े रे गुलाल गुलाबी रंग प्यारा लगे.....	264
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी	265
मैय्या है मेरी शोरोवाली	266
भोग	267
आज हरी आये, विदुर घर पावना ॥	268
थाली भरकर ल्याइँ रै खीचडौ.....	269
आओ आओ सावरिया बेगा आओ.....	270
सीता मैया ने करी ज्योनार.....	272
आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन	273

गणेश स्तुति

विघ्न हरन, गौरी के नंदन । सुमिर सदा सुखदायी रे...
तुलसीदास जो गणपती सुमिरै । कोटि विघ्न टल जाई रे...
वेद पुरान कथा से पहले । जो सुमिरै सुखदायी रे...
अष्ट सिधि नव निधि लक्ष्मी । मन इच्छा फलदायी रे...

O son of Gauri, remover of obstacles, remembering you
always brings happiness.

Tulsidas says that whoever remembers Lord Ganesha,
millions of troubles are removed.

Those who remember lord Ganesha, before beginning the
recitation of the Vedas and Puranas, find joy.

The eight siddhis and nine treasures are granted to him,
fulfilling the desires of the mind.

रामचरितमानस

रामचरितमानस भगवान श्री राम के जीवन पर आधारित है। भगवान श्री राम पर सर्व प्रथम ऋषि वाल्मीकि ने रामायण लिखी थी, जो संस्कृति भाषा में है। इसे आम आदमी नहीं पढ़ पाते थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने उस समय की बोल चाल की अवधि भाषा में रामचरितमानस लिखी थी। कहा जाता है कि स्वयं भगवान शिव ने रामचरितमानस पुस्तक पर **सत्यम शिवम् सुंदरम्** लिखा था।

राम चरित मानस में निम्न सात कांड हैं - बालकाण्ड (जन्म से राम विवाह तक), अयोध्याकाण्ड (सीता आगमन से वनवास तक), अरण्यकाण्ड (श्री राम के वन में निवास से सीता हरण तक), किष्किंदकांड (सीता जी की खोज एवं राम हनुमान मिलन), सुंदरकांड (हनुमान जी द्वारा सीता जी की खोज में लंका जलाना), लंकाकांड (समुद्र पर सेतु के निर्माण से लंका विजय), उत्तरकांड (राम लक्ष्मण सीता का अयोध्या वापस आना एवं राम राज्य)।

रामचरितमानस में प्रत्येक चौपाई एवं दोहा एक स्वयं सिद्ध मंत्र है। सभी का अध्ययन करने के लिए बहुत समय और लगन चाहिए। अतः कुछ चौपाई और दोहे जो मनुष्य जीवन में दिन प्रतिदिन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो हमें श्री राम की भक्ति में लगाते हैं उन्हें इस पुस्तक में लिया गया है। कलयुग में भगवान के नाम के स्मरण से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है जैसे की तुलसी दास जी ने लिखा है -

कलयुग केवल नाम अधरा। सुमिर सुमिर नर उतरे पारा।।

। जय श्री राम।

तुलसीदास जी – एक परिचय

रामचरितमानस की रचना गोस्वामी तुलसीदास जी ने की है। उनका जन्म संवत् 1554 (1497 ई.) में चित्रकूट के पास एक गाँव में हुआ था। वे 12 माह के गर्भ के बाद पैदा हुए थे। वे जन्म के बाद रोये नहीं और मुख से राम राम निकला था। उनके मुँह में 32 दांत थे, शरीर का आकार 5 वर्ष के बच्चे के बराबर था। पिता आत्माराम दुबे और माता हुलसी थी। जन्म के चार दिन बाद ही माता हुलसी की मृत्यु हो गई। तुलसीदास जी के बचपन का नाम रामबोला था। कहा जाता है कि तुलसीदास जी को हनुमान जी दर्शन देते थे।

संवत् 1607 (1550 ई.) में अमावस्या बुधवार के दिन भगवान श्री राम ने बालक रूप में आकर तुलसीदास जी से कहा कि बाबा हमें चंदन दो। तब हनुमान जी ने तोते का रूप धारण कर तुलसीदास जी को कहा

**चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़।
तुलसीदास चंदन घिसें तिलक देत रघुबीर।।**

तुलसीदास जी उस अद्भुत छवि को देखकर अपने शरीर की सुध बुध भूल गए। भगवान ने अपने हाथ से चंदन लेकर अपने तथा तुलसीदास के मस्तक पर लगाया और अंतर्ध्यान हो गये।

रामचरितमानस की रचना संवत् 1631 (1574 ई.) में रामनवमी के दिन प्रारंभ की थी। 2 वर्ष, 7 महीने और 26 दिन के बाद संवत् 1633 में मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में रामविवाह के दिन पूर्ण हुई थी। तुलसीदास जी की रचना से उस समय के काशी पंडितों के मन में बड़ी ईर्ष्या हुई। उन्होंने पुस्तक चुराने के लिए दो चोर भेजे लेकिन रात में चोरों ने देखा कि दो धनुष बाण धारी बालक कुटिया की रक्षा कर रहे हैं। तब उनका हृदय परिवर्तन हो गया। और पंडितों ने भी पुस्तक को स्वीकार कर लिया। तुलसीदास जी ने 126 वर्ष की आयु में संवत् 1680 (1623 ई.) में श्रावण कृष्ण तृतीय को अपने शरीर का परित्याग कर दिया था।

बालकाण्ड

साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुणमय फल जासू । ।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिं जग जस पावा । । [3/2]

संतों का चरित्र कपास के चरित्र (जीवन) के समान शुभ है, जिसका फल नीरस, विशद और गुणमय होता है। कपास की डोडी नीरस होती है, संत चरित्र में भी विषयासक्ति नहीं है, इससे वह भी नीरस है, कपास उज्वल होता है, संत का हृदय भी अज्ञान और पाप रूपी अन्धकार से रहित होता है, इसलिए वह विशद है और कपास में गुण (तंतु) होते हैं, इसी प्रकार संत का चरित्र भी सद्गुणों का भंडार होता है, इसलिए वह गुणमय है। जैसे कपास का धागा सुई के किए हुए छेद को अपना तन देकर ढँक देता है, अथवा कपास जैसे लोढ़े जाने, काते जाने और बुने जाने का कष्ट सहकर भी वस्त्र के रूप में परिणत होकर दूसरों के गोपनीय स्थानों को ढँकता है, उसी प्रकार संत स्वयं दुःख सहकर दूसरों के छिद्रों (दोषों) को ढँकता है, जिसके कारण उसने जगत में वंदनीय यश प्राप्त किया है

The character of a saint is like that of a cotton plant. The cotton plant itself is tasteless, but its fruits are full of virtues. The one who endures pain and hides others' faults is praiseworthy in the world.

मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू । ।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा । । [4/2]

संतों का समाज आनंद और मंगल से भरा होता है। संत जगत के चरम तीर्थराज होते हैं जहाँ राम भक्ति है, वहाँ गंगा की धारा है। ब्रह्म विचार की व्यापकता उसमें रस भर देती है।

The community of saints is filled with joy and auspiciousness. Saints are the supreme pilgrimage sites of the world. Where there is devotion to Ram, there is the flow of the Ganges. The spread of Brahma's thoughts fills it with essence.

**बिनु सतसंग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।
सतसंगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।। [4/3]**

बिना सत्संग के विवेक नहीं होता और राम की कृपा के बिना वह सुलभ नहीं होता । सत्संगति आनंद और मंगल का मूल है । यही फल और सिद्धि सभी साधनों का फूल है ।

Without good company, wisdom is not attained and without Ram's grace, it is not easily achieved. Good company is the root of joy and auspiciousness. This fruit of success are the blossoms of all endeavours.

**सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधात सुहाई ।।
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।। [5/3]**

मूर्ख व्यक्ति भी सत्संगति पाकर सुधर जाता है, जैसे पारस के स्पर्श से खराब धातु भी सुंदर हो जाती है । नियति के वश सज्जन कुसंगति में पड़ जाते हैं । जैसे सर्प की मणि साँप के साथ रहते हुए उसके ज़हर को ग्रहण नहीं करती, वह केवल अपनी मणि के गुणों को ही रखती है ।

Even a foolish person improves by keeping good company, just as an inferior metal becomes beautiful with the touch of the philosopher's stone. Due to fate, good people may end up in

bad company, but like the gem on a snake's head does not absorb the snake's venom and only retains its own qualities.

**बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ।। 13(क) ।।**

मैं उन संतों को प्रणाम करता हूँ जिनका चित्त समान रहता है, जो हित-अनहित में भेद नहीं करते। जैसे अंजलि में सुगंधित फूल एक समान सुगंध देते हैं।

I bow to the saints whose minds remain even and do not differentiate between good and bad. Just like fragrant flowers in hands give a uniform fragrance.

**बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ । जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ ।।
पर हित हानि लाभ जिन्ह करेँ । उजरें हरष बिषाद बसेरें ।। [1/4]**

यहाँ तुलसीदास जी रामचरितमानस लिखते समय देवताओं की पूजा वंदना करने से पहले दुष्ट लोगों की वंदना करते हुए उनकी पहचान के लक्षण बताते हैं।

मैं फिर से उन दुष्टों को प्रणाम करता हूँ जो बिना कारण अच्छे को बुरा कर देते हैं। जो दूसरों के हित में हानि और अपने लाभ में खुश होते हैं और दूसरों के दुख में आनंद लेते हैं।

Here, before Tulsidas Ji worships the gods while writing the Ramcharitmanas, he first venerates the wicked people and describes their characteristics.

"I again salute those wicked people who, without reason, turn the right into wrong. They take pleasure in others' loss and their own gain, and they delight in others' suffering."

**हरि हर जस राकेस राहु से । पर अकाज भट सहसबाहु से ।।
जे पर दोष लखहिं सहसाखी । पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ।। [2/4]**

जो हरि और हर का यश राक्षसों और राहु की तरह खा जाते हैं। जो पराए दोष को हजार आँखों से देखते हैं और जिनके मन दूसरों की भलाई में उसी प्रकार नुकसान पहुँचाते हैं जैसे मक्खी घी में गिर कर घी को भी गंदा कर देती और इसके लिए उसे अपनी जान भी देनी पड़ती है।

They devour the glory of Hari (Vishnu) and Har (Shiva) like demons and Rahu. They see others' faults with a thousand eyes and harm others' welfare in the same way as a fly falls into ghee, contaminating it even at the cost of its own life.

**पर अकाजु लागि तनु परिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ।।
बंदउँ खल जस सेष सरोषा । सहस बदन बरनइ पर दोषा ।। [4/4]**

जो बिना कारण दूसरों के हित में हानि करते हैं, जैसे ओले फसल में गिर कर फसल को नष्ट कर देते हैं और स्वयं भी समाप्त हो जाते हैं। मैं शेषनाग की तरह उन दुष्टों को प्रणाम करता हूँ जो हजार मुखों से दूसरों के दोष गिनते हैं।

They, who harm others' welfare without reason, just like hail falls on crops, destroying them and perishing themselves. I salute those wicked people, like the Sheshnag, who counts others' faults with a thousand mouths.

बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । सहस नयन पर दोष निहारा ।। [6/4]

जिनको कठोर वचन सदा प्रिय लगते हैं, जो हजार आँखों से दूसरों के दोष देखते हैं ।

Those who always love harsh words and see others' faults with
a thousand eyes.

**उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ।। 4 ।।**

दुष्ट लोग उदासीन, शत्रु और मित्र के हित की बातें सुनकर जलते हैं । यह जानकर में
प्रेम से हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना करता हूँ ।

Those who burn upon hearing welafre of the indifferent, enemy
and friend, it is the nature of the wicked. Knowing this, with
folded hands, I pray them with love.

**मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ।।
बायस पलिअहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ।। [1/5]**

मैंने अपनी ओर से निवेदन किया परंतु दुष्ट अपनी ओर से ज़रा भी ध्यान नहीं देंगे ।
जैसे कौवा बहुत प्यार से पालते हैं, पर क्या कभी वह मांस को त्यागते हैं?

I made a request from my side, but they didn't pay any
attention from their side. Just like crows are reared with great
love, but do they ever become vegetarian?

बंदउँ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥ [2/5]

मैं संतों और असज्जनों के चरणों में प्रणाम करता हूँ दोनों हीं दुख देने वाले हैं परंतु दोनों में कुछ अंतर है । एक से बिछुड़ने पर प्राण हर लेते हैं, और एक से मिलना दुखदाई होता है ।

I bow to the feet of saints and the wicked. Saying anything between the two is painful. One takes away life upon separation, and meeting the other gives immense pain.

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ 15 ॥

भला भलाई ही ग्रहण करता है और नीच नीचता को ही ग्रहण किए रहता है । अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में ॥

The virtuous imbibe goodness, while the wicked continue to absorb wickedness. The praise of nectar lies in making one immortal, while poison's impact is in causing death.

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिँ पय परिहरि बारि बिकार ॥ 16 ॥

ईश्वर ने इस संसार को जड़ और चेतन, गुण और दोषमय बनाया है । संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं ।

The Creator made this world of inanimate and animate, full of virtues and faults. Swans, like saints, take the milk like virtues and leave the faults like waters.

**अस बिबेक जब देइ बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ।।
काल सुभाउ करम बरिआई । भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई ।। [1/7]**

विधाता जब इस प्रकार का (हंस का सा) विवेक देते हैं, तब दोषों को छोड़कर मन गुणों में अनुरक्त होता है। काल स्वभाव और कर्म की प्रबलता से भले लोग (साधु) भी माया के वश में होकर कभी-कभी भलाई से चूक जाते हैं ॥

When the Creator gives us clear judgment, we focus on our good qualities and ignore our faults. However, because of the effects of time, nature, and our actions, even good people (like saints) can sometimes make mistakes and not always do what is right due to the influence of illusion.

**सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ।।
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ।। [2/7]**

जैसे साधु पुरुष सुधारकर लेते हैं, दुख दोषों को मिटाकर निर्मल यश देते हैं। दुष्ट अच्छे संग प्राप्त कर अच्छे काम करते हैं, पर उनका मलिन स्वभाव नहीं मिटता।

Like devotees correct and take, removing sorrows and faults, they give pure fame. The wicked do-good deeds upon getting good company, but their unclean nature does not change.

लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ।।
उधरहिं अंत न होइ निबाहू । कालनेमि जिमि रावन राहू ।। [3/7]

जो अच्छे वस्त्र पहनकर जगत को ठगते हैं, वे वस्त्रों के प्रभाव से पूजित होते हैं । अंत में उनका उद्धार नहीं होता । रावण ने साधु भेष में सीता जी का अपहरण किया था और कालनेमि राक्षस ने साधु भेष में हनुमान जी को संजीवनी बूटी लाने से रोका था । अंत में दोनों को मृत्यु प्राप्त हुई ।

Those who deceive the world by wearing good clothes are revered because of their appearance. However, they do not attain salvation in the end. Ravana abducted Sita Ji in the guise of a sage, and Kalnemi Rakshasa tried to stop Hanuman Ji from bringing the Sanjeevani herb by appearing as a sage. In the end, both met their deaths.

किएहुँ कुबेष साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू ।।
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ।। [4/7]

कुबेस पहनकर भी साधु सम्मान पाते हैं, जैसे जग में जामवंत भालू रूप में और हनुमान जी वानर रूप में भी पूजनीय हैं । कुसंगति से हानि और सुसंगति से लाभ होता है, यह सबको विदित है ।

Even with humble appearances, saints receive respect, just as Jambavan is revered in the world in the form of a bear, and Hanuman Ji is revered in the form of a monkey. It is well-known that bad company brings harm, and good company brings benefits.

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संग्गा ।।
साधु असाधु सदन सुक सारीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ।। [5/7]

धूल हवा के संग आकाश चढ़ जाती है, पर नीच जल के संग मिल कर कीचड़ बन जाती है। साधु के घर के तोते राम राम कहते हैं और असाधु के घर के तोते गालियाँ देते हैं।

Dust rises up to the sky with the wind, but when it mixes with dirty water, it turns into mud. In a good person's house, parrots say "Ram Ram," while in a bad person's house, parrots speak rudely.

**धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ।।
सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ।। [6/7]**

धुआं कुसंगति से कालिख बन जाता है। वही जल में मिल कर सुंदर स्याही बन जाता है और पुराण लिखने के काम आता है। वही धुआं जल अग्नि और वायु के संग मिलकर मेघ बन जाता है जो संसार का जीवनदाता है।

Smoke turns into soot when it mixes with bad things. But it can also become beautiful ink when mixed with water and used to write scriptures. The same, when combined with water, fire and air, becomes clouds that bring life to the world.

**जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ।।7(ग) ।।**

जड़, चेतन जगत के सभी जीवों को राममय जानकर, मैं सदा उनके चरण कमलों में दो हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

Knowing all the animate and inanimate beings in the world as pervaded by Ram, I always bow to their lotus feet with folded hands.

**आकर चारि लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ बासी ।।
सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।। [1/8]**

चार लाख चौरासी हजार योनियों के जीव जल, थल, नभ में वास करते हैं। समस्त संसार को सीता राममय जानकर मैं सभी को प्रणाम करता हूँ।

Living beings of 8.4 million species reside in water, land, and sky. Considering the entire world to be filled with Sita and Rama, I salute them all.

**निज कवित केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ।।
जे पर भनिति सुनत हरषाही । ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ।। [6/8]**

अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती, चाहे वह सरस हो या फीकी। जो दूसरों की कविता सुनकर प्रसन्न होते हैं, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष जगत में बहुत कम होते हैं।

Who does not like his own poetry, whether it is sweet or very bland. Those who are pleased to hear others' poetry are very rare in the world.

**खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ।।
हंसहि बक दादुर चातकही । हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ।। [1/9]**

दुष्टों का उपहास करना भी मेरे लिए हितकारी है। कोयल के मीठे गले को कौवा कठोर कहते हैं। जैसे बगुले हंस को और मेंडक पपीहे पर हंसते हैं, वैसे ही बुरे मन वाले दुष्ट, निर्मल वाणी वाले पर हंसते हैं।

Even being mocked by wicked people is beneficial for me. The crow calls the sweet voice of the cuckoo harsh. Just as herons laugh at swans and frogs laugh at the rainbird, wicked people with bad hearts laugh at those who speak kindly.

**एहि महँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥ [1/10]**

इस रामायण में श्री रघुनाथजी का उदार नाम है, जो अत्यन्त पवित्र है, वेद-पुराणों का सार है, कल्याण का भवन है और अमंगलों को हरने वाला है, जिसे पार्वतीजी सहित भगवान शिवजी सदा जपा करते हैं ॥

In this Ramayana, the name of Lord Raghunath is very sacred. It is the essence of the Vedas and Puranas, a place of blessings, and removes all misfortunes. Even Lord Shiva, along with Goddess Parvati, constantly recite this name.

**भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी । सोन न बसन बिना बर नारी ॥ [2/10]**

विद्वान कवियों द्वारा रचित विचित्र कविता भी राम नाम के बिना शोभा नहीं पाती। जैसे आभूषण पहने हुए चंद्रमुखी स्त्री भी बिना कपड़ों के सुंदर नहीं लगती।

Even the beautiful poetry created by learned poets does not shine without the name of Ram. A moon-faced woman adorned with jewels also does not look beautiful without clothes.

धूमउ तजइ सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध बसाई । ।
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । राम कथा जग मंगल करनी । । [5/10]

धुआं अपनी सहज कड़वाहट छोड़ देता है, अगरबत्ती की संगति में सुगंध बस जाती है । भले वस्त्र में सुंदरता वर्णित होती है, राम कथा संसार में मंगलकारी है ।

Smoke gives up its inherent bitterness. The fragrance of incense pervades it. Beauty is described in fine attire. The story of Ram is auspicious for the world.

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी । ।
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई । । [1/11]

मणि, माणिक्य, और मोती की छवि जैसी होती है, वे सर्प, पर्वत, और हाथी के सिर पर अच्छी नहीं लगतीं । राजा का मुकुट और तरुणी का शरीर पाकर वे सब सुंदरता प्राप्त करते हैं ।

The appearance of gems, rubies, and pearls is as such, they do not look good on the heads of snakes, mountains, and elephants. They attain all beauty upon the crown of a king and the body of a young woman.

कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई । ।
राम सुकीरति भनिति भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदिसा । । [5/14]

कीर्ति, कविता, और ऐश्वर्य वही अच्छा है, जो गंगा के समान सबके लिए हितकारी हो। राम की कीर्ति तो सुंदर है और मेरी कविता भद्दी है अतः दोनों में मिलाप होने में मुझे संदेह है।

Fame, poetry, and wealth are truly valuable only if they benefit everyone, like the Ganges. Ram's fame is beautiful, and my poetry is crude, so I doubt there will be a harmonious blend between the two.

संत कहहि असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव ।
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किएँ दुराव ।।45 ।।

संत, श्रुति, पुराण, और मुनि कहते हैं कि गुरु से छिपाने पर हृदय में निर्मल विवेक उत्पन्न नहीं होता।

Saints, the Vedas, Puranas, and sages say that pure wisdom does not arise in the heart when hidden from the guru.

होइहि सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ।।
अस कहि लगे जपन हरिनामा । गई सती जहँ प्रभु सुखधामा ।। [4/52]

वही होगा जो राम ने रच रखा है, कौन तर्क करके झगड़ा बढ़ा सकता है? ऐसा कहकर हरिनाम जपने लगे, सती वहाँ गई जहाँ सुखधाम प्रभु है।

Whatever Ram has arranged will happen. Who can increase the fight by argument? Saying this, he started chanting Harinam. Sati went where the abode of the Lord is.

बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमानु हृदयँ तब आवा । ।
नहिँ कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं । । [4/60]

जब ब्रह्मा जी ने दक्ष को प्रजापति बना दिया, तो उनके हृदय में अति अभिमान आ गया । जगत में ऐसा कोई नहीं जन्मा, जिसे उच्च पद पाकर घमंड नहीं हुआ ।

When Daksha gained great authority, extreme pride came into his heart. No one has been born in the world who did not become arrogant after gaining power.

ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना । तेहि तें अजहुँ करहिँ अपमाना । ।
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी । रहइ न सीलु सनेहु न कानी । । [2/62]

एक बार ब्रह्मा की सभा में हमसे अप्रसन्न हो गए थे, उसी से वे अब भी हमारा अपमान करते हैं । हे भवानी! जो तुम बिना बुलाए जाओगी तो न शील-स्नेह ही रहेगा और न मान-मर्यादा ही रहेगी ।

Once, in Brahma's assembly, we became displeased with him, and that's why he still insults us. Oh Bhavani, if you go without being invited, there will be no respect or honor left.

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा । ।
तदपि बिरोध मान जहँ कोई । तहाँ गएँ कल्याणु न होई । । [3/62]

यद्यपि मित्र, प्रभु, पिता, और गुरु के घर बिना कहे जाना संदेहास्पद नहीं होता । तदापि, जहां अपमान होने की आशा हो, वहां जाने से कल्याण नहीं होता ।

Although it is not questionable to go to the house of a friend, lord, father, and guru without saying, even so, where there is opposition, there is no welfare in going there.

जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ।।
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा । बहु बिधि जननीं कीन्ह प्रबोधा ।। [4/63]

यद्यपि जगत में अनेक प्रकार के कठिन दुःख हैं, पर जाति अपमान सबसे कठिन है । यह सोचकर सती को अति क्रोध हुआ । जननी ने उन्हें कई प्रकार से समझाया ।

Although there are many kinds of severe sorrows in the world, caste insult is the hardest. Thinking this, Sati became very angry. The mother explained to her in many ways.

कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ।।68 ।।

नारद मुनि ने राजा हिमाचल से कहा, सुनो, जो भगवान ने भाग्य में लिख दिया है, उसे देवता, दानव, मनुष्य, नाग, या मुनि कोई नहीं मिटा सकता ।

Sage Narada told King Himachal, 'Listen, whatever God has written in one's destiny cannot be erased by gods, demons, humans, serpents, or sages.'

सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ।।
समरथ कहूँ नहिँ दोषु गोसाईं । रबि पावक सुरसरि की नाई ।। [4/69]

गंगा में शुभ और अशुभ जल सब मिलते हैं फिर भी गंगा को कोई अपवित्र नहीं कहता। समर्थ के लिए कोई दोष नहीं होता, जैसे सूर्य, अग्नि, और गंगा में कोई दोष नहीं होता।

Both good and bad waters flow in Ganges but no one calls the Ganges impure. There is no fault in the capable, like the sun, fire, and the Ganges.

**मातु पिता गुरु प्रभु कै बानी । बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ।।
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ।। [2/77]**

माता, पिता, गुरु, और प्रभु की वाणी को बिना विचार किए शुभ मानकर पालन करना चाहिए। आप सब प्रकार से परम हितकारी हैं। आपकी आज्ञा सिर माथे पर है।

The words of mother, father, guru, and lord should be followed as auspicious without any consideration. You are supremely beneficial in every way. Your command is utmost and respected.

**नारद बचन न मैं परिहरऊँ । बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ।।
गुर कें बचन प्रतीति न जेही । सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ।। [4/80]**

मैं नारद जी के वचनों को कभी नहीं छोड़ूंगा मेरा घर चाहे उजड़ जाए, लेकिन मुझे कोई डर नहीं है। जो व्यक्ति गुरु के वचनों पर विश्वास नहीं करता, उसे सपने में भी न तो सुख मिलता है और न ही सफलता।

I will never forsake Narad's words. Even if my house gets destroyed, I will not be afraid. The person who does not believe in the words of the Guru, will not find ease, happiness, or success even in dreams.

**कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥
भै अति प्रेम बिकल महतारी । धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी ॥ [3/102]**

विधाता ने जगत् में स्त्री जाति को क्यों पैदा किया? पराधीन को सपने में भी सुख नहीं मिलता । यों कहती हुई माता प्रेम में अत्यंत विकल हो गई, परंतु कुसमय जानकर (दुःख करने का अवसर न जानकर) उन्होंने धीरज धरा ।

How was a woman created in this world? She cannot find hapiness even in dreams. As she said this, the mother became extremely distressed with love, but knowing it was not the right time to grieve, she maintained her composure.

**बंदउँ बालरूप सोई रामू । सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥ [2/112]**

मैं उस बाल रूप वाले राम की वंदना करता हूँ, जिनके नाम का जाप करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । जो सभी मंगल कार्यों का घर और सभी अमंगल को हरने वाले हैं । मैं उन दशरथ के आँगन में खेलने वाले राम से दया की प्रार्थना करता हूँ ।

I bow to the child form of Ram, whose name brings all achievements easily. He is the abode of all good fortune and the remover of all evils. I pray for mercy from that Ram who played in Dasharath's courtyard.

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । कर बिनु करम करइ बिधि नाना ।।
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ।। [3/118]

तुलसीदास जी भगवान के गुणों की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि, बिना पैरों के चलते हैं, बिना कान सुनते हैं। बिना हाथों के कई प्रकार के कर्म करते हैं। बिना मुख के सभी रसों का भोगी है। बिना वाणी के अच्छे वक्ता, बड़े योगी है।

Tulsidas ji, while explaining the attributes of God, writes that he walks without feet, hears without ears, performs various actions without hands, and enjoys all tastes without a mouth. He is a great speaker without a voice and a great yogi.

तनु बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहइ ग्रान बिनु बास असेषा ।।
असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ।। [4/118]

बिना शरीर के स्पर्श करता है, बिना आँखों के देखता है बिना नाक के सभी गंधों को ग्रहण करता है। ऐसी सभी प्रकार की अलौकिक करनी जिसकी महिमा वर्णित नहीं की जा सकती।

Touches without a body, sees without eyes. Perceives all scents without a nose. Such supernatural deeds whose glory cannot be described.

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं । जनम अनेक रचित अघ दहहीं ।।
सादर सुमिरन जे नर करहीं । भव बारिधि गोपद इव तरहीं ।। [2/119]

विवश होकर (बिना इच्छा के) भी जिनका नाम लेने से मनुष्यों के अनेक जन्मों में किए हुए पाप जल जाते हैं। फिर जो मनुष्य आदरपूर्वक उनका स्मरण करते हैं, वे तो

संसाररूपी (दुस्तर) समुद्र को गाय के खुर से बने हुए गड्ढे के समान (अर्थात् बिना किसी परिश्रम के) पार कर जाते हैं।

Even when taken involuntarily, the name of God burns away the sins accumulated by humans over many lifetimes. Those who remember Him with reverence easily cross the ocean of worldly existence, as effortlessly as stepping over a small hole made by a cow's hoof.

हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता ।।
रामचंद्र के चरित सुहाए । कलप कोटि लागि जाहिं न गाए ।। [3/140]

हरि अनंत हैं और हरिकथा भी अनंत है सभी संत विभिन्न प्रकार से कहते और सुनते हैं। रामचंद्र के सुहावने चरित करोड़ कल्पों तक भी गाए नहीं जा सकते।

Hari is infinite and Harikatha is also infinite. All saints narrate and listen in various ways. The charming deeds of Ramachandra cannot be sung even in millions of ages.

तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ ।
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ ।।159(ख) ।।

तुलसीदास कहते हैं, जैसी किसी की भावना होती है, वैसी ही सहायता उसे मिलती है। या तो वह आप ही उसके पास आती है या उसको वहाँ ले जाती है ॥

Tulsidas says that the kind of help one receives is based on their intentions. Either the help comes to them, or it guides them to where they need to go.

बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । गिरि निज सिरनि सदा तृण धरहीं ।।
जलधि अगाध मौलि बह फेनू । संतत धरनि धरत सिर रेनू ।। [4/167]

बड़े लोग छोटे लोगों पर बहुत स्नेह करते हैं । जैसे पर्वत हमेशा अपने सिर पर तृण (घास) रखते हैं, गहरे समुद्र में झाग ऊपर तेरते रहते हैं और धरती हमेशा अपने सिर पर धूल को रखती है ।

Great people show much affection towards those who are lesser. Just as mountains always have grass on their peaks, and the foam of the deep sea floats on the surface, the earth always carries dust on its surface.

मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ।।
जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसिचर सब प्रानी ।। [1/184]

जो लोग माता-पिता और देवताओं का सम्मान नहीं करते, साधुओं से सेवा करवाते हैं, भवानी, उनके इस आचरण को देखकर, जान लो कि वे सभी राक्षस हैं ।

Those who do not respect their parents and gods or do not serve the saints. Bhavani, by observing their behaviour, know that they are all demons.

जाके हृदयँ भगति जसि प्रीति । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ।।
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ।। [2/185]

जिसके हृदय में जैसी भक्ति और प्रेम होता है भगवान हमेशा उसी प्रकार से प्रकट होते हैं गिरिजा । उस समाज में मैं रहा हूँ अवसर पाकर मैं एक बात कहता हूँ ।

In whose heart there is devotion and love, the Lord always appears in that manner. Girija, I have been in that society.
Taking the opportunity, I said one thing.

**हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना ।।
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ।। [3/185]**

हरि (भगवान) सब जगह समान रूप से व्याप्त हैं प्रेम से प्रकट होते हैं, मैंने यह जाना देश, काल, दिशा और विदेशों में। बताओ, वह कौन सी जगह है जहाँ भगवान नहीं हैं।

Hari (God) is omnipresent everywhere. He appears through love, I have known this. In country, time, direction, and abroad, tell me, where is the place where the Lord is not present?

**राज समाज बिराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ।।
जिन्ह के रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।। [2/241]**

राजाओं के समाज में श्री राम और लक्ष्मण सुंदरता से विराजमान हैं, जैसे आकाश में दो पूर्ण चंद्रमा हों। जिनकी जैसी भावना होती है प्रभु की मूर्ति उन्होंने वैसी ही देखी।

In the company of kings, Lord Ram and Lakshman are resplendent with beauty, like two full moons in the sky. People see the deity according to their own feelings and perspectives.

तौ भगवानु सकल उर बासी । करिहिं मोहि रघुबर कै दासी ।।
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संहेहू ।। [3/259]

वह भगवान सभी के हृदय में वास करते हैं, वह मुझे राम के सेवक के रूप में स्वीकार करेंगे। जिस किसी के प्रति सच्चा स्नेह होता है, उसे वह अवश्य प्राप्त होता है।

That God resides in everyone's heart. He will accept me as Ram's servant. Whoever has true affection towards someone, definitely attains that person.

का बरषा सब कृषी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ।।
अस जियँ जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ।। [2/261]

सब फसलें सूख जाने के बाद बारिश का क्या लाभ? समय चूक जाने के बाद पछिताने से क्या फायदा? यह जानकर जानकी को देखा। प्रभु प्रेम विशेष देखकर पुलकित हो उठे।

What is the use of rain when all crops have dried up? What is the use of repenting after the time has passed? Knowing this, Janaki (Sita) was seen. The Lord was thrilled to see the special love.

लोभी लोलुप कल कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ।।
हरि पद बिमुख परम गति चाहा । तस तुम्हार लालचु नरनाहा ।। [2/267]

लालची और लोभी कलंकित कीर्ति चाहते हैं, कामी व्यक्ति पवित्रता की उम्मीद करता है, हरि (भगवान) के पद से विमुख व्यक्ति परम गति चाहता है यही तुम्हारा लालच है, हे नरनाहा।

The greedy and covetous desire tainted fame. A lustful person expects purity. A person turned away from Hari (God) desires the ultimate state. This is your greed, oh King.

लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल ।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल ।। 277 ।। [277]

लक्ष्मण ने हंसते हुए कहा, सुनो मुनि, क्रोध पाप की जड़ है। इसके वश में लोग अनुचित कार्य करते हैं और संसार के प्रतिकूल चलते हैं।

Lakshman said with a laugh, listen sage, anger is the root of sin. Under its influence, people commit wrong actions and go against the world.

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ।।
तिमि सुख संपत्ति बिनहिं बोलाएँ । धरमशील पहिं जाहिं सुभाएँ ।। [3/294]

जैसे नदियाँ सागर में जाती हैं, भले ही सागर की कामना न हो। उसी प्रकार सुख-संपत्ति बिना बुलाए धर्मशील के पास जाती है।

Just as rivers go to the sea, even though the sea does not desire them. Similarly, happiness and wealth go to the virtuous without being called.

पुनि दंडवत करत दोउ भाई । देखि नृपति उर सुखु न समाई ।।
सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे ।। [2/308]

फिर दोनों भाई दंडवत करते हैं राजा ने देखा तो उनके हृदय में सुख समा नहीं पाया ।
पुत्र को हृदय से लगाकर उन्होंने असहनीय दुख मिटाया, जैसे मृत शरीर को प्राण
मिल गए हों ।

Then both brothers bow down. The king saw this and his heart
could not contain his joy. Embracing his son, he removed
unbearable sorrow. It was as if a lifeless body had received life.

**पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किए ।
कहि जाति नहीं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ।।३।। [3/326]**

राजा दशरथ जी ने अपने समधी राजा जनक का सब प्रकार से इतना सम्मान किया
कि वो सम्मान का भंडार हो गये । प्रेम से परिपूर्ण हृदयों में परस्पर की बिनती कही
नहीं जाती ।

King Dasharath honored King Janak, in every possible way,
making him a reservoir of respect. In hearts filled with love,
mutual requests are never spoken.

**नृप सब भाँति सबहि सनमानी । कहि मृदु बचन बोलाई रानी ।।
बधू लरिकनीं पर घर आई । राखेहु नयन पलक की नाई ।। [4/355]**

राजा दशरथ जी ने सभी का हर प्रकार से सम्मान किया, कोमल वचन कहकर रानी
को बुलाया और कहा छोटी सी लड़की बहू के रूप में घर आयी है । आप इसे ऐसे
रखें जैसे पलकें आँखों को रखती हैं ।

King Dasharath honored everyone in every way. Using gentle
words, he called the queen and said, "A small girl has come into

our home as a bride. You should treat her with the same care as eyelids protect the eyes."

अयोध्याकाण्ड

सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ।।
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ।। [3/9]

यद्यपि सेवक के घर स्वामी का पधारना मंगलों का मूल और अमंगलों का नाश करने वाला होता है, तथापि हे नाथ! उचित तो यही था कि प्रेमपूर्वक दास को ही कार्य के लिए बुला भेजते, ऐसी ही नीति है ॥

Although the arrival of the master at a servant's home is the source of auspiciousness and the destruction of inauspiciousness, O Lord, it would have been more appropriate to lovingly send the servant himself for the task. This is the proper principle.

बिसमय हरष रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ।।
जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ।। [2/12]

रघुराज (राम) विस्मय और हर्ष से रहित हैं, आप राम के प्रभाव को जानते हैं। जीव कर्म के अनुसार सुख-दुःख का भागी होता है और देवताओं के हित के लिए अयोध्या जाओ।

Lord Rama was free from surprise and joy. You know the influence of Rama. The living being experiences happiness and sorrow according to his actions. Go to Ayodhya and engage in the welfare of the gods.

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ।।14 ।।

काणे लंगड़े और कूबड़ों को कुटिल व चालाक जानना चाहिए उस पर भी यदि स्त्री हो और वह दासी हो तो और भी अधिक मानना चाहिए, यह कहकर भरत की माँ मुस्कुरायी ।

One should consider the blind, the lame, and the hunchbacked as cunning and deceptive. And if a woman is among them and is a servant, she should be regarded with even more suspicion.
Saying this, Bharat's mother smiled.

अस अभिलाषु नगर सब काहू । कैकयसुता हृदयँ अति दाहू ।।
को न कुसंगति पाइ नसाई । रहइ न नीच मतेँ चतुराई ।। [4/24]

ऐसी इच्छा नगर के सभी लोगों की है । कैकयी के हृदय में अत्यधिक जलन है, कौन कुसंगति पाकर नष्ट नहीं होता? नीच विचारों में चतुराई नहीं रहती ।

This is the desire of all the people of the city. There is extreme burning in the heart of Kaikeyi. Who does not get destroyed by bad company? Wisdom does not remain in wicked thoughts.

नहिँ असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहिँ कि कोटिक गुंजा ।।
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । बेद पुरान बिदित मनु गाए ।। [3/28]

असत्य के समान पापों का समूह भी नहीं है, क्या करोड़ों घुँघचियाँ मिलकर भी कहीं पहाड़ के समान हो सकती हैं? 'सत्य' ही समस्त उत्तम सुकृतों (पुण्यों) की जड़ है यह बात वेद-पुराणों में प्रसिद्ध है और मनुजी ने भी यही कहा है ।

There is no aggregation of sins as great as falsehood. Even if millions of dust particles were gathered together, they could never equal a mountain. 'Truth' is the root of all superior virtues (good deeds). This is well-known in the Vedas and Puranas, and Manu also said the same.

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ।। [4/41]

हे जननी (मां), सुनो, वही पुत्र बड़ा भाग्यशाली होता है जो पिता-माता के वचनों में अनुरागी होता है जो पुत्र माता-पिता को संतुष्ट करता है ऐसा पुत्र संसार में दुर्लभ होता है।

Listen, mother, that son is very fortunate, who is affectionate towards the words of his father and mother. The son who pleases his parents, such a son is rare in the world.

सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ । सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ।।
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ।। [4/47]

कवि सत्य कहते हैं, नारी का स्वभाव हर तरह से गहरा और कठिन है, अपना प्रतिबिंब (छाया) पकड़ना आसान है, नारी का स्वभाव जानना मुश्किल है।

The poet speaks the truth, saying that a woman's nature is deep and complex in every way. It's easier to catch one's shadow than to understand a woman's nature.

काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ।।47।।

कौन सी वस्तु आग में जल नहीं सकती, क्या है जो समुद्र में समा नहीं सकता ,
अबला (महिला) क्या नहीं कर सकती, और किसे काल (समय) नहीं खा सकता ।

What cannot be burned by fire, what cannot merge into the
sea? What can a woman not do, and whom can time not
consume?

एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ।।
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ।। [3/61]

आदरपूर्वक सास-ससुर के चरणों की पूजा (सेवा) करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म
नहीं है । जब-जब माता मुझे याद करेंगी और प्रेम से व्याकुल होने के कारण उनकी
बुद्धि भोली हो जाएगी (वे अपने-आपको भूल जाएँगी)

There is no greater duty than respectfully serving and honoring
one's parents-in-law. Whenever my mother remembers me,
and her love makes her so emotional that she loses her sense of
self, her mind will become innocent and pure.

मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ।। [4/64]

मैंने मन में यह समझ लिया है कि पति वियोग के समान दुख संसार में नहीं है ।

I have understood in my mind that there is no sorrow in the
world equal to the separation from the husband.

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुशील सुखदाई ॥ [1/65]
जहँ लागि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥ [2/65]

माता, पिता, बहन, प्रिय भाई, प्रिय परिवार और मित्रों का समूह, सास-ससुर, गुरु, सज्जन और सहायक, सुंदर, सुशील और सुखद पुत्र, जहाँ तक हे नाथ, प्रेम और संबंध हैं ये सब पति बिना स्त्री के लिए सूर्य की गर्मी की तरह हैं । शरीर, धन, घर, धरती, राज्य, पति के बिना सब शोक का समूह है ।

Mother, father, sister, beloved brother, dear family and a group of friends, mother-in-law, father-in-law, guru, good people, helpers, beautiful, virtuous, pleasing son, where, O Lord, there is love and relationships, without a husband, they are like the heat of the sun to a woman. Body, wealth, home, earth, kingdom, without a husband, all are a collection of sorrows.

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहि सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ।।70 ।।

जो लोग माता, पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा को स्वाभाविक ही सिर चढ़ाकर उसका पालन करते हैं, उन्होंने ही जन्म लेने का लाभ पाया है, नहीं तो जगत् में जन्म व्यर्थ ही है ।

Those who naturally honor and follow the teachings of their parents, teachers, and masters have truly benefited from being born. Otherwise, a life without this guidance is wasted in the world.

रामचंदु पति सो बैदेही । सोवत महि बिधि बाम न केही ।।
सिय रघुबीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ।। [4/91]

जिनके पति श्री रामचन्द्रजी हैं, वही जानकीजी आज जमीन पर सो रही हैं। विधाता किसको प्रतिकूल नहीं होता! सीताजी और श्री रामचन्द्रजी क्या वन के योग्य हैं? लोग सच कहते हैं कि कर्म (भाग्य) ही प्रधान है ॥

Even Janaki, whose husband is Shri Ramchandra, is sleeping on the ground today. Who is spared from the adversities of fate? Are Sita and Shri Ramchandra truly deserving of living in the forest? People are right when they say that fate (destiny) is supreme.

बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान बिराग भगति रस सानी ।।
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु भ्राता ।। [2/92]

लक्ष्मण ने मधुर और कोमल वाणी में कहा: ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के रस में डूबकर, कोई भी किसी को सुख-दुःख का दाता नहीं है, हर कोई अपने कर्मों का फल भोगता है, हे भाई।

Lakshman spoke in sweet and soft words: Immersed in the essence of knowledge, detachment, and devotion, no one is the giver of happiness or sorrow to anyone. Everyone reaps the fruits of their own actions, O brother.

धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ।।
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा । तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा ।। [3/95]

वेद, शास्त्र और पुराणों में कहा गया है कि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। मैंने उस धर्म को सहज ही पा लिया है इस (सत्य रूपी धर्म) का त्याग करने से तीनों लोकों में अपयश छा जाएगा ॥

The Vedas, scriptures, and Puranas state that there is no other dharma greater than truth. I have naturally attained this dharma. Abandoning this (truthful dharma) will bring disgrace across the three worlds.

संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू।।
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ। दिऐँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ।। [4/95]

सम्मानित व्यक्ति के लिए अपयश पाना करोड़ों मौतों के समान दर्दनाक है। हे तात, मैं आपसे और क्या कहूँ, उत्तर देते समय फिर से पाप में पड़ जाऊँगा।

For an honorable person, to receive disgrace. It is as painful as millions of deaths. O sir, what more can I say to you? In giving an answer, I will again fall into sin.

पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा।।
सुखनिधान अस पितु गृह मोंरे। पिय बिहीन मन भाव न भोंरे।। [1/98]

मैंने पिता के वैभव और विलास को देखा है। राजाओं की मणि और मुकुट मेरे पिता के चरणों में होते थे, मेरे पिता के घर में सुख का भंडार है। लेकिन पति के बिना मन को संतोष नहीं होता।

I have seen the splendor and luxury of my father. The gem and crown of kings were in my father's feet. My father's house is a

treasure trove of happiness. But without my husband, my mind finds no contentment.

ससुर एतादृस अवध निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम सासू । ।
बिनु रघुपति पद पदुम परागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा । । [3/98]

राजा दशरथ जैसा ससुर, अयोध्या में निवास, प्रिय परिवार, और माँ जैसी सास यह सब रघुपति के चरण कमल की धूल के बिना मुझे सपने में भी सुखद नहीं लगता ।

Such a father-in-law, residing in Ayodhya, beloved family and a mother-like mother-in-law, without the dust of Raghupati's (Lord Rama's) lotus feet, nothing seems pleasant to me, not even in dreams.

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा । ।
जिन्ह केँ कपट दंभ नहिँ माया । तिन्ह केँ हृदय बसहु रघुराया । । [1/130]

जिनके मन में काम, क्रोध, मद, मान, मोह, लोभ, शोक, राग और द्रोह नहीं है जिनके मन में कपट, दंभ और माया नहीं है, हे रघुराज, आप उन्हीं के हृदय में निवास करें ।

Those who have no lust, anger, arrogance, pride, infatuation, greed, agitation, attachment, and enmity. Those whose hearts are free from deceit, hypocrisy, and illusion. O Raghuraja (Lord Rama), may you dwell in their hearts.

तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं । ।

जननी सम जानहिं परनारी । धनु पराव बिष तें बिष भारी ।। [3/130]

तुम्हें छोड़कर कोई दूसरा मार्ग नहीं है, हे राम, आप उन्हीं के मन में वास करें जो पराई स्त्री को जननी के समान जानते हैं और पराया धन विष से भी विषैला मानते हैं ।

There is no other path apart from you. Rama, may you reside in the hearts of those who regard another's wife as their mother. And consider other's wealth more poisonous than poison.

जे हरषहिं पर संपत्ति देखी । दुखित होहिं पर बिपत्ति बिसेषी ।।
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ।। [4/130]

जो दूसरों की संपत्ति देखकर प्रसन्न होते हैं और दूसरों की विपत्ति देखकर दुखी होते हैं, हे राम जिन्हें आप प्राणों से प्यारे हैं उनके मन में आपका शुभ निवास हो ।

Those who rejoice seeing others' wealth and feel sorrow seeing others' misfortune. Rama, to whom you are dearer than life. May your auspicious abode be in their hearts.

सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ।।
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ।। [4/150]

मूर्ख लोग सुख मिलने पर बहुत खुश होते हैं और दुख आने पर विलाप करते हैं । बुद्धिमान लोग दोनों अवस्थाओं में धैर्य रखते हैं । धैर्य रखो और विवेक से सोचो । सारे सोच-विचार छोड़ दो, यह सबके लिए हितकारी है ।

Fools are overjoyed by happiness and lament in sorrow. Wise people maintain equanimity in both states. Be patient and

think with wisdom. Abandon all worries, it is beneficial for everyone.

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवन मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ।।171 ।।

सुनो भरत, मुनि ने बिलखते हुए कहा कि भविष्य बहुत प्रबल होता है। हानि-लाभ, जीवन-मृत्यु, यश-अपयश सब विधाता के हाथ में हैं।

Listen Bharat, the sage said while lamenting that destiny is very powerful. Loss and gain, life and death, fame and disgrace are all in the hands of fate.

अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ।।
ऊतरु देउँ छमब अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ।। [4/177]

अब मेरी विनती सुन लो मुझे उपयुक्त शिक्षा दो उत्तर दो, और अपराध क्षमा करो, साधु पुरुष दुखी व्यक्तियों के दोषों पर ध्यान नहीं देते हैं।

Now, please listen to my request. Give me appropriate guidance. Respond, and forgive my mistakes. Righteous people do not focus on the faults of those who are troubled.

राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ।।
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ।। [3/194]

जो लोग राम-राम कहते हुए जम्हाई लेते हैं उनके सामने पापों के समूह भी नहीं आते। राम ने गुह निषाद को अपने हृदय में स्थान दिया और कुल सहित जग को पावन किया।

Those who yawn while saying 'Ram-Ram' are not faced with any sins. Lord Ram gave a place in his heart to Guha Nishad and, along with his family, sanctified the world.

**करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ।।
उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ।। [4/194]**

कर्मनाशा नदी का जल गंगा में मिल जाता है तब वह गंगा समान हो जाता है उसे ऐसा कौन है जो गंगा के समान सिर पर नहीं धारण करता। राम का उल्टा नाम मरा-मरा जपते हुए, वाल्मीकि ब्रह्मा के समान हो गए।

When the waters of the Karmanasha river merge into the Ganges, they become like the Ganges itself. Who would not wear something on their head that is like the Ganges? As the world came to know Ram by chanting his reversed name, "Mara-Mara," Valmiki became like Brahma.

**अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान ।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ।।204 ।।**

हे राम, मुझे न धन चाहिए, न धर्म, न काम की रुचि है और न ही मोक्ष की इच्छा है। जन्म-जन्म में राम के चरणों में प्रेम हो यही वरदान माँगता हूँ, और कुछ नहीं।

O Ram, I do not desire wealth, righteousness, worldly pleasures, or liberation. In every birth, I only ask for the blessing of love for Ram's feet. I seek nothing else.

मागउँ भीख त्यागि निज धरमू । आरत काह न करइ कुकरमू । ।
अस जियँ जानि सुजान सुदानी । सफल करहिँ जग जाचक बानी । । [4/204]

मैं अपना धर्म त्यागकर भीख मांगता हूँ, संकट में पड़ा व्यक्ति क्या बुरा काम नहीं करता? हे सुजान और उदार दानी, इस बात को जानकर, भिखारी की बात को सफल करें।

I beg, abandoning my own duty. Does a distressed person not do wrong deeds? O wise and generous one, knowing this, fulfil the words of the beggar.

जानहुँ रामु कुटिल करि मोही । लोग कहउ गुर साहिब द्रोही । ।
सीता राम चरन रति मोरें । अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें । । [1/205]

लोग कहते हैं कि राम ने मुझे कपटी समझा और गुरु का द्रोही मान लिया पर मेरा सीता राम के चरणों में प्रेम है, और यह तुम्हारी कृपा से दिन दिन बढ़ता रहे।

People say Ram considered me deceitful and a traitor to my guru. But I have devotion to Sita and Ram's feet, and it increases daily by your grace.

जो अपराधु भगत कर करई । राम रोष पावक सो जरई । ।
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा । यह महिमा जानहिँ दुरबासा । । [3/218]

जो कोई राम के भक्त का अपराध करता है, राम के रोष की अग्नि उसे जला देती है। यह बात लोक और वेद में प्रसिद्ध है, इस महिमा को दुर्वासा भी जानते हैं।

Anyone who commits an offense against a devotee of Ram is consumed by the fire of Ram's wrath. This is well-known in both popular tradition and the Vedas. Even Durvasa knows this glory.

**जद्यपि सम नहिं राग न रोषू । गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू । ।
करम प्रधान बिस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फलु चाखा । । [2/219]**

यद्यपि वे सम हैं- उनमें न राग है, न रोष है और न वे किसी का पाप-पुण्य और गुण-दोष ही ग्रहण करते हैं। उन्होंने विश्व में कर्म को ही प्रधान कर रखा है। जो जैसा करता है, वह वैसा ही फल भोगता है ॥

Although they are equanimous—having no attachment, no anger, and not accepting anyone's sins or virtues—they have established that karma is supreme in the world. Each person experiences the results according to their own actions.

**सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू । ।
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखब काऊ । । [1/229]**

सहसबाहु, सुरनाथ और त्रिसंकु, किसे राजमद ने कलंकित नहीं किया। भरत ने यह उचित उपाय किया। शत्रु और कर्ज को जरा भी शेष नहीं रखना चाहिए।

Sahasrabahu, Surnath, and Trishanku, who has not been tainted by the arrogance of power? Bharat has taken the right measure. Never leave an enemy and debt unpaid.

छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ।। 229 ।।

क्षत्रिय जाति, रघुकुल में जन्म, राम का अनुयायी, जगत यह जानता है । धूल के समान नीच कौन है जो लात मारने पर सिर ही चढ़ती है ।

The Kshatriya caste, born in the Raghu clan, and a follower of Ram, the world knows this. Who is lowly like dust which climbs on head by kicking?

सुनि सूर बचन लखन सकुचाने । राम सीयँ सादर सनमाने ।।
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तें कठिन राजमदु भाई ।। [3/231]

देवताओं के वचन सुनकर लक्ष्मण संकुचित हो गए एवं राम और सीता का सादर सम्मान किया । उन्होंने कहा, 'तात, तुम्हारी नीति बहुत सुंदर है, परंतु राज का मद सबसे कठिन है, भाई ।'

Hearing the words of the gods, Lakshman felt shy. Ram and Sita respectfully honored them. They said, 'Sir, your policy is very nice, but the arrogance of power is the hardest, brother.'

मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ।।
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना । मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ।। [2/264]

मुनियों के पास पक्षी और जानवर जाते हैं, शिकारी को देखकर दूर भाग जाते हैं । पशु-पक्षी भी हित-अनहित को पहचानते हैं । मनुष्य का शरीर गुण और ज्ञान का खजाना है ।

Birds and animals go near the sages. Seeing the hunter, they run away. Even animals and birds recognize good and bad. The human body is a treasure of virtues and knowledge.

जो सेवक साहिबहि सँकोची । निज हित चहइ तासु मति पोची । ।
सेवक हित साहिब सेवकाई । करै सकल सुख लोभ बिहाई । । [2/268]

जो सेवक अपने स्वामी से संकोच करता है, वह अपने हित की चाह रखता है, उसकी बुद्धि मूर्ख है । सेवक के हित में स्वामी की सेवा करनी चाहिए, सभी सुखों और लोभों को त्यागकर ।

A servant who feels shy of his master and seeks his own benefit has a foolish mind. For the servant's benefit, one should serve the master, abandoning all desires and greed.

देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारु । मोरें नीति न धरम बिचारु । ।
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कें चित चेतू । । [2/269]

देवताओं ने मुझे सब कुछ दिया, मैं उनके ऋण में हूँ । मेरी नीति और धर्म का कोई विचार नहीं है । मैं जो भी कहता हूँ, सब स्वार्थ के लिए कहता हूँ । संकट में पड़े व्यक्ति का मन शांत नहीं रहता ।

The gods have given me everything, I am indebted to them. I have no thought of policy or religion. Whatever I say is for my own benefit. The mind of a distressed person is never calm.

उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवक लखि लाज लजाई । ।

अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ।। [3/269]

स्वामी की आज्ञा सुनकर जो उत्तर दे, ऐसे सेवक को देखकर लज्जा भी लजा जाती है । मैं अवगुणों का ऐसा अथाह समुद्र हूँ (कि प्रभु को उत्तर दे रहा हूँ), किन्तु स्वामी (आप) स्नेह वश साधु कहकर मुझे सराहते हैं!

Seeing a servant who responds after listening to the master's command, even modesty feels ashamed. I am such an immense ocean of faults (that I am replying to the Lord), yet the master (you) affectionately praise me by calling me a sage!

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ।।
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ।। [4/293]

आगम, निगम, पुराण में प्रसिद्ध हैं कि सेवाधर्म कठिन है, यह जगत जानता है । स्वामी धर्म और स्वार्थ एक-दूसरे के विरोधी हैं । बैर अंधा होता है, प्रेम में प्रबोध नहीं होता ।

It is famous in Agamas, Nigamas, and Puranas that serving duty is known to be difficult in this world. Master duty and self-interest are opposed to each other. Enmity is blind, there is no wisdom in love.

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ।। 306 ।।

सेवक हाथ पैर और नयन के जैसा तथा स्वामी मुख समान होने चाहिए । तुलसीदास की प्रेम रीति सुनकर सुकवि सराहते हैं ।

A servant should be like the hands, feet, and eyes, while the master should be like the mouth. Hearing Tulsidas's way of expressing love, good poets praise him.

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ।।315।।

मुखिया मुख जैसा होना चाहिए, जो खान-पान में एक हो । सभी अंगों का विवेकपूर्ण पालन पोषण करता है ।

A leader should be like the mouth, which takes in food and nourishment. It wisely cares for and sustains all the other parts of the body.

अरण्यकाण्ड

मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ।।
अमित दानि भर्ता बयदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ।। [3/5]

माता-पिता, भाई हितकारी होते हैं । हे राजकुमारी सीता, पति असीमित सुख देने वाला होता है । जो स्त्री अपने पति की सेवा नहीं करती, वह पापी है ।

Mother, father, and brothers are beneficial. O Sita, a husband provides boundless happiness. A woman who does not serve her husband is considered vile.

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ।। [4/5]

धैर्य, धर्म, मित्र और नारी, संकट के समय ये चारों परखे जाते हैं ।

Patience, duty, friend, and woman, these four are tested in times of adversity.

बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ।।
ऐसेहु पति कर किऐँ अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।। [5/5]

यदि पति बूढ़ा, रोगी, मूर्ख, धनहीन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यंत दुखी हो और ऐसे पति का भी पत्नी अपमान करे, तो वह पत्नी यमपुर (नरक) में विभिन्न प्रकार के दुखों को प्राप्त करती है ।

If a husband is old, sick, foolish, poor, blind, deaf, angry, and extremely miserable, and his wife disrespects him, she will suffer various kinds of torments in the afterlife (hell).

**बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पति बंचक परपति रति करई । रौरव नरक कल्प सत परई ॥ [8/5]**

बिना अवसर के भय से जो रहती है उसे जगत की अधम स्त्री समझो । जो पति को धोखा देती है, पराए पति से प्रेम करती है वह रौरव नरक में सौ कल्प तक रहती है ।

Who stays fearful without occasion, know her as the lowly woman of the world. One who deceives her husband, loves another's husband, stays in Raurava hell for a hundred eons.

**छन सुख लागि जनम सत कोटि । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिव्रत धर्म छाडि छल गहई ॥ [9/5]**

बुद्धिहीन स्त्री यह नहीं समझती कि थोड़े समय के सुख के लिए वह करोड़ों जन्म तक कष्ट पाती है । पतिव्रता स्त्री बिना श्रम के ही परम गति प्राप्त करती है ।

A foolish woman does not understand that for a brief period of happiness, she endures suffering for millions of lifetimes. A devoted wife attains the highest state effortlessly.

पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । बिधवा होई पाई तरुनाई ॥ [10/5]

पति के प्रतिकूल स्त्री अगले जन्म में भरी जवानी में विधवा हो जाती है।

A woman who is opposed to her husband becomes a widow in her prime in her next life.

धोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई । सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया ॥ [1/15]

(श्री रामजी ने कहा-) हे तात! मैं थोड़े ही में सब समझाकर कहे देता हूँ। तुम मन, चित्त और बुद्धि लगाकर सुनो! मैं और मेरा, तू और तेरा- यही माया है, जिसने समस्त जीवों को वश में कर रखा है।

(Lord Ram said-) O dear one! I would explain everything in just a moment. You should listen with your mind, heart, and intellect! The notion of 'I' and 'mine,' and 'you' and 'yours'— this is the illusion that has captivated all beings.

सो सुतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ग्यान बिग्याना ॥
भगति तात अनुपम सुखमूला । मिलइ जो संत होई अनुकूला ॥ [2/16]

वह भक्ति स्वतंत्र है, उसको (ज्ञान-विज्ञान आदि किसी) दूसरे साधन का सहारा (अपेक्षा) नहीं है ज्ञान और विज्ञान तो उसके अधीन हैं। हे तात! भक्ति अनुपम एवं सुख की मूल है और वह तभी मिलती है, जब संत अनुकूल (प्रसन्न) होते हैं।

Devotion is independent and does not rely on (knowledge, science, or any other) external means. Knowledge and science are subordinate to it. O dear one! Devotion is unparalleled and the root of happiness, and it is obtained only when the saints are pleased.

रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन ।।21(क) ।।

शत्रु, रोग, अग्नि, पाप, प्रभु, सर्प को छोटा न समझो । यह कहकर विविध विलाप करते हुए, रोने लगी ।

Enemy, disease, fire, sin, lord, snake, should not be considered small. Saying this, began to cry in various laments.

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ।।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ।।16 ।।

जिनको कर्म वचन और मन से मेरी ही गति है और जो निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं उनके हृदय कमल में मैं सदा निवास करता हूँ ।

I always reside in the lotus hearts of those who, with their actions, words, and mind, are devoted solely to me and who worship me selflessly.

राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ।।
बिद्या बिनु बिबेक उपजाएँ । श्रम फल पढ़े किएँ अरु पाएँ ।। [4/21]

नीति बिना राज्य, धन बिना धर्म, सत्कर्म बिना भगवान को अर्पण, विवेक उत्पन्न किए बिना विद्या का पढ़ना व्यर्थ जाता है ।

A kingdom without principles, wealth without righteousness, offerings to God without virtuous deeds, and studying knowledge without developing discernment are all in vain.

संग ते जती कुमंत्र ते राजा । मान ते ग्यान पान तें लाजा ॥
प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । नासहि बेगि नीति अस सुनी ॥ [5/21]

बुरी संगति से संयमी, बुरी सलाह से राजा, मान से ज्ञान, मदिरा पान से लज्जा, नम्रता के बिना प्रेम और अहंकार से गुणवान, नीति कहती है कि यह शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ।

According to ethics, a person with self-control is ruined by bad company, a king is harmed by poor advice, knowledge is diminished by pride, and modesty is lost through drinking alcohol. Love without humility and qualities spoiled by arrogance are all quickly destroyed.

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । जौ लगि करौ निसाचर नासा ॥ [1/24]

हे प्रिये, सुंदर पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली सुशीले सुनो मैं अब कुछ मनोहर लीला करूँगा । तुम अग्नि में निवास करो । जब तक मैं निशाचरों का नाश न कर दूँ ।

O beloved, virtuous and gentle one who upholds the beautiful dharma of a devoted wife, listen to me. I will now perform some delightful divine pastimes. You reside in the fire until I destroy the demons.

नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥ [4/24]

नीच लोगों का झुकना अत्यंत दुखदाई होती है जैसे अंकुश, धनुष, सर्प और बिल्ली होते हैं। दुष्टों की प्रिय वाणी भय उत्पन्न करती है, जैसे अकाल में फूलों का खिलना।

The novelty of wicked people is extremely distressing. Like a goad, bow, snake, and cat. The sweet words of wicked people are terrifying. Like flowers in a drought, O Bhavani.

सो दससीस स्वान की नाई। इत उत चितइ चला भड़िहाई।।
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज बुधि बल लेसा।। [5/28]

वह दशानन (रावण) कुत्ते की तरह है इधर-उधर देखता हुआ माता सीता का हरण करने चला। इस प्रकार गलत मार्ग पर चलने से, हे गरुड़, उसका तेज, बुद्धि और बल नहीं बचा।

That ten-headed Ravana, like a dog wandering around, went to abduct Mother Sita. By taking such a wrong path, O Garuda, he lost his brilliance, intelligence, and strength.

परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।।
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा।। [5/31]

जिनके मन में परहित होता है उनके लिए जगत में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। हे तात, शरीर छोड़कर मेरे धाम में आओ तुम्हें क्या दूँ, तुम तो पूर्णकाम हो।

Those who have the welfare of others in their minds. For them, nothing in the world is unattainable. O Sir, leaving the body, come to my abode. What can I give you, you are fully satisfied.

अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महुँ मैं मतिमंद अघारी ।।
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ।। [2/35]

अधम से अधम, अत्यंत अधम नारी होती है उनमें भी मैं बुद्धिहीन और पापी हूँ ।
रघुपति कहते हैं, सुनो माता, मैं भक्ति के एकमात्र नाते को मानता हूँ ।

The lowest of the low, exceedingly low is a woman. Among them, I am foolish and sinful. Raghupati says, listen, O lady, I acknowledge only the bond of devotion.

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ।। [3/35]

जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, परिजन, गुण, चतुराई के होते हुए भी
बिना भक्ति का व्यक्ति कैसा लगता है । जैसे बिना जल के बादल दिखता है ।

Even with caste, lineage, family, religion, greatness, wealth, strength, relatives, qualities, and cleverness, a person without devotion appears as if a cloud without water.

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगी । दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ।। [4/35]
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।

चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ।। 35 ।।
मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ।। [1/36]
सातवँ सम मोहि मय जग देखा । मोतें संत अधिक करि लेखा ।।
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिँ देखइ परदोषा ।। [2/36]
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना ।।
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ।। [3/36]

सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भगति दृढ तोरें । ।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई । तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई । । [4/36]

भगवान श्री राम ने आने वाली चौपाइयों में शबरी को नौ प्रकार की भक्ति बतायी हैं । ध्यान से सुनो और मन में धरो ।

1. पहली भक्ति है संतों का संग,
2. दुसरी भक्ति है मेरी कथा का प्रेमपूर्वक श्रवण,
3. गुरु के चरणों की सेवा, तीसरी भक्ति है
4. चौथी भक्ति है मेरे गुणों का कपट रहित गान
5. मंत्र जप और मुझ पर दृढ विश्वास, यह पाँचवीं भक्ति है
6. छठी भक्ति है दम (संयम), शील (शिष्टता), और कर्मों से विरक्ति सज्जन पुरुषों के धर्म में निरंतर अनुरक्त रहना ।
7. सातवां चरण यह है कि मैंने दुनिया को भगवान के रूप में देखा है और संतों को बहुत मान दिया है ।
8. आठवां चरण है कि जो कुछ भी आपके पास है, उसी में संतुष्ट रहना । ऐसे लोग दूसरों की बुराई को सपने में भी नहीं देखते ।
9. नवमी भक्ति है सरल और सबके साथ छलरहित व्यवहार । मेरे भरोसे में हृदय में हर्षित और निराश न होना ।

इन नौ में से एक भी जिसे हो, वह स्त्री, पुरुष, चराचर कोई भी हो । हे भामिनि! मुझे वही अत्यंत प्रिय है । फिर तुझ में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ है । अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वही आज तेरे लिए सुलभ हो गई है ।

Lord Shri Ram describes nine types of devotion to Shabari in the upcoming verses. Listen carefully and hold them in your

mind. The first type of devotion is the company of saints. The second type is listening to my stories with love and devotion. Service to the guru's feet is the third devotion. The fourth devotion is singing my virtues without deceit. Chanting mantras and firm faith in me is the fifth devotion. The sixth devotion is restraint, propriety, and detachment from many actions. Constant engagement in the duties of virtuous people. The seventh stage is to see the world as if it is God and to give greater respect to saints. The eighth stage is to be content with whatever you have and not even dream of seeing the faults of others. The ninth devotion is simplicity and being free from deceit with everyone. To be joyful and not despairing in reliance on me. Anyone who possesses even one of these nine, whether woman, man, or any creature. O Bhāmini! That which is extremely dear to me is also in you, who possesses unwavering devotion of all kinds. Therefore, the state that is difficult for even yogis to attain has become easily accessible to you today.

राखिअ नारि जदपि उर माहीं । जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं ।।
देखहु तात बसंत सुहावा । प्रिया हीन मोहि भय उपजावा ।। [5/37]

नारियों को चाहे दिल में भी रखो, युवा स्त्रियाँ, शास्त्र और राजा किसी के बस में नहीं होते । देखो तात, बसंत सुहावना है प्रियाहीन होने से मुझे भय उत्पन्न हुआ ।

Even if you keep women in your heart, young women, scriptures, and kings are beyond anyone's control. See, dear one, that spring is pleasant. I am troubled by the absence of my beloved.

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महूँ छोभ ॥ ३८(क) ॥

हे तात, तीन अत्यंत प्रबल दुष्ट हैं - काम, क्रोध और लोभ, वे ज्ञान के धाम मुनियों के मन को भी पलभर में विचलित कर देते हैं ।

O sir, three exceedingly strong evils are lust, anger, and greed.
They disturb the mind of even a sage, the abode of knowledge,
in a moment.

लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ॥ ३८(ख) ॥

लोभ का बल इच्छा और घमंड है, काम को केवल स्त्री का बल है और क्रोध को कठोर वचन का बल है, मुनिवर ऐसा विचार करते हैं ।

Greed is driven by desire and arrogance, lust is driven by the power of women, and anger is fueled by harsh words. Thus, sages think.

क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम कीं दाय़ा ॥
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनुकूला ॥ [२/३९]

क्रोध, काम, लोभ, मद और माया ये सभी राम की दया से छूटते हैं । वह व्यक्ति माया के जाल में नहीं फँसता जिस पर राम की कृपा होती है ।

Anger, lust, greed, pride, and illusion. All these are dispelled by Rama's grace. That person is not ensnared by illusion. Upon whom that Rama is favorable.

उमा कहँँ मैं अनुभव अपना । सत हरि भजनु जगत सब सपना ।।
पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा ।। [3/39]

उमा, मैं अपना अनुभव कहता हूँ, सत्य हरि भजन है, और उसके बिना सब जगत,
सपना । फिर प्रभु पंपा सरोवर के तट पर गए जो सुंदर और गहरा है ।

Uma, I share my experience. Devotion to Lord Hari is the
ultimate truth, and without it, the world is just a dream. Then,
the Lord went to the banks of the beautiful and deep Pampa
Lake.

सुखि मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं ।
जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजुत जाहिं ।।39(ख)।।

उस सरोवर के अत्यंत अथाह जल में सब मछलियाँ सदा एकरस (एक समान) सुखी
रहती हैं । जैसे धर्मशील पुरुषों के सब दिन सुखपूर्वक बीतते हैं ॥

In the boundless waters of that lake, all the fish always remain
uniformly happy, just as the lives of virtuous people pass
happily every day.

फल भारन नमि बिटप सब रहे भूमि निअराइ ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ ।।40।।

फलों के भार से झुककर, सभी वृक्ष भूमि के निकट रहते हैं जैसे परोपकारी पुरुष
संपत्ति प्राप्त कर विनम्र हो जाते हैं ।

Bowing under the weight of fruits, all trees stay near the
ground. Like benevolent men, gaining wealth, become humble.

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें एका ।।
राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ।। [4/42]

यद्यपि प्रभु के नाम अनेक हैं, श्रुति कहती है एक से अधिक हैं लेकिन राम सभी नामों में श्रेष्ठ हैं। हे नाथ, वे पापों और विकारों का नाशक हैं।

Although the Lord has many names. The scriptures say one is more than the other. Rama is the best among all names. O Lord, he is the destroyer of sins and flaws.

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा । भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा ।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी । जिमि बालक राखइ महतारी ।। [3/43]

सुनो मुनि, मैं तुम्हें निश्चित रूप से कहता हूँ कि जो मुझे, सारे भरोसे को त्यागकर भजते हैं, मैं सदा उनकी रक्षा करता हूँ, जैसे माता बालक की रक्षा करती है।

Listen, sage, I assure you. Those who worship me, abandoning all other trusts, I always protect them, just as a mother protects her child.

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महुँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ।।43 ।।

काम, क्रोध, लोभ और मद आदि मोह (अज्ञान) की प्रबल सेना है, इनमें मायारूपिणी (माया की साक्षात् मूर्ति) स्त्री तो अत्यंत दारुण दुःख देने वाली है।

Desire, anger, greed, and pride are the powerful army of delusion (ignorance). Among them, the woman who embodies Maya (the very form of illusion) is extremely tormenting and brings great suffering.

दीप सिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ।।46(ख)।।

दीपक की लौ के समान युवती का तन है, मन को पतंग मत बनाओ, राम का भजन करो, काम और मद को त्यागकर, सदा सत्संग करो ।

The body of a young woman is like a lamp's flame, do not let your mind become a moth. Worship Rama, abandoning lust and pride, always engage in good company.

किष्किंदा कांड

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ।। [1/7]

जो मित्र के दुख से दुखी नहीं होते उन्हें देखना भी भारी पाप है, अपने पर्वत के समान दुख को भी रज की तरह जानें, मित्र के रज के समान दुख को पर्वत के समान मानें ।

Those who are not troubled by their friend's sorrow are committing a great sin. They should regard their own troubles, even if they are like a mountain, as mere dust. Conversely, they should consider their friend's troubles, even if they are like dust, as mountains.

जिन्ह कें असि मति सहज न आई । ते सठ कत हठि करत मिताई ।।
कुपथ निवारि सुपथ चलावा । गुन प्रगटे अवगुनन्हि दुरावा ।। [2/7]

जिनके पास ऐसी बुद्धि सहज नहीं आती वे मूर्ख हठपूर्वक मित्रता क्यों करते हैं । अच्छे मित्र, गलत रास्ते को छोड़कर, सही रास्ते पर चलाते हैं, गुण प्रकट करते हैं और अवगुणों को छिपाते हैं ।

Those who do not naturally possess such wisdom foolishly insist on friendship. Good friends guide others from the wrong path to the right one, reveal virtues, and hide flaws.

देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ।।
बिपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ।। [3/7]

लेने-देने में मन में संकोच नहीं रखना चाहिए अपनी क्षमता के अनुसार सदा भलाई करता है । विपत्ति के समय सौ गुना प्रेम करता है शास्त्रों में अच्छे मित्र के यही गुण बताये गये हैं ।

One should not have hesitation in giving or receiving. A good friend always acts for the benefit of others according to their capacity. In times of trouble, they show a hundred times more affection. These are the qualities of a good friend as described in the scriptures.

आगें कह मृदु बचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ।।
जा कर चित अहि गति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ।। [4/7]

सामने मीठे वचन बोलता है और पीछे मन में अनिष्ट रखता है, जिसका चित्त सांप जैसा हो, ऐसे कुमित्र से दूर रहना ही अच्छा है ।

Speaks sweet words upfront but harbors ill intentions behind.
One whose heart is like a snake's, it is best to avoid such a false friend.

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ।।
सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सब बिधि घटब काज मैं तोरें ।। [5/7]

मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, दुष्ट नारी, और कपटी मित्र ये चार कांटे की तरह होते हैं । मित्र, मेरे बल पर चिंता छोड़ दो । मैं तुम्हारे सभी कार्य सफल करूंगा ।

A foolish servant, a miserly king, a wicked woman, and a deceitful friend are like thorns. Friend, rely on my strength and abandon worries. I will accomplish all your tasks.

उपजा ग्यान बचन तब बोला । नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ।।
सुख संपत्ति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ।। [8/7]

सुग्रीव को जब ज्ञान उत्पन्न हुआ और तब कहा हे नाथ, आपकी कृपा से मन स्थिर हुआ सुख, संपत्ति, परिवार, बड़ाई को छोड़कर, मैं आपकी सेवा करूंगा ।

Wisdom arose and then I spoke. Lord, by your grace, my mind became stable. I will abandon pleasure, wealth, family, and fame to serve you.

ए सब रामभगति के बाधक । कहहिँ संत तब पद अवराधक ।।
सन्नु मित्र सुख दुख जग माहीं । माया कृत परमारथ नाहीं ।। [9/7]

संसार में मित्र, शत्रु, सुख-दुख माया के कारण हैं इनका वास्तविकता में कोई अर्थ नहीं है, ये सब रामभक्ति के बाधक हैं संत कहते हैं, राम के चरणों की सेवा करो ।

These are obstacles to devotion to Rama. Saints say to serve the feet of Rama. Friends, enemies, happiness, and sorrow in the world are due to illusion and have no real meaning.

जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ।।
नट मरकट इव सबहि नचावत । रामु खगेस बेद अस गावत ।। [12/7]

जो कुछ आपने कहा, सब सत्य है मित्र, मेरे वचन मिथ्या नहीं हैं। राम सबको नट बंदर की तरह नचाते हैं वेद ऐसा कहते हैं।

Whatever you said is all true. Friend, my words are not false. Rama makes everyone dance like a puppet. The Vedas say this.

अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधैं कछु पाप न होई ।। [4/9]

छोटे भाई की पत्नी को बहन, पुत्र की पत्नी को कन्या के समान समझना चाहिए।
इन्हें बुरी दृष्टि से देखने वाले को मारने में कोई पाप नहीं है।

The wife of a younger brother as a sister, and son's wife should be regarded as a daughter. There is no sin in killing someone who looks at them with an evil eye.

तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ।।
छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ।। [2/11]

बाली की पत्नी, तारा को व्याकुल देखकर रघुराज ने ज्ञान दिया और उसकी माया हर ली और कहा पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से बना यह शरीर अत्यंत पापी है।

Seeing Tara distressed, the king of Raghu gave knowledge and removed her illusion. This body, made of earth, water, fire, sky, and air, is very lowly.

उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ।।
सुर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ।। [1/12]

शिवजी कहते हैं, हे उमा, राम जैसा हितैषी इस जगत में नहीं है । गुरु, पिता, माता, बंधु और प्रभु भी नहीं देवता, मनुष्य, मुनि सभी स्वार्थ के लिए प्रेम करते हैं ।

O Uma, there is no benefactor like Rama in this world. Not even the guru, father, mother, relative, or lord. Gods, humans, and sages all love for selfish reasons.

बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावँर पसु कपि अति कामी ।।
नारि नयन सर जाहि न लागा । घोर क्रोध तम निसि जो जागा ।। [2/21]

सुग्रीव लक्ष्मण से कहते हैं कि, हे स्वामी! देवता, मनुष्य और मुनि सभी विषयों के वश में हैं फिर मैं तो पामर पशु और पशुओं में भी अत्यंत कामी बंदर हूँ ऐसा कौन है जिसे स्त्री का नयन बाण नहीं लगा, जो भयंकर क्रोध रूपी अँधेरी रात में भी जागता रहता है (क्रोधान्ध नहीं होता) ।

O Lord! Deities, humans, and sages are all subject to the sway of desires. How can I, a mere beast and among beasts a particularly lustful monkey, be any different? The eyes of a woman strike like arrows; even one who remains unaffected by them continues to stay awake in the dark night of fierce anger.

लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । सो नर तुम्ह समान रघुराया ।।
यह गुण साधन तें नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ।। [3/21]

हे रघुनाथ जी, जिसका गला लोभ के फंदे से नहीं बंधा है वह व्यक्ति तुम्हारे समान है, यह गुण साधना से नहीं प्राप्त होता केवल तुम्हारी कृपा से ही कोई पाता है ।

One whose neck is not bound by the noose of greed. That person is like you, O Raghuraya. This quality is not attained by practice, but only by your grace.

सुंदर कांड

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ।। [4]

लंकिनी राक्षसी हनुमान जी से कहतीं हैं, हे तात, स्वर्ग और मोक्ष के सुख को तराजू के एक पलड़े में रख दें और दूसरे पलड़े में सत्संग के सुख को रख दें, वह उस सुख के बराबर नहीं हो सकता जो एक पल सत्संग से मिलता है।

O sir, if you were to place the pleasures of heaven and liberation on one side of a scale and the pleasure of a single moment of satsang (holy company) on the other side, the pleasure of that moment of satsang would outweigh all the pleasures of heaven and liberation.

तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ।।
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ।। [2/7]

लंका में विभीषण हनुमान जी से कहते हैं कि मेरा तामसी (राक्षस) शरीर होने से साधन तो कुछ बनता नहीं और न मन में श्री रामचंद्रजी के चरणकमलों में प्रेम ही है, परंतु हे हनुमान्! अब मुझे विश्वास हो गया कि श्री रामजी की मुझ पर कृपा है, क्योंकि हरि की कृपा के बिना संत नहीं मिलते ॥

Because I have a Tamasic (demonic) body, I do not have the means for devotion, nor do I have love in my heart for the lotus feet of Lord Ramachandra. However, O Hanuman, I now

believe that Lord Ram's grace is upon me, for without the grace of the Lord, one cannot find a saint.

राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ।।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बर नारी ।। [2/23]

राम नाम बिना वाणी शोभा नहीं पाती सोचकर मद और मोह को त्याग दें । सब आभूषणों से सजी हुई सुंदर नारी बिना वस्त्रों के शोभा नहीं देती है ।

Without the name of Ram, speech does not shine. Therefore, abandon pride and attachment. A beautiful woman adorned with all jewels does not look graceful without clothes.

राम बिमुख संपत्ति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ।।
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गए पुनि तबहिं सुखाहीं ।। [3/23]

राम विमुख होकर संपत्ति और प्रभुता नहीं मिलती । बिना जल के स्रोत वाली नदियाँ बारिश के बाद फिर सूख जाती हैं ।

Wealth and lordship are not obtained by turning away from Rama. Rivers without a source of water dry up again after the rains.

कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ।। [2/27]

जानकी जी ने हनुमान जी से कहा, हे तात! आप श्री राम ही से मेरा प्रणाम निवेदन करना और इस प्रकार कहना- हे प्रभु! यद्यपि आप सब प्रकार से पूर्ण काम हैं (आपको किसी प्रकार की कामना नहीं है), तथापि दीनों (दुःखियों) पर दया करना आपका विरद है (और मैं दीन हूँ) अतः उस विरद को याद करके, हे नाथ! मेरे भारी संकट को दूर कीजिए ॥

Sita Ji said to Hanuman Ji, "Please offer my respects to Lord Ram and say this to Him: 'O Lord, although you are fully complete and have no desires, compassion for the distressed is your characteristic (and I am in distress). Therefore, remembering this characteristic, O Lord, please relieve me of my severe plight.'"

**जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥ [1/30]**

जामवंत ने कहा, सुनिए रघुराया जिस पर नाथ, आप दया करते हैं वह सदा शुभ और कुशल में रहता है। देवता, मनुष्य, मुनि उस पर प्रसन्न रहते हैं।

Jambavan said, listen, O Raghuraya. The one upon whom you show mercy, O Lord, they always remain in welfare and happiness. Gods, humans, and sages are pleased with them.

**सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रेलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥ [2/30]**

वही विजयी होता है, वही विनय और गुणों का सागर है उसकी कीर्ति तीनों लोकों में फैलती है। प्रभु की कृपा से सब काम पूरे हुए आज मेरा जन्म सफल हो गया।

The one who is victorious is also the ocean of humility and virtues. His glory spreads across the three worlds. By the Lord's grace, all tasks are accomplished. Today, my life has become successful.

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ।। [37]

मंत्री, वैद्य और गुरु ये तीनों भय या लोभ से प्रिय बोलते हैं, तो राज्य, धर्म और शरीर इन तीनों का शीघ्र नाश होता है ।

When ministers, doctors, and teachers speak lovingly out of fear or greed, the three aspects of life kingdom, righteousness, and body quickly face destruction.

जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ।।
सो परनारि लिलार गोसाईं । तजउ चउथि के चंद कि नाई ।। [3/38]

जो अपना कल्याण चाहता है सुयश, सद्बुद्धि, शुभ गति और अनेक सुख चाहता है वह पराई स्त्री को ऐसे त्यागे जैसे चौथ के चांद को ।

One who desires his own welfare. Desires good reputation, good sense, auspicious progress, and various happiness. He should abandon another's wife as he would the fourth day's moon.

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।

रामचरितमानस

सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ।। [38]

वासना, क्रोध, घमंड, और लोभ ये सभी नर्क के मार्ग हैं। हे नाथ, इन सबको छोड़कर रघुबीर की भजना करें, जैसे संत करते हैं।

Lust, anger, pride, and greed are all paths to hell. O Lord, abandon all these and worship Raghubir as saints do.

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ।। [3/40]

सुमति और कुमति सभी के हृदय में रहती हैं। हे नाथ, पुराण और वेद ऐसा कहते हैं जहाँ सुमति होती है, वहाँ अनेक संपत्ति होती है। जहाँ कुमति होती है, वहाँ विपत्ति का निवास होता है।

Good and bad intellect reside in everyone's heart. O Lord, the Puranas and Vedas say this. Where there is good intellect, there is abundant wealth. Where there is bad intellect, there is the abode of misfortune.

उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ।।
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ।। [4/41]

जब रावण ने विभीषण को लात मार कर लंका से भगा दिया तब विभीषण ने रावण से कहा आप पिता के समान मुझे भले ही मार लें लेकिन श्री रामचंद्र जी का भजन करने में ही तुम्हारा कल्याण है। शिवजी कहते हैं हे उमा, संत की यही बड़ाई है जो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करता है।

When Ravana kicked Vibhishan out of Lanka, Vibhishan said to Ravana, "Even if you, like a father, were to hit me, your well-being lies in the worship of Lord Ramachandra." Shiv Ji says, "O Uma, this is the greatness of a saint—he does good even to those who do him harm."

सरनागत कहूँ जे तजहिँ निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावैर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ।। [43]

श्री रामचंद्र जी सुग्रीव से बोले जो मनुष्य अपने अहित का अनुमान करके शरण में आए हुए का त्याग कर देते हैं, वे पामर (क्षुद्र) हैं, पापमय हैं, उन्हें देखने में भी हानि है (पाप लगता है)

Lord Ramachandra said to Sugriva, "Those who, having considered their own harm, abandon those who have sought refuge, are ignoble (insignificant) and sinful. It is even detrimental (sinful) to observe them."

नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।।
कादर मन कहूँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ।। [2/51]

जब श्री राम समुद्र के पास रास्ता माँगने के लिए गये तो लक्ष्मण को बहुत बुरा लगा । लक्ष्मण ने श्री राम से कहा, हे नाथ, भाग्य का क्या भरोसा, मन में क्रोध करें और सागर को सुखा दें । कायर मन का व्यक्ति हमेशा भाग्य को ही पुकारता है ।

When Lord Ram went to the sea to ask for a way across, Lakshman was very displeased. Lakshman said to Lord Ram, "O Lord, who can trust fate? Instead, let us be angry and dry up the sea. A cowardly person always blames fate."

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ।। [57]

मूर्ख समुद्र ने विनय नहीं मानी और तीन दिन बीत गए । तब राम क्रोध में बोले, बिना भय के प्रेम नहीं होता ।

The ocean did not heed the plea and three days passed. Then Rama spoke in anger, without fear there is no love.

लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ।। [1/58]

लक्ष्मण, धनुष-बाण लाओ मैं अग्निबाण से समुद्र को सुखा दूंगा, मूर्ख से विनय, कुटिल से प्रीति, और कंजूस से सुंदर नीति व्यर्थ है ।

Lakshman, bring the bow and arrows. I will dry up the ocean with a fiery arrow. Politeness to a fool, love for a deceitful person, and good policy with a miser are futile.

ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ।।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएँ फल जथा ।। [2/58]

ममता में लगे हुए व्यक्ति से ज्ञान की बात करना, अति लोभी से वैराग्य की चर्चा करना, क्रोधी और कामी से हरि कथा कहना बालू (रेत) भूमि में बीज बोने जैसा है ।

Discussing knowledge with a person absorbed in attachment, talking about renunciation with someone who is extremely

greedy, or telling tales of the Lord to a person who is angry and
lustful is like sowing seeds in sandy soil.

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ।।
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ।। [1/59]

भयभीत समुद्र ने प्रभु के चरण पकड़ लिए और कहा हे नाथ, मेरे सभी अवगुण क्षमा
करें आकाश, वायु, अग्नि, जल, और धरती, इनकी सहज ही जड़ता है ।

The frightened ocean held the Lord's feet. O Lord, forgive all
my faults. Sky, air, fire, water, and earth, naturally possess
inertness.

लंकाकांड

परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहीं बरनी ।।
करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कल्पना ।। [2/4]

रामेश्वरम की स्थापना करते समय श्री राम कहते हैं कि यह धरती अत्यंत रमणीय और उत्तम है, इसकी महिमा अनंत है, जो वर्णित नहीं हो सकती। यहाँ मैं शिव की स्थापना करूंगा, मेरे हृदय में यह परम कल्पना है।

This land is extremely beautiful and excellent. Its glory is infinite and cannot be described. Here I will establish Shiva.
This is my supreme vision in my heart.

नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ।।
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ।। [3/6]

मंदोदरी अपने पति रावण को समझाते हुए कहतीं हैं कि, हे नाथ, बैर उसी से कीजिए जिसे बुद्धि और बल से जीता जा सके। तुम्हारा और रघुपति का अंतर कैसा है जैसे जुगनू का सूर्य से।

O Lord, make enmity with only those who can be won by intellect and strength. What is the difference between you and Raghupati? Like that between a rogue and a firefly with the sun.

तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ।।

प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ।। [4/9]

रावण का पुत्र प्रहस्त रावण को समझाते हुए कहता है, हे तात, मेरे वचन अति ध्यान से सुनो मुझे कायर समझकर मन में विचार न करो । प्रिय वाणी जो सुनते और कहते हैं ऐसे लोग जगत में बहुत हैं ।

O sir, listen to my words with great respect. Do not think of me as a coward in your mind. Those who speak and listen to pleasing words. Such people are abundant in the world.

बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ।।
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ।। [5/9]

परम हितकारी वचन कठोर होते हैं । जो सुनते और कहते हैं, वे नर प्रभु थोड़े होते हैं । पहले दूत को भेजो, सीता देकर फिर से प्रीति करो ।

Words that are truly beneficial can be harsh. Those who listen to and speak them are rarely true masters. First, send a messenger, return Sita, and then renew the affection.

फूलह फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरुख हृदयँ न चेत जौँ गुर मिलहिं बिरंचि सम ।।16(ख) ।।

बेत (बाँस) फूलता-फलता नहीं, चाहे अमृत वर्षा ही क्यों न हो । मूरुख के हृदय में ज्ञान पैदा नहीं होता, चाहे ब्रह्मा के समान गुरु क्यों न मिलें ।

Bamboo neither blooms nor bears fruit, even if nectar rains down. A foolish heart does not realize, even if it meets a guru like Brahma.

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।
जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ।।23(ग)।।

प्रीति और विरोध बराबरी वाले व्यक्ति के साथ करनी चाहिए यह नीति ऐसी है । यदि शेर मेंडक को मारे तो इसमें शेर की कोई प्रशंसा नहीं है ।

The principle is that love and opposition should be directed toward equals. If a lion kills a frog, there's no praise for the lion in that.

जौ अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई ।।
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ।। [1/31]
सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी ।।
तनु पोषक निंदक अघ खानी । जीवन सब सम चौदह प्राणी ।। [2/31]

रावण की सभा में अंगद कहता है यदि मैं ऐसा करूँ, तो भी इसमें कोई बड़ाई नहीं है । मरे हुए को मारने में कुछ भी पुरुषत्व (बहादुरी) नहीं है । वाममार्गी, कामी, कंजूस, अत्यंत मूढ़, अति दरिद्र, बदनाम, बहुत बूढ़ा, सदा रोगग्रस्त और निरंतर क्रोधित विष्णु से विमुख और वेद-संत विरोधी शरीर का पोषण करने वाला, निंदा करने वाला और पाप की खान - ये चौदह प्राणी जीते ही मुरदे के समान हैं ।

In Ravana's court, Angada says, "Even if I do this, there's no greatness in it. There's no bravery in defeating the already defeated. The left-hand path follower, lustful, miserly, extremely foolish, very poor, infamous, very old, always ill, perpetually angry, opposed to Vishnu and the Vedas, one who only cares for the body, criticizes others, and is a repository of

sins—these fourteen types of people are as good as dead while
alive”

काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा । ।
निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई । । [4/37]

मंदोदरी रावण से कहतीं हैं काल किसी को डंडा पकड़ कर नहीं मारता वह पहले
धर्म, बल, बुद्धि और विचार हरता है । जिसके निकट काल आता है, उसे तुम्हारे
समान भ्रम होता है ।

Time does not kill anyone by simply wielding a stick; it first
takes away their righteousness, strength, intelligence, and
judgement. Those who come close to time are left in a state of
delusion, much like you.

सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा । ।
अस बिचारि जियै जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता । । [4/61]

लक्ष्मण जी के शक्ति लगने के बाद श्री राम विलाप करते हुए कहते हैं पुत्र, धन,
स्त्री, घर और परिवार ये सब संसार में बार-बार आते और जाते हैं ऐसा विचार कर,
हे तात, जागो जगत में सगे भाई का मिलना दुर्लभ है ।

Son, wealth, wife, house, and family. They come and go
repeatedly in the world. Thinking thus, O sir, awaken. Finding
a true brother in the world is rare.

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । आपुन मंद कथा सुभ पावन । ।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।। [1/78]

मेघनाथ की मृत्यु के बाद परिवार की स्त्रियों को रावण ने ज्ञान का उपदेश दिया वह स्वयं तो नीच है, पर उसकी कथा (बातें) शुभ और पवित्र हैं। दूसरों को उपदेश देने में तो बहुत लोग निपुण होते हैं। पर ऐसे लोग अधिक नहीं हैं, जो उपदेश के अनुसार आचरण भी करते हैं।

After Meghnath's death, Ravana gave a sermon on knowledge to the women of the family. Although he himself is vile, his words (teachings) are auspicious and pure. Many people are skilled at giving advice to others, but there are few who actually practice what they preach.

प्रभु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति बैदेही ।। [7/99]

प्रभु रावण के हृदय को इसलिए नहीं छेदते क्योंकि इसके हृदय में सीता जी बसती है।

The Lord does not pierce Ravana's heart because Sita resides in it.

जगत बिदित तुम्हारी प्रभुताई । सुत परिजन बल बरनि न जाई ।।

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ।। [5/104]

जगत में तुम्हारी प्रभुता प्रसिद्ध है तुम्हारे पुत्र, परिजन और बल की व्याख्या नहीं की जा सकती। राम से विमुख होने का तुम्हारा यही हाल है कुल में कोई रोने वाला भी नहीं बचा।

Your lordship is renowned in the world. Your children, relatives, and strength cannot be described. Such is your state after turning away from Rama. No one remains to mourn in your lineage.

सगुणोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहूँ राम भगति निज देहीं ।।
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ।। [4/112]

सगुण उपासक मोक्ष नहीं प्राप्त करते उन्हें राम की भक्ति ही मिलती है । बार-बार प्रभु को प्रणाम करते हुए दशरथ प्रसन्न होकर स्वर्ग चले गए ।

Saguna worshipers do not attain liberation. They are given devotion to Rama. Repeatedly saluting the Lord. Dasharatha happily went to heaven.

उत्तर कांड

राम राज बैठें त्रेलोका । हरषित भए गए सब सोका ।।
बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ।। [4/20]

श्री रामचंद्र जी के राज्य पर प्रतिष्ठित होने पर तीनों लोक हर्षित हो गए, उनके सारे शोक जाते रहे । कोई किसी से वैर नहीं करता । श्री रामचंद्रजी के प्रताप से सबकी विषमता (आंतरिक भेदभाव) मिट गई ॥

When Lord Rama was established in his kingdom, all three worlds were filled with joy, and all their sorrows disappeared. No one harbored any animosity towards anyone. Due to the glory of Lord Rama, all internal differences and discrimination were eradicated.

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहीं काहुहि ब्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।। [1/21]

'रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते । सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं ।

"In 'Rama's kingdom,' physical, divine, and material sufferings do not afflict anyone. All people love one another and diligently follow the principles (codes of conduct) outlined in the Vedas while adhering to their respective duties."

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा । ।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना । । [3/21]

छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है, सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं, न कोई दरिद्र है, न दुःखी है और न दीन ही है, न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है ।

In this state, death does not occur in youth, nor does anyone experience any pain. Everyone's body is beautiful and healthy. There is neither poverty nor sorrow, and no one is destitute. There is no ignorance, and everyone possesses auspicious qualities.

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी । ।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी । । [4/21]

सभी दम्भरहित हैं, धर्मपरायण हैं और पुण्यात्मा हैं पुरुष और स्त्री सभी चतुर और गुणवान हैं, सभी गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी हैं । सभी कृतज्ञ (दूसरे के किए हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई (धूर्तता) किसी में नहीं है ।

Everyone is free from arrogance, devoted to righteousness, and virtuous. Both men and women are intelligent and virtuous. They respect all virtues, are learned, and possess knowledge. Everyone is grateful and acknowledges the benefits received from others, and there is no deceit or cunning among them.

सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरन सेवक नर नारी ।।
एकनारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ।। [4/22]

सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं । सभी पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं इसी प्रकार स्त्रियाँ भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं ।

All men and women are generous, benevolent, and serve the feet of the Brahmins. All men are devoted to one wife. Similarly, women are devoted to the well-being of their husbands through their thoughts, speech, and actions.

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहि एक सँग गज पंचानन ।।
खग मृग सहज बयरु बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ।। [1/23]

वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं हाथी और सिंह (वैर भूलकर) एक साथ रहते हैं । पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक वैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है ।

In the forests, trees always bloom and bear fruit. Elephants and lions live together in harmony, forgetting their enmity. Birds and animals have set aside their natural animosities and have increased mutual love.

आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा । तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ।।
बड़े भाग पाइब सतसंगा । बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ।। [4/33]

सनकादी मुनियों के अयोध्या आने पर श्री राम कहते हैं, हे मुनीश्वरो! सुनिए, आज मैं धन्य हूँ आपके दर्शनों ही से (सारे) पाप नष्ट हो जाते हैं । बड़े ही भाग्य से सत्संग की प्राप्ति होती है, जिससे बिन ही परिश्रम जन्म-मृत्यु का चक्र नष्ट हो जाता है ।

O great sages, listen: today I am blessed. By merely seeing you, all sins are destroyed. It is by great fortune that one attains the company of the virtuous, which destroys the cycle of birth and death without much effort.

संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहि संत कवि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ ।। [33]

संत का संग अपवर्ग (मोक्ष) का मार्ग है और कामी (भोगी) का संग जन्म मृत्यु के बंधन में पड़ने का मार्ग है। संत, कवि, ज्ञानी, श्रुति, पुराण और सद्ग्रंथ यही कहते हैं।

The company of saints is the path to liberation (moksha), while the company of the lustful (sensual beings) is the path to the cycle of birth and death. Saints, poets, scholars, scriptures (Shruti), Puranas, and sacred texts all say the same thing.

संत असंतन्हि कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।
काटइ परसु मलय सुनु भाई । निज गुन देइ सुगंध बसाई ।। [4/37]

संतों की और असंतों की यही करनी है, जैसे चंदन और कुल्हाड़ी का संबंध। हे भाई! कुल्हाड़ी चंदन को काटती है, लेकिन चंदन उसे सुगंध देता है।

The deeds of saints and wicked are like the relation between sandalwood and an axe. O brother! The axe cuts the sandalwood, but the sandalwood imparts fragrance to it.

ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।

रामचरितमानस

अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ।। [37]

चंदन देवताओं के सिर पर चढ़ाया जाता है और कुल्हाड़ी को जो चंदन को काटती है उसको अग्नि में गर्म करके लोहे से पीटा जाता है ।

Sandalwood is placed on the heads of gods, while the axe that cuts the sandalwood is heated in fire and struck with iron.

निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज ।। [38]

जिन्हें निंदा और स्तुति (बड़ाई) दोनों समान हैं और मेरे चरणकमलों में जिनकी ममता है, वे गुणों के धाम और सुख की राशि संतजन मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं ।

Those who regard both criticism and praise as equal and who have affection for my lotus feet, are the abode of virtues and the source of happiness. Such saints are as dear to me as my very life.

सनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । भूलेहुँ संगति करिअ न काऊ ।।
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कलपहि घालइ हरहाई ।। [1/39]

अब असंतों दुष्टों का स्वभाव सुनो, कभी भूलकर भी उनकी संगति नहीं करनी चाहिए । उनका संग सदा दुःख देने वाला होता है जैसे हरहाई (बुरी जाति की) गाय कपिला (सीधी और दुधार) गाय को अपने संग से नष्ट कर डालती है ॥

Now, listen to the nature of the wicked and the unrighteous; one should never associate with them, even by mistake. Their company always brings sorrow, just as a bad-natured cow ruins a good and milking cow by its association.

खलन्ह हृदयै अति ताप बिसेषी । जरहिं सदा पर संपति देखी ।।
जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई । हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ।। [2/39]

दुष्टों के हृदय में बहुत ताप होता है वे सदा दूसरों की संपत्ति देखकर जलते हैं जहाँ
कहीं भी पराई निंदा सुनते हैं, वे ऐसे खुश होते हैं जैसे खजाना मिल गया हो ।

The hearts of the wicked are very heated. They always burn
seeing others' wealth. Wherever they hear others' criticism,
they feel as happy as if they have found a treasure.

काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ।।
बयरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ।। [3/39]

जो काम, क्रोध, मद, और लोभ में डूबे होते हैं वे निर्दयी, कपटी, कुटिल और
मलायन होते हैं, सब से बिना कारण बैर करते हैं । जो उनके हित करता है, उससे भी
अनहित करते हैं ।

Those who are immersed in desire, anger, pride, and greed are
cruel, deceitful, cunning, and malevolent. They hold enmity
with everyone without any reason. Even towards those who act
in their best interest, they respond with harm

पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद ।
ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ।। [39]

वे दूसरों से द्रोह करते हैं और पराई स्त्री, पराए धन तथा पराई निंदा में आसक्त रहते
हैं । वे पामर और पापमय मनुष्य नर शरीर धारण किए हुए राक्षस ही हैं ।

They harbor enmity towards others and are attached to other people's women, wealth, and slander. Such wretched and sinful individuals, though in human bodies, are nothing but demons.

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्त्रोदर पर जमपुर त्रास न ।।
काहू की जौ सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ।। [1/40]

लोभ ही उनका ओढ़ना और बिछौना है, वे पशुओं के समान भोजन और मैथुन में लगे रहते हैं। उन्हें यम कूर का भय नहीं होता यदि वे किसी की प्रशंसा सुनते हैं, तो ऐसे सांस लेते हैं जैसे ज्वर आया हो।

Greed is their covering and bedding, and they are engaged in food and sensual pleasures like animals. They have no fear of Yama's punishment. When they hear praise for others, they breathe as if they have contracted a fever.

जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भए मानहुं जग नृपती ।।
स्वारथ रत परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ।। [2/40]

जब किसी को विपत्ति में देखते हैं, तो वे ऐसे खुश होते हैं जैसे वे राजा हों। वे स्वार्थ में लिप्त, परिवार के विरोधी, लंपट, कामी, लोभी और क्रोधी होते हैं।

When they see someone in trouble, they feel as happy as if they are kings. They are selfish, oppose their family, are lustful, greedy, and extremely angry.

**मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ।।
करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ।। [3/40]**

वे माता, पिता, गुरु, ब्राह्मण का सम्मान नहीं करते । खुद तो गए ही, दूसरों को भी ले डूबते हैं । मोह में पड़कर दूसरों से द्रोह करते हैं । संत संग और हरि कथा उन्हें पसंद नहीं आती ।

They do not respect parents, teachers, or Brahmins. They destroy themselves and others. Driven by attachment, they harm others. They dislike the company of saints and the stories of Hari.

**पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।
निर्णय सकल पुरान बेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ।। [1/41]**

हे भाई! दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों की पीड़ा के समान कोई अधर्म नहीं है । सभी पुराण और वेदों का यही निर्णय है ज्ञानी पुरुष इसे जानते हैं ।

O brother! There is no religion like benefiting others and no sin like causing others' pain. This is the conclusion of all Puranas and Vedas. Wise men know this.

**नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ।।
करहिं मोह बस नर अघ नाना । स्वारथ रत परलोक नसाना ।। [2/41]**

मनुष्य का शरीर धारण करके जो लोग दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, उनको जन्म-मृत्यु के महान् संकट सहने पड़ते हैं । मनुष्य मोहवश स्वार्थपरायण होकर अनेकों पाप करते हैं, इसी से उनका परलोक नष्ट हुआ रहता है ।

Those who cause suffering to others while having a human body must endure the great trials of birth and death. Driven by worldly attachments and selfishness, humans commit numerous sins, leading to their afterlife being ruined.

**बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथिन्ह गावा ।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ।। [4/43]**

बड़े भाग्य से मनुष्य शरीर मिलता है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, ऐसा सभी ग्रंथ कहते हैं। यह साधन का धाम और मोक्ष का द्वार है, जिसे पाकर भी जो परलोक नहीं संवारता

By great fortune, one attains a human body, which is rare even for gods, as all scriptures state. It is an abode of means and a gateway to liberation. Those who do not improve their afterlife despite having it.

**सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ।। [43]**

वह परलोक में दुख पाता है और सिर पीट पीट कर पछताता है और अपना दोष ना मान कर समय, कर्म और ईश्वर पर झूठे दोष लगाता है।

He suffers in the afterlife, repeatedly striking his head in regret.
He falsely blames time, deeds, and God.

एहि तन कर फल बिषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ।।

नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ।। [1/44]

हे भाई! इस शरीर का फल विषय नहीं है स्वर्ग के भोग भी थोड़े हैं और अंत में दुख देने वाले हैं। मनुष्य शरीर पाकर जो विषयों में मन देते हैं, वे मूर्ख अमृत छोड़कर विष लेते हैं।

O brother! The fruit of this body is not pleasure. Even the pleasures of heaven are fleeting and ultimately lead to sorrow. Those who indulge in sensual pleasures despite obtaining a human body are foolish; they choose poison over nectar.

**फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन घेरा ।।
कबहुँक करि करुना नर देही । देत ईस बिनु हेतु सनेही ।। [3/44]**

मनुष्य का मन माया की प्रेरणा से काल, कर्म, स्वभाव और गुणों से घिरा हुआ भटकता रहता है। कभी-कभी करुणा करके ईश्वर बिना किसी कारण से प्रेमपूर्वक मनुष्य शरीर देते हैं।

A person's mind, influenced by the delusions of Maya, is entangled in time, actions, nature, and qualities, and thus wanders. Occasionally, with compassion, God lovingly grants a human body without any particular reason.

**नर तनु भव बारिधि कहूँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ।।
करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ।। [4/44]**

मनुष्य शरीर भवसागर से तारने के लिए जहाज़ है, भगवान की कृपा ही अनुकूल हवा है। सदगुरु इस जहाज़ के खेने वाले हैं, इस प्रकार दुर्लभ साधन सुलभ होकर भागवत कृपा से सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

The human body is a ship to cross the ocean of existence, and God's grace is the favourable wind. The Sadguru is the helmsman of this ship. Thus, this rare means becomes accessible and easily attainable through the grace of the Lord.

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ।। [44]

जो मनुष्य ऐसे साधन पाकर भी भवसागर से न तरे, वह कृतघ्न और मंद बुद्धि है और आत्महत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है ।

A person who, despite having such means, does not cross the ocean of worldly existence is ungrateful and of dull intellect, and they face the fate of one who has committed suicide.

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ।।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ।। [1/46]

बताओ भक्ति पथ में कौन सा प्रयास है? इसमें योग, यज्ञ, जप, तप, उपवास नहीं हैं । सरल स्वभाव, मन में कुटिलता न हो । जो मिले उसमें संतोष हो ।

Tell me, what effort is there in the path of devotion? It does not involve yoga, rituals, chanting, austerities, or fasting. Have a simple nature, no deceit in the mind. Be content with whatever you get.

बैर न बिग्रह आस न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सब आसा ।।
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ।। [3/46]

न बैर, न विवाद, न आशा, न भय सब आशाओं से सदा सुखमय बिना प्रारंभ, जिसको घर में ममता नहीं हो, जिसको अपना मान सम्मान बहुत प्रिय ना हो । बिना पाप, बिना क्रोध, और भक्ति में निपुण और ज्ञानी हो ऐसा व्यक्ति भगवान की भक्ति शीघ्र प्राप्त कर लेता है ।

No enmity, no disputes, no hopes, no fears. Always full of joy, free from all desires. Someone who lacks affection in their home, who does not highly value their own respect and honor, who is free from sin and anger, and who is proficient and knowledgeable in devotion—such a person quickly attains the devotion of God.

नाथ एक बर मागउँ राम कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ।। [49]

हे नाथ! एक वरदान माँगता हूँ, कृपा करके दें जन्म-जन्मांतर में प्रभु के चरण कमलों से मेरा प्रेम कभी कम न हो ।

O Lord! I ask for one boon, please grant it. May my love for the Lord's lotus feet never diminish in any lifetime.

नर सहस्त्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी ।।
धर्मसील कोटिक महँ कोई । बिषय बिमुख बिराग रत होई ।। [1/54]

हे पुरारी! सुनें, हजारों मनुष्यों में कोई एक धर्म ब्रतधारी होता है । करोड़ों धर्मशीलों में कोई एक विषयों से विमुख और वैराग्य में परायण होता है ।

O Purari! Listen, among thousands of men, one is devoted to dharma. Among millions of righteous men, one is detached from worldly pleasures and devoted to renunciation.

जो अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानइ सोई ।।
जौ नहिं होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही ।। [2/69]

जो अत्यधिक गर्मी से व्याकुल हो, वह ही वृक्ष की छाया के सुख को जानता है ।
अगर मोह अत्यधिक न होता, तो मैं तुझसे किस प्रकार मिल पाता ।

One who is extremely troubled by heat knows the comfort of tree shade. If attachment was not excessive, how would I have met you?

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ।। [70 ख]

लक्ष्मी के मद ने किसको टेढ़ा और प्रभुता ने किसको बहरा नहीं कर दिया? ऐसा कौन है जिसे मृगनयनी (युवती स्त्री) के नेत्र बाण न लगे हों ।

Whom has the intoxication of wealth not made arrogant, and whom has authority not made deaf? Who has not been struck by the arrow-like eyes of a doe-eyed woman?

मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ।।
चिंता साँपिनि को नहिं खाया । को जग जाहि न ब्यापी माया ।। [2/71]

मच्छर ने किसे कलंकित नहीं किया? किसे शोक ने नहीं हिलाया? चिंता ने किसे नहीं
खाया? किसे इस संसार में माया ने नहीं घेरा?

Who has not been tainted by mosquitoes? Who has not been
shaken by grief? Who has not been eaten by the snake of worry?
Who in this world has not been ensnared by illusion?

कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ।।
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि के मति इन्ह कृत न मलीनी ।। [3/71]

मनोरथ क्रीड़ा है, शरीर लकड़ी है । ऐसा धैर्यवान् कौन है, जिसके शरीर में यह कीड़ा
न लगा हो? पुत्र की, धन की और लोक प्रतिष्ठा की, इन तीन प्रबल इच्छाओं ने
किसकी बुद्धि को मलिन नहीं कर दिया (बिगाड़ नहीं दिया)?

Desires are like playthings, and the body is like wood. Who is
so patient that they are not afflicted by this worm? The strong
desires for children, wealth, and worldly reputation have not
tainted (or spoiled) whose intellect?

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप ।। [73 क]

जो काम, क्रोध, मद, लोभ में रत और गृहासक्त होकर दुख में फंसे हैं, वे मूढ़ अंधकार रूपी कुएँ में पड़े हुए रघुपति को कैसे जान सकते हैं?

Those who are engrossed in lust, anger, pride, greed, and attached to household life, trapped in sorrow, and fallen in the well of darkness, how can they know Raghupati?

**सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥
संसृत मूल सूलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना ॥ [3/74]**

श्री रामचंद्र जी का सहज स्वभाव सुनिए वे भक्त में अभिमान कभी नहीं रहने देते, क्योंकि अभिमान जन्म-मरण रूप संसार का मूल है और अनेक प्रकार के क्लेशों तथा समस्त शोकों का देने वाला है ।

Listen to the natural disposition of Lord Ramachandra. He never allows pride to remain in his devotees, as pride is the root of the worldly cycle of birth and death and brings various kinds of suffering and sorrow.

**भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु बिंजन जैसे ॥
भजन हीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥ [3/84]**

बिना भक्ति के सभी गुण और सुख ऐसे हैं जैसे बिना नमक के कई व्यंजन । बिना भजन के कोई भी सुख सार्थक नहीं यही सोचकर, हे खगराज! मैंने कहा ।

Without devotion, all virtues and joys are like many dishes without salt. Without devotion, no happiness is meaningful.
With this thought, O king of birds, I spoke.

मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिधि प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥ [2/86]

श्री रामचंद्र जी कहते हैं मेरी माया से यह संसार बना है चराचर जीव विभिन्न प्रकार के हैं । सब मुझे प्रिय हैं, सब मेरे उत्पन्न किए हुए हैं सबसे अधिक मनुष्य मुझे प्रिय हैं ।

This world is created by my illusion. Living beings are of various kinds. All are dear to me; all are my creations. Humans are the dearest to me.

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥ [4/86]

विज्ञानियों से भी प्रिय मुझे अपना दास है, जिसे मेरी ही गति (आश्रय) है, कोई दूसरी आशा नहीं है । मैं तुझसे बार-बार सत्य ('निज सिद्धांत') कहता हूँ कि मुझे अपने सेवक के समान प्रिय कोई भी नहीं है ।

Even dearer to me than the learned scholars is my devotee, who has taken refuge in me alone and has no other desires. I repeatedly tell you the truth ('my own principle') that no one is as dear to me as my servant.

भगति हीन बिरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥ [5/86]

बिना भक्ति के ब्रह्मा भी कुछ नहीं हैं सभी जीव मुझे समान प्रिय हैं अत्यंत नीच भक्त भी मुझे प्राणप्रिय है। यह मेरी वाणी है।

Without devotion, even Brahma is nothing. All beings are equally dear to me. Even the lowest devotee is dear to me like my life. This is my word.

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहि कलेसा ।।
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ।। [3/89]

कागभूसुंड जी गरुण जी से कहते हैं, हे खगराज! अब मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि बिना हरि भजन के कलेश नहीं जाते। राम की कृपा बिना, हे खगराज! राम की महिमा को जाना नहीं जा सकता।

O king of birds! Now I speak from my experience that without Hari's devotion, sorrows do not leave. Without Ram's grace, O king of birds! Ram's greatness cannot be known.

बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ।।
राम भजन बिनु मिटहिँ कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा ।। [1/90]

बिना संतोष के कामना समाप्त नहीं होती। कामना रहते हुए सुख सपने में भी नहीं मिलता राम भजन बिना क्या कामनाएं मिट सकती हैं? क्या बिना जमीन के पेड़ उग सकते हैं?

Without contentment, desires do not end. With desires, happiness is not even in dreams. Can desires be erased without Ram's devotion? Can a tree grow without soil?

बिनु बिग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ ।।
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावइ कोई ।। [2/90]

बिना विज्ञान के समता नहीं आती, क्या बिना आकाश के कोई स्थान पा सकता है?
बिना श्रद्धा के धर्म नहीं होता, क्या बिना पृथ्वी के कोई सुगंध पा सकता है?

Without knowledge, equality cannot come. Can anyone find
space without the sky? Without faith, there is no religion. Can
anyone find fragrance without earth?

निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ।।
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नासा ।। [4/90]

निज-सुख (आत्मानंद) के बिना क्या मन स्थिर हो सकता है? वायु-तत्त्व के बिना
क्या स्पर्श हो सकता है? क्या विश्वास के बिना कोई भी सिद्धि हो सकती है? इसी
प्रकार श्री हरि के भजन बिना जन्म-मृत्यु के भय का नाश नहीं होता ।

Can the mind be stable without self-bliss? Can there be touch
without the element of air? Can any achievement be attained
without faith? Similarly, the fear of birth and death cannot be
eradicated without devotion to Lord Hari.

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु ।। 90(क) ।।

बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती, और भक्ति बिना राम प्रसन्न नहीं होते । राम की
कृपा बिना जीव सपने में भी विश्राम नहीं पाता ।

Without faith, there is no devotion, and without devotion, Ram is not pleased. Without Ram's grace, a soul does not find rest even in dreams.

एहि तन राम भगति मै पाई । ताते मोहि ममता अधिकाई ।।
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ।। [4/95]

कागभुसंड जी कहते हैं, इस शरीर से मैंने राम भक्ति पाई है, इसलिए मुझे इससे अधिक ममता है। जिससे कोई स्वार्थ सिद्ध होता है, सब उसी पर ममता रखते हैं।

Kakbhushundi Ji says, I have attained devotion to Ram through this body, and hence I have great affection for it. Everyone holds affection for that which fulfils their self-interest.

पन्नगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ।। 95(क) ।।

सज्जन और श्रुति के अनुसार, अत्यंत नीच व्यक्ति भी अगर तुम्हारे परम हित में और तुम्हारे कार्य का हो तो उससे भी प्रेम कर लेना चाहिए।

According to virtuous people and the scriptures, even love the extremely lowly if it serves your supreme interest.

नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ।। [1/99]

हे स्वामी! सभी पुरुष स्त्री के वश में होते हैं और नट और बंदर की तरह नाचते हैं।

O Lord! All men are controlled by women and dance like actors
and monkeys.

हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुरु घोर नरक महुँ परई । ।
मातु पिता बालकन्हि बोलाबहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं । । [4/99]

जो गुरु शिष्य का धन हड़पता है, लेकिन उसके दुख को नहीं हरता, वह घोर नरक में
पड़ता है । माता-पिता बच्चों को बोलना सिखाते हैं, और उन्हें पेट भरने का धर्म
सिखाते हैं ।

A guru who seizes the disciple's wealth but does not alleviate
their suffering falls into a deep hell. Parents teach their
children to speak and impart the duty of earning a living to
them.

कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनिहिं चेरी निबेरि गती । ।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीं जब लौं । । [2/101]

कलयुग में कुलवंत और सती स्त्रियाँ घर से निकाली जाती हैं, और घर में दासी लाई
जाती है । पुत्र माता-पिता का सम्मान तब तक करते हैं जब तक उनका विवाह नहीं
होता ।

In Kalyug, noble and virtuous women are cast out of the home,
and a maid is brought in. Sons respect their parents until they
get married.

द्वारपर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा । ।

कलियुग केवल हरि गुण गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ।। [2/103]

द्वारपर युग में रघुपति के चरणों की पूजा करके लोग भवसागर पार करते थे । कलियुग में केवल हरि के गुण गाने से ही मनुष्य भवसागर पार कर सकते हैं ।

In the Dwapar age, people crossed the ocean of existence by worshipping Lord Raghupati's feet. In the Kalayuga, men can only cross it by singing the glories of Hari.

जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ।।
धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ।। [5/106]

नीच व्यक्ति जिसकी सहायता से आगे बढ़ता है वह सबसे पहले सहायता करने वाले को ही नष्ट करता है । धुआं, जो अग्नि से उत्पन्न होता है, उसे बादल की बारिश बुझा देती है ।

A lowly person first destroys the one who helped them advance. Just like smoke, which originates from fire, is extinguished by the rain from clouds.

सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संग ।।
कबि कोबिद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ।। [7/106]

हे पक्षियों के राजा! सुनो, समझो इस बात को बुद्धिमान लोग नीच लोगों का संग नहीं करते कवि और विद्वान कहते हैं, दुष्टों से कलह और प्रेम दोनों ही उचित नहीं ।

O king of birds! Listen and understand this. Wise people do not associate with the vile. Poets and scholars say that conflict and love with the wicked are both unwise.

सुनु प्रभु बहुत अवग्या किऐँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिऐँ ।।
अति संघरषन जाँ कर कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ।। [8/111]

हे प्रभु! सुनिए, मैंने बहुत अपमान किए हैं । ज्ञानी के हृदय में भी क्रोध उत्पन्न हो सकता है यदि कोई अत्यधिक रगड़ता है, तो चंदन से भी अग्नि प्रकट होती है ।

O Lord! Listen, I have committed many offences. Anger arises in the heart of a wise person. If someone rubs excessively, even sandalwood produces fire.

पावन जस कि पुन्य बिनु होई । बिनु अघ अजस कि पावइ कोई ।।
लाभु कि किछु हरि भगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ।। [4/112]

क्या पुण्य के बिना पावन यश प्राप्त हो सकता है? क्या पाप के बिना कोई अपयश प्राप्त कर सकता है? हरि भक्ति के समान कोई लाभ नहीं है, जिसे श्रुति और संत पुराणों ने गाया है ।

Can pure fame be achieved without virtue? Can infamy be attained without sin? There is no gain equal to Hari's devotion, praised by the scriptures and ancient saints.

ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुख रासी ।।
सो मायाबस भयउ गोसाईँ । बैँध्यो कीर मरकट की नाईँ ।। [2/117]

यह जीव ईश्वर का अंश है और अविनाशी है। यह चेतन निर्मल है और सुख देने वाला है, किंतु माया के वशीभूत हो कर के माया के जाल में बंदर की तरह नाच रहा है।

The soul is a part of God and is eternal. It is conscious, pure, and brings happiness. However, under the influence of illusion, it is dancing in the net of Maya like a monkey.

**राम भगति मनि उर बस जाकें । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ।।
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ।। [5/120]**

जिनके हृदय में राम भक्ति का मणि बसा हो, उन्हें सपने में भी दुख नहीं होता। वे ही जगत के चतुर श्रेष्ठ हैं, जो भक्ति के मणि को पाने के लिए प्रयास करते हैं।

Those whose hearts hold the gem of Ram's devotion experience no sorrow, not even in dreams. They are the wisest in the world, who strive to attain the gem of devotion.

**नर तन सम नहीं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ।।
नरग स्वर्ग अपबर्ग निसेनी । ग्यान बिराग भगति सुभ देनी ।। [5/121]**

मानव शरीर जैसा कोई देह नहीं है, जीव चराचर सभी इसे प्राप्त करना चाहते हैं। यह नरक, स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है, जो ज्ञान, वैराग्य और भक्ति प्रदान करती है।

There is no body like the human body. All beings, mobile and immobile, seek it. It is the ladder to hell, heaven, and liberation, providing knowledge, detachment, and devotion.

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ।।
पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगराया ।। [7/121]

संसार में दरिद्रता (गरीबी) जैसा दुख और संत मिलन जैसा सुख नहीं है। वचन, मन,
और काया से परोपकार करना संतों का सहज स्वभाव है।

There is no sorrow like poverty and no joy like meeting a saint.
Doing good with words, mind, and body is the natural
disposition of saints.

संत सहहिं दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अभागी ।।
भूर्ज तरु सम संत कृपाला । परहित निति सह बिपति बिसाला ।। [8/121]

संत पुरुष दूसरों की भलाई के लिए दुख सहने हैं, और दुष्ट पुरुष दूसरों को दुख देते
हैं। संत भोज के वृक्ष के समान होते हैं जो दूसरों की भलाई के लिए कष्ट सहते हैं।

Saintly individuals endure suffering for the benefit of others,
while wicked people cause suffering to others. Saints are like
the Bhoj tree, which bears hardships for the well-being of
others.

सन इव खल पर बंधन करई । खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई ।।
खल बिनु स्वार्थ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ।। [9/121]

खल दूसरों को सन की तरह बाँधते हैं और खाल कढ़ाई में विपत्ति सहकर मर जाते
हैं। खल बिना स्वार्थ के दूसरों का अहित करते हैं, जैसे साँप और चूहा बिना किसी
स्वार्थ के दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं।

Wicked people bind others like thread and endure difficulties like leather being tanned. They cause harm to others without any personal gain, just as snakes and rats inflict suffering on others without any self-interest.

संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ।।
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । पर निंदा सम अघ न गरीसा ।। [11/121]

संतों का उदय सदा सुखदायी होता है जैसे चंद्रमा का उदय विश्व के लिए सुखद होता है । श्रुति में अहिंसा को परम धर्म कहा गया है, परनिंदा जैसा पाप नहीं है ।

The rise of saints is always pleasant. Like the moon's rise is pleasant for the world. In the scriptures, non-violence is considered the supreme duty. There is no sin like slander.

उबारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ।। 122(क) ।।

बालू से तेल और पानी मथने से घी निकालना संभव है, लेकिन बिना भगवान का भजन किए भवसागर पार नहीं हो सकता । यह सिद्धांत अटूट है ।

It is possible to extract ghee by churning water and oil from sand, but crossing the ocean of existence is not possible without worshipping God. This principle is unbreakable.

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर । ॥130(क) ॥

हे श्री रघुवीर! मेरे समान कोई दीन नहीं है और आपके समान कोई दीनों का हित करने वाला नहीं है। ऐसा विचार कर हे रघुवंशमणि! मेरे जन्म-मरण के भयानक दुःख का हरण कर लीजिए।

There is no one as sorrowful as I am, and no one as capable of removing suffering as you, O Raghubir. Considering this, O jewel of the Raghu dynasty, please take away the terrible sorrow of my birth and death.

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम । ॥130(ख) ॥

जैसे कामी को स्त्री प्रिय और लोभी को धन प्रिय होता है, वैसे ही रघुनाथ, मुझे भी राम निरंतर प्रिय लगे।

Just as a lustful person loves a woman and a greedy person loves wealth, may Raghunath, Ram, always be dear to me.

श्रीमद्भागवत गीता

श्रीमद्भागवत गीता को सामान्यतः गीता ही कहा जाता है। महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी बनकर अर्जुन का रथ चला रहे थे। युद्ध के प्रथम दिन कुरुक्षेत्र के मैदान में जब अर्जुन ने अपने विरुद्ध अपने ही परिजनों और परिचितों को युद्ध के लिए तैयार देखा तो अपना गांडीव धनुष नीचे रख दिया और श्री कृष्ण से कहा कि मैं इनको मारकर विजयी नहीं होना चाहता, अतः मैं युद्ध नहीं करूँगा। तब भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन का मोह भंग कर उसे पुनः युद्ध के लिए तैयार करने में जो ज्ञान दिया उसे ही महर्षि वेद व्यास ने महाभारत में श्रीमद्भागवत गीता का नाम दिया। महाभारत का युद्ध लगभग 5000 वर्ष पूर्व लड़ा गया था। आज गीता का ज्ञान मनुष्य के जीवन में पहले से और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, संन्यास, पुनर्जन्म, आत्मा, परमात्मा सभी पर ज्ञान दिया है। जो हमें अपने जीवन में पग पग पर आगे बढ़ने, आत्म बल और ईश्वर की भक्ति बढ़ने में सहयोग करता है।

गीता का प्रत्येक श्लोक एक महामंत्र है। हमने कुछ श्लोकों को चुन कर इस पुस्तक में संकलित किया है जिस से कि कम समय में ही हम गीता का कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकें। आपसे निवेदन है कि इसमें पायी गई गलतियों पर ध्यान ना देते हुए श्लोक में दिये गये ज्ञान को अपने जीवन उपयोग में लायें।

। जय श्री कृष्ण ।

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ [2/15]

जो मनुष्य सुख तथा दुःख में विचलित नहीं होता और इन दोनों परिस्थितियों में स्थिर रहता है, वह वास्तव में मुक्ति का पात्र है ।

That person who is not affected by happiness and distress, and remains steady in both, becomes eligible for liberation.

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ [2/17]

जो पूरे शरीर में व्याप्त है, उस आत्मा को ही तुम अविनाशी समझो । उस अनश्वर आत्मा को नष्ट करने में कोई भी समर्थ नहीं है ।

The soul, which exists within every body, is eternal and cannot be destroyed by anyone.

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥1 [2/19]

वह जो यह सोचता है कि आत्मा को मारा जा सकता है, या आत्मा मर सकती है, वे दोनों ही अज्ञानी हैं । वास्तव में आत्मा न तो मरती है और न ही उसे मारा जा सकता है ।

Neither of them is in knowledge—the one who thinks the soul can slay and the one who thinks the soul can be slain.
For truly, the soul neither is killed nor can it be killed.

न जायते म्रियते वा कदाचि
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः |
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे [2/20]

आत्मा का न तो कभी जन्म होता है, न ही मृत्यु होती है और न ही आत्मा किसी काल में जन्म लेती है और न ही कभी मृत्यु को प्राप्त होती है। आत्मा अजन्मा, शाश्वत, अविनाशी और चिरनूतन है। शरीर का विनाश होने पर भी इसका विनाश नहीं होता।

The soul is neither born, nor does it ever die; nor having once existed, does it ever cease to be. The soul is without birth, eternal, immortal, and ageless. It is not destroyed when the body is destroyed.

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि |
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा
न्यन्यानि संयाति नवानि देही || [2/22]

जिस प्रकार से मनुष्य अपने फटे पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार मृत्यु होने पर आत्मा पुराने तथा व्यर्थ शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करती है।

As a person sheds worn-out garments and wears new ones, likewise, at the time of death, the soul casts off its worn-out body and enters a new one.

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ [2/23]

किसी भी शस्त्र द्वारा आत्मा के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न ही अग्नि आत्मा को जला सकती है, न ही जल द्वारा उसे गीला किया जा सकता है और न ही वायु इसे सुखा सकती है ।

Weapons cannot shred the soul, nor can fire burn it. Water cannot wet it, nor can the wind dry it.

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ [2/24]

आत्मा अखंडित और अज्वलनशील है, इसे न तो गीला किया जा सकता है और न ही सुखाया जा सकता है । यह आत्मा शाश्वत, सर्वव्यापी, अपरिवर्तनीय, अचल और अनादि है ।

The soul is unbreakable and incombustible; it can neither be dampened nor dried. It is everlasting, in all places, unalterable, immutable, and primordial.

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते |
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि || [2/25]

इस आत्मा को अदृश्य, अचिंतनीय और अपरिवर्तनशील कहा गया है। यह जानकर हमें शरीर के लिए शोक प्रकट नहीं करना चाहिए।

The soul is spoken of as invisible, inconceivable, and unchangeable. Knowing this, you should not grieve for the body.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च |
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि || [2/27]

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म भी अवश्यंभावी है। अतः तुम्हें अपरिहार्य के लिए शोक नहीं करना चाहिए।

Death is certain for one who has been born, and rebirth is inevitable for one who has died. Therefore, you should not lament over the inevitable.

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ |
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि || [2/38]

कर्तव्यों पालन हेतु युद्ध करो, युद्ध से मिलने वाले सुख-दुख, लाभ-हानि को समान समझो। यदि तुम इस प्रकार अपने दायित्वों का निर्वहन करोगे तब तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा।

Fight for the sake of duty, treating alike happiness and distress, loss and gain, victory and defeat. Fulfilling your responsibility in this way, you will never incur sin.

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ [2/47]**

तुम्हें अपने निश्चित कर्मों का पालन करने का अधिकार है लेकिन तुम अपने कर्मों का फल प्राप्त करने के अधिकारी नहीं हो, तुम स्वयं को अपने कर्मों के फलों का कारण मत मानो और न ही अकर्मा रहने में आसक्ति रखो ।

You have a right to perform your prescribed duties, but you are not entitled to the fruits of your actions. Never consider yourself to be the cause of the results of your activities, nor be attached to inaction.

**यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ [2/57]**

मनुष्य को सभी परिस्थितियों में समता और संतुलन बनाए रखना चाहिए । वह न तो अच्छे नतीजों पर खुश होता है और न ही बुरे परिणामों पर दुखी होता है । इस प्रकार की स्थिरता और समझ वाले व्यक्ति को बुद्धिमान माना जाता है ।

A person whose mind remains unaffected by attachments to worldly desires, and who neither rejoices nor grieves over good or bad outcomes, such equanimity of mind is firmly established in wisdom

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गत्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ [2/62]

इन्द्रियों के विषयों का चिंतन करते हुए मनुष्य उनमें आसक्त हो जाता है और आसक्ति कामना की ओर ले जाती है और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है ।

While contemplating on the objects of the senses, one develops attachment to them. Attachment leads to desire, and from desire arises anger.

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः |
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति || [2/63]

क्रोध निर्णय लेने की क्षमता को क्षीण करता है, जिसके कारण स्मृति भ्रम हो जाती है । जब स्मृति भ्रमित हो जाती है तब बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि के नष्ट होने से मनुष्य का पतन हो जाता है ।

Anger leads to clouding of judgement, which results in bewilderment of memory. When memory is bewildered, the intellect gets destroyed; and when the intellect is destroyed, one is ruined.

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी |
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः || [2/69]

वे जिनकी चेतना लौकिक है, वे सांसारिक सुखों को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य मानते हैं। वह लौकिक सुखों के अवसर को जीवन की सफलता अर्थात् दिन, और लौकिक तथा इन्द्रिय सुख से वंचित होने को अंधकार अर्थात् रात समझते हैं। दूसरी ओर जो दिव्य ज्ञान से युक्त होकर बुद्धिमान हो जाते हैं, वे मनुष्य इन्द्रियों के विषय भोगों को आत्मा के लिए हानिकारक मानते हैं। इसलिए वे इसे 'रात्री' के रूप में देखते हैं। वे आत्मा के उत्थान के लिए इन्द्रियों के विषय भोगों से विरक्त रहते हैं और इसलिए वे रात्रि को 'दिन' के रूप में देखते हैं। इन शब्दों का सांकेतिक रूप में प्रयोग कर श्रीकृष्ण यह व्यक्त करते हैं कि जो एक सिद्ध महापुरुष के लिए रात्रि है उसे सांसारिक लोग दिन मानते हैं और इसी प्रकार से जिसे सिद्ध महापुरुष दिन समझते हैं, वह उनके लिए रात्रि है।

Those who are in mundane consciousness look to material enjoyment as the real purpose of life. They consider the opportunity for worldly pleasures as the success of life, or “day,” and deprivation from sense pleasures as darkness, or “night.” On the other hand, those who have become wise with divine knowledge, see sense enjoyment as harmful for the soul, and hence view it as “night.” They consider refraining from the objects of the senses as elevating to the soul, and hence look on it as “day.” Using those connotations of the words, Shree Krishna states that what is night for the sage is day for the worldly-minded people, and vice versa.

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्रुते |
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति || [3/4]

न तो कोई केवल कर्म से विमुख रहकर कमर्फल से मुक्ति पा सकता है और न केवल शारीरिक संन्यास लेकर ज्ञान में सिद्धावस्था प्राप्त कर सकता है।

One cannot achieve freedom from karmic reactions by merely abstaining from work, nor can one attain perfection of knowledge by mere physical renunciation.

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ [3/5]

कोई भी मनुष्य एक क्षण के लिए अकर्मा नहीं रह सकता। वास्तव में सभी प्राणी प्रकृति द्वारा उत्पन्न तीन गुणों के अनुसार कर्म करने के लिए विवश होते हैं।

There is no one who can remain without action even for a moment. Indeed, all beings are compelled to act by their qualities born of material nature

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ [3/8]

इसलिए तुम्हें निर्धारित वैदिक कर्म करने चाहिए क्योंकि निष्क्रिय रहने से कर्म करना श्रेष्ठ है। कर्म का त्याग करने से तुम्हारे शरीर का भरण पोषण संभव नहीं होगा।

You should thus perform your prescribed Vedic duties, since action is superior to inaction. By ceasing activity, even your bodily maintenance will not be possible.

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ [3/21-22]

राजा जनक और अन्य महापुरुषों ने अपने नियत कर्मों का पालन करते हुए सिद्धि प्राप्त की थी इसलिए तुम्हें भी अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करते हुए समाज के कल्याण के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। महापुरुष जो भी कर्म करते हैं, सामान्य जन उनका पालन करते हैं, वे जो भी आदर्श स्थापित करते हैं, सारा संसार उनका अनुसरण करता है।

By performing their prescribed duties, King Janak and others attained perfection. You should also perform your duties to set an example for the good of the world. Whatever actions great persons perform, common people follow. Whatever standards they set, all the world pursues.

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ [3/30]

अपने समस्त कर्मों को मुझको अर्पित करके और परमात्मा के रूप में निरन्तर मेरा ध्यान करते हुए, कामना और स्वार्थ से रहित होकर अपने मानसिक दुखों को त्याग कर युद्ध करो।

Performing all works as an offering unto me, constantly meditate on me as the Supreme. Become free from desire and selfishness, and with your mental grief departed, fight!

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृति स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ [4/6]

हालांकि मैं जन्म और मृत्यु से परे हूँ और अविनाशी आत्मा हूँ, फिर भी मैं सभी जीवों का स्वामी हूँ । अपनी माया शक्ति के माध्यम से अपनी प्रकृति को नियंत्रित करते हुए, मैं इस संसार में अवतरित होता हूँ ।

Although I am unborn and my transcendental body never deteriorates, and although I am the Lord of all living entities, by my own divine power, I still appear in every millennium in my original transcendental form.

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत |
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् || [4/7]

जब जब धरती पर धर्म का पतन और अधर्म में वृद्धि होती है तब उस समय मैं पृथ्वी पर अवतार लेता हूँ ।

Whenever there is a decline in righteousness and an increase in unrighteousness, O Arjun, at that time I manifest myself on earth.

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ [4/8]

भक्तों का उद्धार और दुष्टों का विनाश करने और धर्म की मर्यादा पुनः स्थापित करने के लिए मैं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।

For the protection of the good, the destruction of the wicked, and for the establishment of righteousness, I appear in every age.

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ [4/22]

जो व्यक्ति बिना किसी इच्छा के मिली हुई चीजों से संतुष्ट रहता है, जो सुख-दुख से परे है और जिसमें जलन नहीं होती, जो सफलता और असफलता में समान रहता है, वह कर्म करने के बाद भी कर्मों से बंधता नहीं है।

One who is content with whatever comes by chance, who is free from dualities (like pleasure and pain), who is free from envy, and who remains balanced in success and failure, such a person, even while performing actions, is not bound by them.

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ [5/3]

वे कर्मयोगी जो न तो कोई कामना करते हैं और न ही किसी कर्म फल से घृणा करते हैं उन्हें नित्य संन्यासी माना जाना चाहिए। हे महाबाहु अर्जुन! सभी प्रकार

के द्वन्द्वों से मुक्त होने के कारण वे माया के बंधनों से सरलता से मुक्ति पा लेते हैं ।

The karm yogis, who neither desire nor hate any results, should be considered always renounced. Free from all dualities, they are easily liberated from the bonds of material energy.

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ [5/6]

भक्तियुक्त होकर, कर्म किए बिना पूर्णतः कर्मों का परित्याग करना कठिन है । हे महाबलशाली अर्जुन! किन्तु जो संत कर्मयोग में संलग्न रहते हैं, वे शीघ्र परम परमेश्वर को पा लेते हैं ।

Perfect renunciation (karm sanyās) is difficult to attain without performing work in devotion (karm yog), O mighty-armed Arjun, but the sage who is adept in karm yog quickly attains the Supreme.

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ [5/20]

जो व्यक्ति प्रिय (अच्छा) मिलने पर बहुत खुश नहीं होता और अप्रिय (बुरा) मिलने पर विचलित नहीं होता, वह स्थिर बुद्धि और अचंचल मन वाला होता है ।
ऐसा व्यक्ति ब्रह्म को जानने वाला और ब्रह्म में स्थित होता है ।

One should not be overly joyful when experiencing something pleasant, nor should one be disturbed when

encountering something unpleasant. A person with a steady and clear mind, who understands the true nature of reality, remains calm and rooted in the knowledge of the ultimate truth.

शक्रोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् |
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः || [5/23]

वे मनुष्य ही योगी हैं जो शरीर को त्यागने से पूर्व कामनाओं और क्रोध के वेग को रोकने में समर्थ होते हैं, केवल वही संसार में सुखी रहते हैं।

Those persons are yogis, who before giving up the body are able to check the forces of desire and anger; and they alone are happy.

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्ते तात्मैव शत्रुवत् ॥ [6/6]

जिन्होंने मन पर विजय पा ली है, मन उनका मित्र है किन्तु जो ऐसा करने में असफल होते हैं मन उनके शत्रु के समान कार्य करता है।

For those who have conquered the mind, it is their friend.
For those who have failed to do so, the mind works like an enemy.

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति |
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति || [6/30]

जो व्यक्ति मुझे हर जगह देखता है और हर चीज़ में मुझे देखता है, मैं उससे दूर नहीं होता और वह मुझसे दूर नहीं होता ।

Whoever sees me everywhere and sees everything in me, for that person I am never lost, nor is he ever lost to me.

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ [6/40]

परमेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा: हे पृथा पुत्र! कल्याणकारी कार्यों में लगे मनुष्य का न तो इस लोक में और न ही परलोक में विनाश होता है । मेरे प्रिय मित्र, भगवद्प्राप्ति के मार्ग पर चलने वाले को बुराई पराजित नहीं कर सकती ।

The Supreme Lord said: O Parth, one who engages on the spiritual path does not meet with destruction either in this world or the world to come. My dear friend, one who strives for God-realization is never overcome by evil.

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः |
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ||
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् |
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् || [6/41-42]

असफल योगी मृत्यु के पश्चात पुण्य आत्माओं के लोक में जाते हैं । अनेक वर्षों तक वहाँ निवास करने के पश्चात वे पृथ्वी पर कुलीन या धनवानों के कुल में पुनः

जन्म लेते हैं अथवा जब वे दीर्घकाल तक योग के अभ्यास से उदासीन हो चुके होते हैं तब उनका जन्म दिव्य ज्ञान से सम्पन्न परिवारों में होता है। संसार में ऐसा जन्म अत्यंत दुर्लभ है।

The unsuccessful yogis, upon death, go to the abodes of the virtuous. After dwelling there for many ages, they are again reborn in the earth plane, into a family of pious and prosperous people. Else, if they had developed dispassion due to long practice of yog, they are born into a family endowed with divine wisdom. Such a birth is very difficult to attain in this world.

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् |
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि || [7/23]

किन्तु ऐसे अल्पज्ञानी लोगों को प्राप्त होने वाले फल भी नश्वर होते हैं। जो लोग देवताओं की पूजा करते हैं, वे देव लोकों को जाते हैं जबकि मेरे भक्त मेरे लोक को प्राप्त करते हैं।

But the fruit gained by these people of little understanding is perishable. Those who worship the celestial gods go to the celestial abodes, while my devotees come to me.

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये |
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् || [7/29]

जो मेरी शरण ग्रहण करते हैं, वे बुढ़ापे और मृत्यु से छुटकारा पाने की चेष्टा करते हैं, वे ब्रह्म, अपनी आत्मा और समस्त कार्मिक गतिविधियों के क्षेत्र को जान जाते हैं।

Those who take shelter in Me, striving for liberation from old-age and death, come to know the Brahma, the individual self, and the entire field of karmic action.

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः || [8/5]

वे जो शरीर त्यागते समय मेरा स्मरण करते हैं, वे मेरे पास आँगे। इस संबंध में निश्चित रूप से कोई संदेह नहीं है।

Those who give up the body while remembering me at the moment of death will come to me. There is certainly no doubt about this.

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ [8/6]

हे कुन्ती पुत्र! मृत्यु के समय शरीर छोड़ते हुए मनुष्य जिसका स्मरण करता है वह उसी गति को प्राप्त होता है क्योंकि वह सदैव ऐसे चिन्तन में लीन रहता है।

Whatever state of being one remembers at the time of death,
O son of Kunti, one attains that state without fail.

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना |
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् || [8/8]

हे पार्थ! अभ्यास के साथ जब तुम अविचलित भाव से मन को मुझ पुरुषोत्तम भगवान के स्मरण में लीन करते हो तब तुम निश्चित रूप से मुझे पा लोगे ।

With practice, O Parth, when you constantly engage the mind in remembering Me, the Supreme Divine Personality, without deviating, you will certainly attain Me.

प्रयाणकाले मनसाचलेन
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ [8/10]

भगवान सर्वज्ञ, आदि पुरुष, नियन्ता, सूक्ष्म से सूक्ष्मतम, सबका पालक, अज्ञानता के सभी अंधकारों से परे और सूर्य से अधिक तेजवान हैं और अचिंतनीय दिव्य स्वरूप के स्वामी हैं । मृत्यु के समय जो मनुष्य योग के अभ्यास द्वारा स्थिर मन के साथ अपने प्राणों को भौहों के मध्य स्थित कर लेता है और दृढ़तापूर्वक पूर्ण भक्ति से दिव्य भगवान का स्मरण करता है वह निश्चित रूप से उन्हें पा लेता है ।

God is Omniscient, the most ancient One, the Controller, subtler than the subtlest, the Support of all, and the possessor of an inconceivable divine form; He is brighter than the sun, and beyond all darkness of ignorance. One who at the time of death, with unmoving mind attained by the practice of yog, fixes the prāṇ (life-air) between the eyebrows, and steadily remembers the Divine Lord with great devotion, certainly attains Him.

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ [8/13]

जो पुरुष ॐ अक्षर का उच्चारण करता हुआ और मेरा स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है ।।

One who departs from the body while remembering Me, the Supreme Personality, and chanting the syllable Om, will attain the supreme goal.

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ [8/15]

मुझे प्राप्त कर महान आत्माएँ फिर कभी इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेतीं जो अनित्य और दुखों से भरा है क्योंकि वे पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर चुकी होती हैं ।

Having attained Me, the great souls are no more subject to rebirth in this world, which is transient and full of misery, because they have attained the highest perfection.

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ [8/24]

जिस मार्गमें प्रकाशस्वरूप अग्निका अधिपति देवता, दिनका अधिपति देवता, शुक्लपक्षका अधिपति देवता, और छः महीनोंवाले उत्तरायणका अधिपति देवता है, शरीर छोड़कर उस मार्गसे गये हुए ब्रह्मवेत्ता पुरुष (पहले ब्रह्मलोकको प्राप्त होकर पीछे ब्रह्माजीके साथ) ब्रह्मको प्राप्त हो जाते हैं । (कोई व्यक्ति दिन के

प्रकाश में, शुक्ल पक्ष में और सूर्य के उत्तरायण में होने पर शरीर त्यागता है तो वह भगवान को प्राप्त होते हैं ।)

In the path where the deity of light, the deity of the day, the deity of the bright fortnight, and the deity of the six-month period of the northern course of the sun preside, those who leave their bodies on this path (after first attaining the realm of Brahma and then along with Brahma) attain Brahman. (If a person leaves their body during the daylight, the bright fortnight, and when the sun is in the northern course, they attain the Supreme Being.)

**धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥ [8/25]**

जिस मार्गमें धूमका अधिपति देवता, रात्रिका अधिपति देवता, कृष्णपक्षका अधिपति देवता और छः महीनोंवाले दक्षिणायनका अधिपति देवता है, शरीर छोड़कर उस मार्गसे गया हुआ योगी (सकाम मनुष्य) चन्द्रमाकी ज्योतिको प्राप्त होकर लौट आता है अर्थात् जन्म-मरणको प्राप्त होता है । (यदि कोई व्यक्ति अंधकार में, रात्रि में, कृष्ण पक्ष में तथा सूर्य के दक्षिणायन में होने पर शरीर त्यागता है तब उसे जन्म मरण के चक्र में फँसना पड़ता है)

In the path where the deity of smoke, the deity of night, the deity of the dark fortnight, and the deity of the six-month period of the southern course of the sun preside, the yogi (a person with desires) who leaves their body on this path attains the realm of the moon and returns, meaning they are subject to the cycle of birth and death. (If a person leaves their body during darkness, night, the dark fortnight, and

when the sun is in the southern course, they get caught in the cycle of birth and death.)

अश्रद्धधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप |
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि || [9/3]

वे लोग जो इस धर्म में श्रद्धा नहीं रखते वे मुझे प्राप्त नहीं कर सकते। वे जन्म-मृत्यु के मार्ग पर बार-बार इस संसार में लौटकर आते रहते हैं।

People who have no faith in this dharma are unable to attain me. They repeatedly come back to this world in the cycle of birth and death.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते |
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् || [9/22]

जो लोग सदैव मेरे बारे में सोचते हैं और मेरी अनन्य भक्ति में लीन रहते हैं एवं जिनका मन सदैव मुझमें तल्लीन रहता है, उनकी जो आवश्यकताएँ होती हैं उन्हें मैं पूरा करता हूँ और जो कुछ उनके स्वामित्व में होता है, उसकी रक्षा करता हूँ।

There are those who always think of me and engage in exclusive devotion to me, to them, whose minds are always absorbed in me, I provide what they lack and preserve what they already possess.

यान्ति देवव्रता देवान्पितृ न्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ [9/25]

जो देवताओं की पूजा करते हैं वे देवताओं के बीच जन्म लेते हैं । जो पित्तरो की पूजा करते हैं वे पित्तरो की योनियों में जन्म लेते हैं । भूत-प्रेतों की पूजा करने वाले उन्हीं के बीच जन्म लेते हैं और केवल मेरे भक्त मेरे धाम में प्रवेश करते हैं ।

Worshippers of the celestial gods take birth amongst the celestial gods, worshippers of the ancestors go to the ancestors, worshippers of ghosts take birth amongst such beings, and my devotees come to me alone.

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्रामि प्रयतात्मनः ॥ [9/26]

यदि कोई मुझे श्रद्धा भक्ति के साथ पत्र, पुष्प, फल या जल ही अर्पित करता है तब मैं प्रसन्नतापूर्वक अपने भक्त द्वारा प्रेमपूर्वक और शुद्ध मानसिक चेतना के साथ अर्पित वस्तु को स्वीकार करता हूँ ।

If one offers to me with devotion a leaf, a flower, a fruit, or even water, I delightfully partake of that item offered with love by my devotee in pure consciousness.

यत्करोषि यदश्रासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ [9/27]

हे कुन्ती पुत्र! तुम जो भी करते हो, जो भी खाते हो, पवित्र यज्ञाग्नि में जो आहुति डालते हो, जो भी दान देते हो, जो भी तपस्या करते हो, यह सब मुझे अर्पित करते हुए करो ।

Whatever you do, whatever you eat, whatever you offer in sacrifice, whatever you give away, and whatever austerities you perform, O Arjuna, do that as an offering to me.

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ [9/29]

मैं समभाव से सभी जीवों के साथ व्यवहार करता हूँ न तो मैं किसी के साथ द्वेष करता हूँ और न ही पक्षपात करता हूँ लेकिन जो भक्त मेरी प्रेममयी भक्ति करते हैं, मैं उनके हृदय में और वे मेरे हृदय में निवास करते हैं ।

I am equal towards all living beings; there is no one whom I dislike or favour. Those who worship me with devotion are in me, and I am in them

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ [9/30]

इस श्लोक में बताया गया है कि यद्यपि कोई व्यक्ति बहुत ही बुरे आचरण में रहता हो, लेकिन अगर वह भगवान को अनन्य भाव से भजता है, तो उसे साधु मानना चाहिए । इसलिए कि वह सही रूप से निश्चित और निर्णयशील है ।

Even if someone engages in severe misconduct, if they worship me with unwavering devotion, they should be considered truly virtuous, because their resolve is genuine.

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ [9/31]

वे शीघ्र धार्मात्मा बन जाते हैं और निरन्तर शांति पाते हैं । हे कुन्ती पुत्र! निडर हो कर यह घोषणा कर दो कि मेरे भक्त का कभी पतन नहीं होता ।

Quickly they become virtuous, and attain lasting peace. O son of Kunti, declare it boldly that no devotee of mine is ever lost.

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ [9/32]

वे सब जो मेरी शरण ग्रहण करते हैं भले ही वे जिस कुल, लिंग, जाति के हों और जो समाज से तिरस्कृत ही क्यों न हों, वे परम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं ।

All those who take refuge in me, whatever their birth, race, gender, or caste, even those whom society scorns, will attain the supreme destination.

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

मामेवैष्यसि युक्तवैवमात्मानं मत्परायणः ॥ [9/34]

सदैव मेरा चिन्तन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो। अपने मन और शरीर को मुझे समर्पित करने से तुम निश्चित रूप से मुझको प्राप्त करोगे।

Always think of me, be devoted to me, worship me, and bow down to me. In this way, you will come to me. Truly, you are dear to me and firmly established in me.

अद्वेषा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च |
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ||
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः |
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः || [12/13-14]

जो किसी प्राणी से द्वेष नहीं करते, सबके मित्र हैं, दयालु हैं, ऐसे भक्त मुझे अति प्रिय हैं क्योंकि वे स्वामित्व की भावना से अनासक्त और मिथ्या अहंकार से मुक्त रहते हैं, दुख और सुख में समभाव रहते हैं और सदैव क्षमावान होते हैं। वे सदा तृप्त रहते हैं, मेरी भक्ति में दृढ़ता से एकीकृत हो जाते हैं, वे आत्म संयमित होकर, दृढ़-संकल्प के साथ अपना मन और बुद्धि मुझे समर्पित करते हैं।

Those devotees are very dear to me who are free from malice toward all living beings, who are friendly, and compassionate. They are free from attachment to possessions and egotism, equipoised in happiness and distress, and ever-forgiving. They are ever-content, steadily united with me in devotion, self-controlled, of firm resolve, and dedicated to me in mind and intellect.

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ [12/15]

वे जो किसी को उद्विग्न करने का कारण नहीं होते और न ही किसी के द्वारा व्यथित होते हैं। जो सुख-दुख में समभाव रहते हैं, भय और चिन्ता से मुक्त रहते हैं मेरे ऐसे भक्त मुझे अति प्रिय हैं।

Those who are not a source of annoyance to anyone and who in turn are not agitated by anyone, who are equal in pleasure and pain, and free from fear and anxiety, such devotees of mine are very dear to me.

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥ [13/26]

कुछ अन्य लोग ऐसे भी होते हैं जो आध्यात्मिक मार्ग से अनभिज्ञ होते हैं लेकिन वे अन्य संत पुरुषों से सुन कर भगवान की आराधना करने लगते हैं। वे भी धीरे-धीरे जन्म और मृत्यु के सागर को पार कर लेते हैं।

There are still others who are unaware of these spiritual paths, but they hear from others and begin worshipping the Supreme Lord. By such devotion to hearing from saints, they too can gradually cross over the ocean of birth and death.

समं पश्यन्ति सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।

न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतम् ॥ [13/29]

वे जो भगवान को सर्वत्र और सभी जीवों में समान रूप से स्थित देखते हैं वे अपने मन से स्वयं को निम्नीकृत नहीं करते। इस प्रकार से वे अपने परम गंतव्य को प्राप्त करते हैं।

Those, who see God as the Supreme Soul equally present everywhere and in all living beings, do not degrade themselves by their mind. Thereby, they reach the supreme destination.

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च |
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् || [16/4]

पाखण्ड, दम्भ, अभिमान, क्रोध, निष्ठुरता और अज्ञानता असुरी प्रकृति वाले लोगों के गुण हैं।

The qualities of those who possess a demoniac nature are hypocrisy, arrogance, conceit, anger, harshness, and ignorance.

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः |
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते || [16/7]

वे जो असुरी गुणों से युक्त होते हैं वे यह समझ नहीं पाते कि उचित और अनुचित कर्म क्या हैं। इसलिए उनमें न तो पवित्रता, न ही सदाचरण और न ही सत्यता पायी जाती है।

Those possessing a demoniac nature do not comprehend which actions are proper and which are improper. Hence, they possess neither purity, nor good conduct, nor even truthfulness.

त्रिविधां नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ [16/21]

काम, क्रोध और लोभ जीवात्मा को आत्म विनाश के नरक की ओर ले जाने वाले तीन द्वार हैं इसलिए सबको इनका त्याग करना चाहिए ।

There are three gates leading to the hell of self-destruction for the soul—lust, anger, and greed. Therefore, one should abandon all three.

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।

प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥ [17/4]

सत्वगुण वाले स्वर्ग के देवताओं की पूजा करते हैं, रजोगुण वाले यक्षों तथा राक्षसों की पूजा करते हैं, तमोगुण वाले भूतों और प्रेतात्माओं की पूजा करते हैं ।

Those in the mode of goodness worship the celestial gods; those in the mode of passion worship the yakṣhas and rākṣhasas; those in the mode of ignorance worship ghosts and spirits.

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥ [17/8]

जीवन, शक्ति, रोग रहिती, सुख और प्रसन्नता को बढ़ाने वाले आहार जो स्वादिष्ट, चिकने, स्थिर और हृदय को प्रिय हैं, वे सात्त्विक आहार कहलाते हैं ।

Persons in the mode of goodness prefer foods that promote life span, and increase virtue, strength, health, happiness, and satisfaction. Such foods are juicy, succulent, nourishing, and naturally tasteful.

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ [17/9]

अत्याधिक कड़वे, खट्टे, नमकीन, गर्म, तीखे, शुष्क तथा मिर्च युक्त दाहकारक व्यंजन रजो गुणी व्यक्तियों को प्रिय लगते हैं ऐसे भोज्य पदार्थों के सेवन से पीड़ा, दुख तथा रोग उत्पन्न होते हैं ।

Foods that are too bitter, too sour, salty, very hot, pungent, dry, and full of chillies, are dear to persons in the mode of passion. Such foods produce pain, grief, and disease.

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ [17/10]

अधिक पके हुए, बासी, सड़े हुए, प्रदूषित तथा अशुद्ध प्रकार के भोजन तमोगुणी व्यक्तियों के प्रिय भोजन हैं ।

Foods that are overcooked, stale, putrid, polluted, and impure are dear to persons in the mode of ignorance.

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ [17/14]

परमपिता परमात्मा, ब्राह्मणों, आध्यात्मिक गुरु, बुद्धिमान तथा श्रेष्ठ सन्तजनों की पूजा यदि पवित्रता, सादगी, ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा के पालन के साथ की जाती है तब इसे शरीर की तपस्या कहा जाता है ।

When worship of the Supreme Lord, the Brahmins, the spiritual master, the wise, and the elders is done with the observance of cleanliness, simplicity, celibacy, and non-violence then this worship is declared as the austerity of the body.

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥ [17/15]

जो वाक्य (भाषण) उद्वेग उत्पन्न करने वाला नहीं है, जो प्रिय, हितकारक और सत्य है तथा वेदों का स्वाध्याय अभ्यास वाणी का तप कहलाता है ।।

Words that do not cause distress, are truthful, inoffensive, and beneficial, as well as regular recitation of the Vedic scriptures—these are declared as austerity of speech.

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः |
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते || [17/16]

विचारों की शुद्धता, विनम्रता, मौन, आत्म-नियन्त्रण तथा उद्देश्य की निर्मलता इन सबको मन के तप के रूप में घोषित किया गया है।

Serenity of thought, gentleness, silence, self-control, and purity of purpose—all these are declared as austerity/tranquillity of the mind.

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे |
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् || [17/20]

जो दान बिना प्रतिफल की कामना से यथोचित समय और स्थान में किसी सुपात्र को दिया जाता है वह सात्त्विक दान माना जाता है।

Charity given to a worthy person simply because it is right to give, without consideration of anything in return, at the proper time and in the proper place, is stated to be in the mode of goodness.

अदेशकाले यदानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ [17/22]

ऐसा दान जो अपवित्र स्थान तथा अनुचित समय पर कुपात्र व्यक्तियों को या बिना आदर भाव के अथवा अवमानना के साथ दिया जाता है, उसे तमोगुणी की प्रकृति का दान माना जाता है ।

And that charity, which is given at the wrong place and wrong time to unworthy persons, without showing respect, or with contempt, is held to be of the nature of ignorance.

यत्तदने विषमिव परिणामेऽमृतोपसम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ [18/37]

जो आरम्भ में विष के समान लगता है लेकिन अंत में जिसका स्वाद अमृत के समान हो जाता है उसे सात्त्विक सुख कहते हैं । यह शुद्ध बुद्धि से उत्पन्न होता है जो आत्म ज्ञान में स्थित होती है ।

That which seems like poison at first, but tastes like nectar in the end, is said to be happiness in the mode of goodness. It is generated by the pure intellect that is situated in self-knowledge.

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ [18/39]

जो आनंद मोह का होता है, जो अपने आप को बांधता है,

जो निद्रा, आलस्य और अनुवांछित क्रियाओं से उत्पन्न होता है,
वह सब तामसिक गुण कहलाता है।

That happiness which covers the nature of the self from
beginning to end, and which is derived from sleep,
indolence, and negligence, is said to be in the mode of
ignorance.

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ [18/48]

किसी को भी अपनी प्रकृति से उत्पन्न कर्तव्यों का परित्याग नहीं करना चाहिए
चाहे कोई उनमें दोष भी क्यों न देखता हो। हे कुन्ती पुत्र! वास्तव में सभी प्रकार
के उद्योग कुछ न कुछ बुराई से आवृत रहते हैं जैसे आग धुंए से ढकी रहती है।

One should not abandon duties born of one's nature, even if
one sees defects in them, O son of Kunti. Indeed, all
endeavours are veiled by some evil, as fire is by smoke.

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ [18/57]

अपने सभी कर्म मुझे समर्पित करो और मुझे ही अपना लक्ष्य मानो, बुद्धियोग का
आश्रय लेकर अपनी चेतना को सदैव मुझमें लीन रखो।

Dedicate your every activity to me, making me your supreme goal. Taking shelter of the yog of the intellect, keep your consciousness absorbed in me always.

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु |
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे || [18/65]

सदा मेरा चिंतन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी अराधना करो, मुझे प्रणाम करो, ऐसा करके तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे। मैं तुम्हें ऐसा वचन देता हूँ क्योंकि तुम मेरे अतिशय मित्र हो।

Always think of me, be devoted to me, worship Me, and offer obeisance to Me. Doing so, you will certainly come to me. This is my pledge to you, for you are very dear to me.

मनुस्मृति

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः ।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥ [2/9]

जो इंसान वेदों और स्मृतियों में बताए गए धर्म का पालन करता है, उसे इस दुनिया में कीर्ति मिलती है और मरने के बाद श्रेष्ठ सुख मिलता है।

A person who follows the Dharma as stated in the Vedas and Smritis gains fame in this world and supreme happiness after death.

पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति ।
अपूजितं च तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम् ॥ [2/58]

सम्मान के साथ किया गया भोजन बल और ऊर्जा देता है, लेकिन बिना सम्मान के भोजन दोनों को नष्ट कर देता है।

Food taken with respect gives strength and energy, but food taken without respect destroys both.

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ॥ [2/124]

जो व्यक्ति हमेशा बड़ों का अभिवादन और सेवा करता है, उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं।

A person who always greets and serves elders increases in age, knowledge, fame, and strength.

नारुन्तुदः स्यादात्तोऽपि न परद्रोहकर्मधीः ।
ययाऽस्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत् ॥ [2/164]

दुखी होने पर भी न दूसरों को कष्ट दे और न ही बुरी बातें कहे। जिससे लोग डर जाएं, ऐसी बातें न बोले।

Even in distress, do not harm others or speak harsh words.
Avoid saying things that scare others.

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥ [2/219]

मां, बहन, या बेटी के साथ अकेले न बैठे, क्योंकि इंद्रियां विद्वान को भी विचलित कर सकती हैं।

Do not sit alone with your mother, sister, or daughter, as the senses can distract even a wise person.

श्रद्धधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि ।

अन्त्यादपि परं धर्मं स्त्रीरन्नं टुष्कुलादपि ॥ [2/242]

आस्थावान व्यक्ति अच्छे ज्ञान को किसी से भी ग्रहण करें, उच्च धर्म को निम्न जाति से भी सीखे और उत्तम स्त्री को नीच कुल से भी ग्रहण करें।

A faithful person should acquire good knowledge from anyone, learn higher Dharma even from a low caste, and accept a good woman from a humble family.

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम् ।
अमित्रादपि सद्बृत्तम्ममेध्यादपि काञ्चनम् ॥ [2/243]

विष से अमृत, बालक से सुभाषित वाक्य, शत्रु से अच्छा आचरण, और अपवित्र स्थान से भी सोना ग्रहण करना चाहिए।

Nectar can be taken even from poison, wise words from a child, good conduct from an enemy, and gold from an unclean place.

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥ [3/56]

जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं; जहाँ उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं।

Where women are respected, there the gods are pleased; where they are not respected, all actions become fruitless.

शोचन्ति जामयो यत्र विनशत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ॥ [3/57]

जहाँ महिलाएँ दुःखी रहती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है; जहाँ वे प्रसन्न रहती हैं, वह कुल हमेशा फलता-फूलता है ।

Where women are in sorrow, that family perishes quickly;
where they are happy, that family always prospers.

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ [3/62]

जिस कुल में महिलाएँ प्रसन्न होती हैं, वह कुल भी प्रसन्न रहता है; जहाँ वे प्रसन्न नहीं होती, वहाँ कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

In a family where women are happy, that family is also
happy; where they are not happy, nothing seems good.

सन्तोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत् ।
सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः ॥ [4/12]

संतोष को सर्वोपरि मानकर सुख की चाह रखने वाला व्यक्ति संयमी बनता है ।
संतोष ही सुख का मूल है और असंतोष दुःख का मूल है ।

By considering contentment as supreme, a person seeking happiness becomes self-restrained. Contentment is the root of happiness, while discontent is the root of sorrow.

यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पौत्रेषु नप्तृषु ।
न त्वेव न कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः ॥ [4/173]

अगर किसी ने स्वयं, अपने पुत्रों, या पौत्रों में अधर्म नहीं किया है, तो भी अधर्म करने वाले का अधर्म कभी निष्फल नहीं होता ।

If one has not committed unrighteous acts themselves, nor have their sons or grandsons, still the unrighteous acts of the doer do not go unfruitful.

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति ।
ततः सपत्न्याञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥ [4/174]

अधर्म से व्यक्ति पहले बढ़ता है और फिर सुखद चीजें देखता है, लेकिन अंततः वह अपने शत्रुओं को जीतता है और फिर पूरी तरह नष्ट हो जाता है ।

By unrighteousness, a person first prospers and then sees pleasant things, but ultimately, he conquers his enemies and then is completely destroyed.

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम् ।

योऽर्थेशुचिर्हि स शुचिर्न मृदारिशुचिः शुचिः ॥ [5/109]

सभी शौचों में अर्थशौच सबसे श्रेष्ठ माना गया है; जो व्यक्ति धन के मामलों में शुद्ध है, वही वास्तव में शुद्ध है, न कि मिट्टी और पानी से शुद्ध।

Of all purities, financial purity is considered the highest; a person who is pure in money matters is truly pure, not one who is clean with soil and water.

अधर्मप्रभवं चैव दुःखयोगं शरीरिणाम् ।
धर्मार्थप्रभवं चैव सुखसंयोगमक्षयम् ॥ [6/63]

अधर्म से दुःख उत्पन्न होता है और धर्म से अनंत सुख की प्राप्ति होती है।

Adharma leads to sorrow, while Dharma brings about eternal happiness.

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ [6/91]

धैर्य, क्षमा, आत्मसंयम, चोरी न करना, शुद्धता, इंद्रिय नियंत्रण, बुद्धिमत्ता, विद्या, सत्य और अक्रोध ये दस धर्म के लक्षण हैं।

Patience, forgiveness, self-control, non-stealing, purity, control of senses, intelligence, knowledge, truth, and absence of anger are the ten characteristics of Dharma.

देवदानवगन्धर्वा रक्षांसि पन्नगोरगाः ।
तेऽपि भोगाय कल्पन्ते दण्डेनैव निपीडिता ॥ [7/23]

देवता, दानव, गंधर्व, राक्षस और नाग भी अनुशासन में रखे जाने पर ही सुख भोगते हैं ।

Even gods, demons, gandharvas, rakshasas, and serpents
enjoy pleasures when kept under discipline.

दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन् सर्वसेतवः ।
सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात् ॥ [7/24]

सभी वर्ण दूषित हो जाएंगे और सभी सीमाएं टूट जाएंगी; अनुशासनहीनता से सभी लोकों का प्रकोप बढ़ जाएगा ।

All castes will become corrupt and all boundaries will break;
lack of discipline will increase the anger of all worlds.

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नोधर्मोहतोऽवधीत् ॥ [8/15]

धर्म का नाश करने वाला स्वयं नष्ट हो जाता है; धर्म की रक्षा करने वाला स्वयं की रक्षा करता है । इसलिए धर्म का नाश न करें ताकि अधर्म हमें नष्ट न कर सके ।

The one who destroys Dharma is himself destroyed; the one who protects Dharma is protected by it. Therefore, do not destroy Dharma so that Adharma does not destroy you.

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्वि गच्छति ॥ [8/17]

धर्म ही एकमात्र ऐसा सच्चा मित्र है जो मृत्यु के बाद भी साथ जाता है; बाकी सब कुछ शरीर के साथ ही नष्ट हो जाता है ।

Dharma is the only true friend that accompanies you even after death; everything else perishes with the body.

मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः ।
तास्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तर पूरुषः ॥ [8/85]

पाप करने वाले सोचते हैं कि कोई नहीं देख रहा, लेकिन देवता और स्वयं की अंतरात्मा सब देखती है ।

Sinners think that no one sees their deeds, but the gods and their own inner self witness everything.

एकोऽहमस्मीत्यात्मानं यत्त्वं कल्याण मन्यसे ।
नित्यं स्थितस्ते हृद्येष पुण्यपापेक्षिता मुनिः ॥ [8/91]

"मैं अकेला हूँ" ऐसा सोचने वाले को याद रखना चाहिए कि उनकी अंतरात्मा, जो पुण्य और पाप दोनों को देखती है, हमेशा उनके हृदय में रहती है।

Those who think "I am alone" should remember that their inner self, which observes both virtue and sin, always resides in their heart.

उपहारक्रिया केलिः स्पर्शा भूषणवाससाम् ।
सहखट्वासनं चैव सर्वं संग्रहणं स्मृतम् ॥ [8/356]

उपहार देना, खेलना, स्पर्श करना, आभूषण और वस्त्र पहनना, एक ही बिस्तर पर सोना ये सब प्रेम के संकेत माने गए हैं।

Giving gifts, playing, touching, wearing ornaments and clothes, and sleeping on the same bed are all considered signs of affection.

पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते ।
अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रह्मस्याप्रोति विष्टपम् ॥ [9/136]

पुत्र से मनुष्य लोक जीतता है, पौत्र से अनंत सुख प्राप्त करता है और पौत्र के पुत्र से स्वर्ग को प्राप्त करता है।

A man conquers worlds through his son, attains infinite happiness through his grandson, and reaches heaven through his grandson's son.

पुत्राम्ना नरकस्तस्मात्त्रायते पितरं सुतः ।
तस्मात्पुत्र इतिप्रोक्तः स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ [9/137]

पुत्र का नाम "पुत्र" इसलिए रखा गया क्योंकि वह अपने पिता को "पुनाम"
नामक नरक से बचाता है ।

The son is called "Putra" because he saves his father from
the hell called "Punnama".

सप्तवित्तागमा धर्म्याः दायो लाभः क्रयो जपः ।
प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ [10/112]

सात प्रकार के धन प्राप्ति के धर्मसंगत तरीके हैं: दान, लाभ, क्रय, जप, प्रयोग,
कर्मयोग और सत्प्रतिग्रह ।

There are seven righteous ways to acquire wealth: donation,
profit, purchase, recitation, practice, karma yoga, and good
reception.

क्षत्रियो बाहुवीर्येण तरेदापदात्मनः ।
धनेन वैश्यशूद्रौ तु जपहोमैर्द्विजोत्तमः ॥ [11/34]

क्षत्रिय बाहुबल से, वैश्य और शूद्र धन से, और श्रेष्ठ ब्राह्मण जप और हवन से
संकट को पार करते हैं ।

A Kshatriya overcomes adversity through physical strength, a Vaishya and Shudra through wealth, and a distinguished Brahmin through recitation and sacrifices.

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते ।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेत् ॥ [11/93]

सुरा (शराब) अन्न का मल है और पाप का भी मल माना गया है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इसे न पियें।

Sura (alcohol) is considered the impurity of food and a sin. Therefore, Brahmins, Kshatriyas, and Vaishyas should not consume it.

ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं तपःक्षत्रस्य रक्षणम् ।
वैश्यस्य तपो वार्ता तपः शूद्रस्य सेवनम् ॥ [11/235]

ब्राह्मण का तप ज्ञान है, क्षत्रिय का तप रक्षा है, वैश्य का तप व्यापार है और शूद्र का तप सेवा है।

The austerity of a Brahmin is knowledge, of a Kshatriya is protection, of a Vaishya is trade, and of a Shudra is service.

शुभाशुभफलं कर्म मनोवाग्देहसम्भवम् ।
कर्मजा गतयो नृणामुत्तमाधममध्यमा ॥ [12/3]

शुभ और अशुभ फल कर्म से, मन, वाणी और शरीर से उत्पन्न होते हैं। कर्म के कारण मनुष्यों की गति उत्तम, मध्यम और अधम होती है।

The fruits of good and bad deeds arise from actions, mind, speech, and body. Due to karma, human destinies become superior, mediocre, and inferior.

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसाऽनिष्टचिन्तनम् ।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम् ॥ [12/5]

पराई संपत्ति की इच्छा, मन से बुरा सोचना, और झूठ पर विश्वास करना ये तीन प्रकार के मानसिक कर्म हैं।

Desiring others' property, thinking evil with the mind, and believing in falsehood are the three types of mental actions.

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः ।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ [12/6]

कठोरता, झूठ, चुगली, और असंबद्ध बातें बोलना ये चार प्रकार के वाणी के दोष हैं।

Harshness, falsehood, slander, and incoherent speech are the four types of defects in speech.

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ।
परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥ [12/7]

बिना दिए हुए का ग्रहण करना, हिंसा करना, और पराई स्त्री के साथ संबंध बनाना ये तीन प्रकार के शारीरिक दोष हैं ।

Taking what is not given, committing violence, and associating with another's wife are the three types of physical defects.

यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्च लज्जति ।
तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥ [12/36]

जो कर्म करने के बाद, करते समय, और करने का विचार करने पर शर्म आती है, उसे तामसिक गुण कहा जाता है ।

The action that brings shame after doing, while doing, and even thinking of doing is known as a Tamasic quality.

येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम् ।
न च शोचत्यसम्पत्तौ तद्विज्ञेयं तु राजसम् ॥ [12/37]

जिस कर्म से व्यक्ति संसार में बहुत प्रसिद्धि चाहता है और विफलता पर दुखी नहीं होता, वह राजसिक गुण है ।

The action through which a person seeks great fame in the world and does not lament in failure is known as a Rajasic quality.

यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्नलज्जति चाचरन् ।
येन तुष्यति चात्माऽस्य तत्सत्त्वगुणलक्षणम् ॥ [12/38]

जो कर्म सभी लोग जानना चाहते हैं, जिसे करते समय शर्म नहीं आती और जिससे आत्मा संतुष्ट होती है, वह सत्त्वगुण है।

The action that everyone wishes to know, does not bring shame while doing, and satisfies the soul is known as a Sattvic quality.

आरती

जिस घर मे हो आरती, चरण कमल चित लाये,
तहाँ हरी वासा करें ज्योति अनंत जगाय ।

जहां भक्त कीर्तन करें बहे प्रेम दरियाव,
वहाँ हरि श्रवण करें सत्य लोक से आय ।

सब कुछ दीना आपने भेंट करूँ क्या नाथ,
नमश्कार की भेंट लो जोड़ूँ में दोनों हाथ ।

प्रातः कालीन वंदना

प्रत्येक मनुष्य को प्रातः काल नींद में से जागकर बिस्तर छोड़ने से पहले परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमारा दिन अच्छा रखें एवं हमारे सभी कार्य सफल हों। धरती माता को नमस्ते करें। माता पिता गुरु एवं सभी बंधु बांधवों को नमस्ते करें।

प्रातः वंदना के श्लोक।

**कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर करदर्शनम् ॥**

अपनी दोनों हथेलियों को आँखों के सामने रख कर ध्यान से देखें। हाथ के आगे वाले भाग में लक्ष्मी जी, बीच में सरस्वती जी और पिछले भाग में विष्णु भगवान का वास है। अतः प्रातःकाल हाथ के दर्शन करें।

**ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥**

हे ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शंकर जी, सूर्य देव, चंद्र देव, मंगल गृह, बुध गृह, गुरु गृह, शुक्र गृह, शनि गृह, राहु एवं केतु आप सभी नाव ग्रह मेरी सुबह को मंगलकारी करें।

**समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ॥**

हाथ जोड़ कर धरती माता से विनय करें कि हे धरती माता समुद्र आपके वस्तु और पर्वत आपके वक्ष स्थल हैं। आप भगवान श्री विष्णु की पत्नी हैं, आपको नमस्ते। मैं अपने पैरों से आपको स्पर्श कर रहा हूँ इसके लिए मुझे क्षमा करें।

क्षमा याचना

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां श्रैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरं ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्मत्तु ॥

हे प्रभु । न मैं आपको बुलाना जानता हूँ और न विदा करना । पूजा करना भी नहीं जानता । कृपा करके मुझे क्षमा करें । मुझे न मंत्र याद है और न ही क्रिया । मैं भक्ति करना भी नहीं जानता । यथा संभव पूजा कर रहा हूँ, कृपया मेरी भूलों को क्षमा कर इस पूजा को पूर्णता प्रदान करें ।

O Lord, I neither know how to invite you nor how to bid you farewell. I don't even know how to perform the rituals properly. Please forgive me. I do not remember the mantras nor do I know the rituals. I don't even know how to show devotion. I am performing this worship to the best of my ability; please forgive my mistakes and grant completeness to this worship.

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः । उस परमात्मा का ध्यान करें । वह परमात्मा हमें सद्बुद्धि दे ।
ताकि हमारा मन पवित्र विचारों से प्रेरित हो ।

Om Bhur Bhuvah Swah. We meditate on that most adored Supreme Lord, the creator. Whose divine light illuminates all realms (physical, mental, and spiritual). May this divine light inspire and enlighten our intellect.

महामृत्युंज्य मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

इस मंत्र का हिंदी अर्थ है कि हम भगवान शिव की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो सुगंधित हैं और हमारा पोषण करते हैं। जैसे फल शाखा के बंधन से मुक्त हो जाता है वैसे ही हम भी मृत्यु और नश्वरता से मुक्त हो जाएं।

We meditate on the three-eyed one (Lord Shiva), Who permeates and nourishes all like a fragrance. May he liberate us from the bondage of worldly attachments and death, and bestow upon us the nectar of immortality.

गणेश जी

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्
उमासुतं शोक विनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी । माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा । लड्डुअन का भोग लगे संत करें सेवा ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया । बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी । कामना को पूर्ण करो जाऊं बलिहारी ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

लक्ष्मी जी

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता ॥ ओम...
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ओम...
दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ओम...
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ ओम...
जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ओम...
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता ।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ओम...
शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ओम...
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥
ओम जय लक्ष्मी माता ॥

बाँके बिहारी जी

श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं । कुंजबिहारी तेरी आरती गाऊ ।
श्री श्यामसुन्दर तेरी आरती गाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

मोर मुकुट प्रभु शीश पे सोहे । प्यारी बंशी मेरो मन मोहे ।
देखि छवि बलिहारी जाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

चरणों से निकली गंगा प्यारी । जिसने सारी दुनिया तारी ।
मैं उन चरणों के दर्शन पाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

सैंग में सोहे बृषभान दुलारी । जो वृंदावन की अधिकारी ।
बास वृंदावन सदा में पाऊँ । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

दास अनाथ के नाथ आप हो । दुख सुख जीवन प्यारे साथ हो ।
हरि चरणों में शीश नवाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

श्री हरि दास के प्यारे तुम हो । मेरे मोहन जीवन धन हो ।
देख युगल छवि बलि-बलि जाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

आरती गाऊं प्यारे तुमको रिझाऊं । हे गिरिधर तेरी आरती गाऊं ।
श्री श्यामसुन्दर तेरी आरती गाऊं । श्री बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊं ॥

अम्बे जी

ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय अम्बे...

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे...

शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे...

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे...

ब्रह्माणी रुद्राणीतुम कमला रानी ।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे...

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु ॥ जय अम्बे...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे...

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवान्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय अम्बे...

कन्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ॥ जय अम्बे...

सन्तोषी माता

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।
अपने सेवक जन को, सुख सम्पत्ति दाता ॥ जय सन्तोषी...
सुन्दर चीर सुनहरीमाँ धारण कीन्हों ।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार कीन्हों ॥ जय सन्तोषी...
गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय सन्तोषी...
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरें प्यारे ।
धूप दीप मधुमेवा, भोग धरें न्यारे ॥ जय सन्तोषी...
गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामे संतोष कियो ।
सन्तोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥ जय सन्तोषी...
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥ जय सन्तोषी...
मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥ जय सन्तोषी...
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै ॥ जय सन्तोषी...
दुखी दरिद्री, रोग, संकट मुक्त किये ।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये ॥ जय सन्तोषी...
ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो ॥ जय सन्तोषी...
शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे ॥ जय सन्तोषी...
सन्तोषी माता की आरती, जो कोई जन गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पत्ति, जी भरकर पावे ॥ जय सन्तोषी...

जगदंबा माता

ॐ जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी ।
दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा नमोऽस्तुते ॥

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती । ओ मैया...

तेरे भक्त जनो पर माताभीर पड़ी है भारी ।
दानव दल पर टूट पड़ो माँकरके सिंह सवारी ॥
सौ-सौ सिहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती । ओ मैया...

माँ-बेटे का है इस जग मेंबड़ा ही निर्मल नाता ।
पूत-कपूत सुने हैपर ना माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती । ओ मैया...

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।
हम तो मांगें तेरे चरणों मेंछोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती । ओ मैया...

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली ।
वरद हस्त सर पर रख दो माँसंकट हरने वाली ॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती । ओ मैया...

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,

तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
ओ मैया...

तेरे भक्त जनो पर माताभीर पड़ी है भारी ।
दानव दल पर टूट पड़ो माँकरके सिंह सवारी ॥
सौ-सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती । ओ मैया...

माँ-बेटे का है इस जग मेंबड़ा ही निर्मल नाता ।
पूत-कपूत सुने हैपर ना माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती । ओ मैया...

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।
हम तो मांगें तेरे चरणों मेंछोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती । ओ मैया...

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली ।
वरद हस्त सर पर रख दो माँसंकट हरने वाली ॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती । ओ मैया...

माता रिद्धि दे सिद्धि दे अष्ट नों, निधि दे जगत में वृद्धि, दे भाग्यवाणी ।
हृदय में ज्ञान दे, चित् में ध्यान दे, महावरदान दे हे शंभुरानी ।
दूर कर दुख को, दूर कर दुष्ट को, कलह को चूर कर श्रीभवानी ।
जग में जीत दे, गुरु से रीत दे, सजन से प्रीत दे हे राजरानी ।
हे माता भुवनेश्वरी, करो सेवक की सदा भाग्यवाणी ।
। बोलो अम्बे मैया की जय ।

शिव जी

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा बसन्तं हृदयारबिन्दे भवं भवानीसहितं नमामि । ।

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
एकानन चतुराननपञ्चानन राजे ।
हंसासन गरूडासनवृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
दो भुज चार चतुर्भुजदसभुज अति सोहे ।
त्रिगुण रूप निरखतेत्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
अक्षमाला वनमालामुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारीकर माला धारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
श्वेताम्बर पीताम्बरबाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुणादिकभूतादिक संगे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
कर के मध्य कमण्डलुचक्र त्रिशूलधारी ।
सुखकारी दुखहारीजगपालन कारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिवजानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर मध्येये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
लक्ष्मी व सावित्रीपार्वती संगी ।
पार्वती अर्द्धांगी,शिवलहरी गंगा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
पर्वत सोहैं पार्वती,शंकर कैलासा ।
भाग धतूर का भोजन,भस्मी में वासा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
जटा में गंगा बहत है,गल मुण्डन माला ।
शेष नाग लिपटावत,ओढ़त मृगछाला ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
काशी में विराजे विश्वनाथ,नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठ दर्शन पावत,महिमा अति भारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥
त्रिगुणस्वामी जी की आरतीजो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी,मनवान्छित फल पावे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ॥

कुंजबिहारी जी

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।

देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाना, नंद के नंद, मोहन ब्रिज नंद ।
राधिका रमण बिहारी की । श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ x2

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ x2

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी शिव सीस, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरन छवि श्रीबनवारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ x2

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बाज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद,
कटत भव फंद, टेर सुन दीन दुखारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की ॥ श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ x2
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥ x3

ओम जय जगदीश हरे

मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम् गरुड ध्वज ।
मंगलम् पुंडरीकाक्ष मंगलाय तनो हरी । ।

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ जय...
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ जय...
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ जय...
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ जय...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ जय...
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय...
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ जय...
श्री जगदीशजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥
ॐ जय जगदीश हरे ।

राम चंद्र जी

नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगम सीतासमारोपित वामभागम् ।
पाणौ महासायकचारूचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।
नव कंज लोचन, कंज मुख करकंज पद कंजारुणम् ॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रूचि-शुचिनौमि जनक सुतावरम् ॥

भजु दीनबंधु दिनेशदानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशलचन्द्र दशरथ नन्द्रम् ॥

सिर मुकुट कुंडल तिलकचारू उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप-धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम् ॥

मन जाहि राचेऊ मिलहिसो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजानशील सनेह जानत रावरो ॥

एहि भाँति गौरी असीससुन सिय हित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनिमुदित मन मन्दिर चली ॥

रामायण जी

आरती श्री रामायण जी की ।कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

गावत ब्राह्मादिक मुनि नारद ।बालमीक विज्ञान विशारद ।
शुक सनकादि शेष अरु शारद ।बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

गावत वेद पुरान अष्टदस ।छाओं शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ।
मुनि-मन धन सन्तन को सरबस ।सार अंश सम्मत सबही की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

गावत सन्तत शम्भू भवानी ।अरु घट सम्भव मुनि विज्ञानी ।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी ।कागभुषुण्डि गरुड़ के ही की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

कलिमल हरनि विषय रस फीकी ।सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की ।तात मात सब विधि तुलसी की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

हनुमान जी

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम् दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम् रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरिवर कांपे ।रोग दोष जाके निकट न झांके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाए ।लंका जारि सिया सुधि लाए ॥

लंका सो कोट समुद्र-सी खाई ।जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे ।सियारामजी के काज सवारे ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे ।आनि संजीवन प्राण उबारे ॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे ।अहिरावण की भुजा उखारे ॥

बाएं भुजा असुरदल मारे ।दाहिने भुजा संतजन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारें ।जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।आरती करत अंजना माई ॥
जो हनुमानजी की आरती गावे ।बसि बैकुण्ठ परम पद पावे ॥

हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि ।
बरनउं रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुवेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनन्दन । तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । अस कहि श्री पति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिक्पाल जहां ते । कवि कोबिद कहि सके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांक तें कांपै ॥
भूत पिशाच निकट नहीं आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फ़ल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अन्तकाल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चिन्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥
जो शत बार पाठ कर कोई । छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

**पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥**

हनुमान अष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियोतब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग कोयह संकट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनि करी बिनतीतब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥1 ॥

बालि की त्रास कपीस बसैगिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौकि महा मुनि साप दियोतब चाहिय कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभुसो तुम दास के सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥2 ॥

अंगद के सँग लेन गये सियखोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जुबिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबैतब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥3 ॥

रावन त्रास दर्ई सिय कोसब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभुजाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय असोक सों आगि सुदै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥4 ॥

बान लगयो उर लछिमन केतब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबैगिरि द्रोण सु बीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दर्ईतब लछिमन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥5 ॥

रावन जुद्ध अजान कियो तबनाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दलमोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगोस तबै हनुमान जुबंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥6 ॥

बंधु समेत जबै अहिरावनलै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सोंबलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब हीअहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥7 ॥

काज कियो बड़ देवन के तुमबीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब कोजो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभुजो कुछ संकट होय हमारो ।
को नहिं जानत है जग मेंकपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥8 ॥

लाल देह लाली लसे, अरू धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय कपि सूर ॥

बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा । सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा । अति आतुर यम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुर पुर महं भई ॥

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी । कृपा करहुं उर अन्तर्यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होइ दुख करहुं निपाता ॥
जय गिरिधर जय जय सुख सागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले । बैरिहिं मारु बज्र की कीले ॥

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा । ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होउ हरि शपथ पायके । रामदूत धरु मारु धाय के ॥

जय जय जय हनुमन्त अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुमरे बल हम डरपत नाहीं ॥

पाय परौं कर जोरि मनावों । यह अवसर अब केहि गोहरावों ॥

जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन धीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बैताल काल मारीमर ॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

जनकसुता हरि दास कहावो । ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ॥
चरण शरण करि जोरि मनावों । यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥
उठु उठु चलु तोहिं राम दुहाई । पांय परौं कर जोरि मनाई ॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चञ्चल । ॐ सं सं सहम पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥
यहि बजरंग बाण जेहि मारो । ताहि कहो फिर कौन उबारो ॥

पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै । तेहि ते भूत प्रेत सब कांपे ॥
धूप देय अरु जपै हमेशा । ताके तन नहिं रहे कलेशा ॥

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

भजन

गणेश जी

गाइये गणपति जगवंदन

गाइये गणपति जगवंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ॥

सिद्धि सदन गजवदन विनायक ।
कृपा सिंधु सुंदर सब लायक ॥

गाइये गणपति जगवंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ॥

मोदक प्रिय मुद मंगल दाता ।
विद्या बारिधि बुद्धि विधाता ॥

गाइये गणपति जगवंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ॥

मांगत तुलसीदास कर जोरे ।
बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

गाइये गणपति जगवंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ॥

घर में पधारो गजाननजी

घर में पधारो गजाननजी, मेरे घर में पधारो
रिद्धि सिद्धि लेके आओ गणराजा, मेरे घर में पधारो ।

राम जी आना, लक्ष्मण जी आना
संग में लाना सीता मैया, मेरे घर में पधारो ॥

ब्रम्हा जी आना, विष्णु जी आना
भोले शशंकर जी को ले आना, मेरे घर में पधारो ॥

लक्ष्मी जी आना, गौरी जी आना
सरस्वती मैया को ले आना, मेरे घर में पधारो ॥

विघन को हारना, मंगल करना,
कारज शुभ कर जाना, मेरे घर में पधारो ॥

घर में पधारो गजाननजी, मेरे घर में पधारो
रिद्धि सिद्धि लेके आओ गणराजा, मेरे घर में पधारो ।

गोरा ढूँड रही किसी ने गजानन देखा

गोरा ढूँड रही किसी ने गजानन देखा

गोरा तेरा लाल हमने ब्रह्मपुरी में देखा
वेद सुनाते हुए गोरा तेरा लाल देखा

गोरा तेरा लाल हमने वैकुण्ठ में देखा
शंख बजाते हुए गोरा तेरा लाल देखा
गोरा ढूँड रही किसी ने गजानन देखा

गोरा तेरा लाल केलाश पर्वत पे देखा
डमरू बजाते हुए गोरा तेरा लाल देखा
गोरा ढूँड रही किसी ने गजानन देखा

गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ

गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ,
तुमको मनाऊ देवा तुमको मनाऊ,
गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ ।।

सोने की थाली में भोजन बनाया,
गजानंद पहले मैं तुमको खिलाऊ,
गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ ।।

सोने के गड़वा में गंगाजल पानी,
गजानंद पहले मैं तुमको पिलाऊ,
गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ ।।

लौंग और इलायची का बीड़ा लगाया,
गजानंद पहले मैं तुमको सजाऊ,
गजानंद पहले मैं तुमको मनाऊ ।।

श्री रामचंद्र जी

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला, कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी, अद्भुत रूप बिचारी ॥

लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा, निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला, सोभासिंधु खरारी ॥

कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि बिधि करूं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद पुरान भनंता ॥

करुना सुख सागर, सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयउ प्रगट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला , अति प्रियशीला , यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा ॥

बिप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार ॥

मेरी झोपड़ी के भाग

मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे,
राम आएँगे आएँगे, राम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

राम आएँगे तो, आंगना सजाऊँगी,
दिप जलाके, दिवाली मनाऊँगी,
मेरे जन्मो के सारे, पाप मिट जाएंगे, राम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

राम झूलेंगे तो, पालना झुलाऊँगी,
मीठे मीठे मैं, भजन सुनाऊँगी,
मेरी जिंदगी के, सारे दुःख मिट जाएँगे, राम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

मैं तो रूचि रूचि, भोग लगाऊँगी,
माखन मिश्री मैं, राम को खिलाऊँगी,
प्यारी प्यारी राधे, प्यारे श्याम संग आएँगे, श्याम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

मेरा जनम सफल, हो जाएगा,
तन झूमेगा और, मन गीत गाएगा,
राम सुन्दर मेरी, किस्मत चमकाएंगे, राम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे,
राम आएँगे आएँगे, राम आएँगे,
मेरी झोपड़ी के भाग, आज खुल जाएंगे, राम आएँगे ॥

नगरी हो अयोध्या सी

नगरी हो अयोध्या सी, रघुकुल सा घराना हो ।
और चरण हो राघव के, जहाँ मेरा ठिकाना हो ॥

हो त्याग भारत जैसा, सीता सी नारी हो ।
और लवकुश के जैसी संतान हमारी हो ॥ नगरी हो...

श्रद्धा हो श्रवण जैसी, शबरी सी भक्ति हो ।
और हनुमत के जैसी निष्ठा और शक्ति हो ॥ नगरी हो...

मेरी जीवन नैया हो, प्रभु राम खेवैया हो ।
और राम कृपा की सदा मेरे सर छय्या हो ॥ नगरी हो...

सरयू का किनारा हो, निर्मल जल धारा हो ।
और दरश मुझे भगवन हर घडी तुम्हारा हो ॥ नगरी हो...

कौशल्या सी माई हो, लक्ष्मण सा भाई ।
और स्वामी तुम्हारे जैसा, मेरा रघुराई हो ॥ नगरी हो...

श्रद्धा हो श्रवण जैसी, शबरी सी भक्ति हो ।
हनुमान के जैसे निष्ठा, और शक्ती हो ॥ नगरी हो...

जन्मे है राम रघुरैया

जन्मे है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
बाजे बधैया बाजे बधैया, जन्में है राम रघुरैया,
अवधपुर में बाजे बधैया ॥

राजा दशरथ गैया लुटावे, राजा दशरथ गैया लुटावे,
कंगना लुटावे तीनो मैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
जन्में है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया ॥

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न,
गोदी में खेले चारो भैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
जन्में है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया ॥

सारी अयोध्या में धूम मची है, सारी अयोध्या में धूम मची है,
भारी है भीड़ अंगनैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
जन्में है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया ॥

‘माधव’ कहे शिव डमरू बजावे, ‘माधव’ कहे शिव डमरू बजावे,
आशीष देवे गौरी मैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
जन्में है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया ॥

जन्मे है राम रघुरैया, अवधपुर में बाजे बधैया,
बाजे बधैया बाजे बधैया, जन्में है राम रघुरैया,
अवधपुर में बाजे बधैया ॥

मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे

सीता राम जी की प्यारे राजधानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे...

धन्य कौशल्या धन्य कैकई धन्य सुमित्रा मैया,
धन्य कौशल्या धन्य सुमित्रा धन्य कैकई मैया,
धन्य भूप दशरथ के अँगना खेलत चारो भैया,
मीठी तोतली रसीली प्रभु की बानी लागे प्रभु की बानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे,
सीता राम जी की प्यारे राजधानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे...

छोटी छावनी रंगमहल हनुमान गढ़ी अति सुन्दर,
रंगमहल हनुमानगढ़ी अति सुन्दर,
स्वयं जगत के मालिक बैठे कनक भवन के अंदर,
सीता राम जो की शोभा सुखकानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे,
सीता राम जी की प्यारे राजधानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे...

सहज सुहावन शोभा लागे रघुवर राम लाला की,
सहज सुहावन शोभा लागे रघुवर राम लाला की,
सीता राम नाम धुन प्यारी सुख दानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे,
सीता राम जी की प्यारे राजधानी लागे,
मोहे मिठो मिठो सरयू जी को पानी लागे...

राम को देख कर के जनक नंदिनी

राम को देख कर के जनक नंदिनी,
बाग में वो खड़ी की खड़ी रह गयी ।
राम देखे सिया को सिया राम को,
चारो अँखिआ लड़ी की लड़ी रह गयी ॥
थे जनक पुर गये देखने के लिए,
सारी सखियाँ झरोखो से झाँकन लगे ।
देखते ही नजर मिल गयी प्रेम की,
जो जहाँ थी खड़ी की खड़ी रह गयी ॥
राम को देख कर के जनक नंदिनी... ॥

बोली एक सरखी राम को देखकर,
रच गयी है विधाता ने जोड़ी सुघर ।
फिर धनुष कैसे तोड़ेंगे वारे कुंवर,
मन में शंका बनी की बनी रह गयी ॥
राम को देख कर के जनक नंदिनी... ॥

बोली दूसरी सरखी छोटन देखन में है,
फिर चमत्कार इनका नहीं जानती ।
एक ही बाण में ताड़िका राक्षसी,
उठ सकी ना पड़ी की पड़ी रह गयी ॥
राम को देख कर के जनक नंदिनी... ॥

राम को देख कर के जनक नंदिनी,
बाग में वो खड़ी की खड़ी रह गयी ।
राम देखे सिया को सिया राम को,
चारो अँखिआ लड़ी की लड़ी रह गयी ॥

शिव जी

सकुचाती चली इठलाती चली

सकुचाती चली इठलाती चली,
चली पनिया भरन शिव नारी रे, सागर पर उतारी गागरिया...

रूप देखकर समुंदर बोला कौन पिता महतारी,
कौन गांव की रहने वाली कौन पुरुष घर नारी,
बता दे कौन पुरुष घर नारी, होले होले गिरजा बोले छायो है रूप अपार रे,
सागर पर उतारी गागरिया, सकुचाती चली इठलाती चली...

राजा हिमाचल पिता हमारे मैनावत महतारी,
भोलेनाथ हैं पति हमारे मैं उनकी घरवाली,
बता दूं मैं उनकी घरवाली, जल ले जाऊं पति नीलाऊं सुन लो जी वचन हमार रे,
सागर पर उतारी गगरिया, सकुचाती चली इठलाती चली...

सागर बोला छोड़ भोला को घर घर अलख जगावे,
रतन भरे मेरे में तू बैठी मौज उड़ावे,
ओ गोरा बैठी मौज उड़ावे,
पीके भंगिया वह रंगरसिया क्यों सह रही कष्ट अपार रे,
सागर पर उतारी गागरिया, सकुचाती चली इठलाती चली...

क्रोधित होकर चली वह गौरा भोले के ढिंग आई,
सागर ने जो वचन कहे वह शिव को रही सुनाई,
रे गौरा शिव को रही सुनाई,
शिव कियो यतन सागर मंथन लिए चौदह रतन निकाल रे,
सागर पर उतारी गागरिया, सकुचाती चली इठलाती चली...

सकुचाती चली इठलाती चली,
चली पनिया भरन शिव नारी रे, सागर पर उतारी गागरिया...

गोपी बने भोलेनाथ

गोपी बने भोलेनाथ, ब्रिज में गोपी बने, गोपी बने भोले गोपी बने.....

घूम घुमारो लहंगा पहनो,
बिंदिया लगायी लायी लाल ब्रिज में गोपी बने, गोपी बने...
बालों का जूडा बनाया भोले ने,
भर लई मोतियन मांग ब्रिज में गोपी बने, गोपी बने...

आँखों में सुरमा लगाया भोले ने,
लाली लगा लई लाल ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...
सोलह करे श्रृंगार भोले ने,
बन गए नर से नार ब्रिज में गोपी बने, गोपी बने...

आगे आगे गौरा चलदी,
पीछे चले भोलेनाथ ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...
हंसकर पूछे गौरा जी की सखियाँ,
कौन सखी तूमेरे साथ ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...

हंसकर गौरा यों उठ बोली,
मेरी सखी मेरे साथ ब्रिज में गोपी बने, गोपी बने...
कुंजन में से मोहन देखें,
चाल गये पहचान ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...

ऐसी बंसी बजायी मोहन ने,
कहीं चुनरी कहीं आप ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...
धन्य धन्य प्रभु लीला तिहारी,
इस रूप पे जाऊँ बलिहार ब्रज में गोपी बने, गोपी बने...

शिव शंकर चले कैलाश

शिव शंकर चले कैलाश बुंदिया पड़ने लगी...

गौरां जी ने बोदी हरी हरी मेहँदी,
शिव शंकर ने बोई भांग बुंदिया पड़ने लगी...

गौरां जी की पक गई हरी हरी मेहँदी,
शिव शंकर की पक गई भांग बुंदिया पड़ने लगी...

गौरां जी ने काट ली हरी हरी मेहँदी,
शिव शंकर ने काटी भांग बुंदिया पड़ने लगी...

गौरां जी ने पीस लेई हरी हरी मेहँदी,
शिव शंकर ने घोटी भांग बुंदिया पड़ने लगी...

गौरां जी के रच गई हरी हरी मेहँदी,
शिव शंकर के चढ़ गई भांग बुंदिया पड़ने लगी...

शिव शंकर चले कैलाश बुंदिया पड़ने लगी...

कैलाश के निवासी

कैलाश के निवासी नमो बार बार हूँ, नमो बार बार हूँ
आयो शरण तिहारी प्रभु तार पार तू, प्रभु तार पार तू
कैलाश के निवासी नमो बार बार हूँ, नमो बार बार हूँ
आयो शरण तिहारी प्रभु तार पार तू

भक्तो को कभी शिव तुने निराश ना किया,
माँगा जिन्हें जो जहाँ वरदान दे दिया,
बड़ा हैं तेरा दायरा, बड़ा दातार तू, बड़ा दतार तू
आयो शरण तिहारी प्रभु तार पार तू
कैलाश के निवासी नमो बार बार हूँ, नमो बार बार हूँ

बरवान क्या करू में राखो के ढेर का,
चपटा बभूत में हैं खजाना कुबेर का,
हे गंग धार, मुक्ति धार, ओम्कार तू, प्रभु ओम्कार तू
आयो शरण तिहारी प्रभु तार पार तू
कैलाश के निवासी नमो बार बार हूँ, नमो बार बार हूँ

...

क्या क्या नहीं दिया हे हम क्या प्रमाण दे
बस गए त्रिलोक शम्भू हम तेरे दान से
ज़हर पिया, जीवन दिया, कितना उदार तू, कितना उदार तू
आयो शरण तिहारी प्रभु तार पार तू
कैलाश के निवासी, नमो बार बार हूँ, नमो बार बार हूँ ...

मैं तो शिव ही शिव को ध्याऊँ

मैं तो शिव ही शिव को ध्याऊँ, जल से स्नान कराऊँ,
मैं तो चावल चंदन चढ़ाऊँ, मैं तो चावल चंदन चढ़ाऊँ ।
और आक धतूरा ल्याऊँ, मैं तो शिव ही शिव को ध्याऊँ, जल से स्नान कराऊँ ।।

मैं तो जलधारा बरसाऊँ, मैं तो जलधारा बरसाऊँ,
और अगड़बंब मुख गाऊँ, और अगड़बंब मुख गाऊँ ।
मैं तो शिव ही शिव को ध्याऊँ, जल से स्नान कराऊँ ।।

तब प्रसन्न भए शिव राजा, तब प्रसन्न भए शिव राजा ।
वर माँगो सारू काजा, वर माँगो सारू काजा ।।

मोको और कछु ना चाहिए, श्री राधा कृष्ण मिलइये ।
मोको और कछु ना चाहिए, श्री राधा कृष्ण मिलइये ।।

धन नरसी बुद्धि तिहारी, धन नरसी बुद्धि तिहारी ।
ते तो वर मांग्यो अति भारी, ते तो वर मांग्यो अति भारी ।।

तेरा पल पल बीता जाए

तेरा पल पल बीता जाए, मुख से जप ले नमः शिवाय ।

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ॥

शिव शिव तुम हृदय से बोलो, मन मंदिर का परदा खोलो ।

अवसर खाली ना जाए, मुख से जप ले नमः शिवाय ॥

॥ तेरा पल पल बीता जाए... ॥

यह दुनिया पंछी का मेला, समझो उड़ जाना है अकेला ।

तेरा तन यह साथ न जाय, मुख से जप ले नमः शिवाय ॥

॥ तेरा पल पल बीता जाए... ॥

मुसाफिरी जब पूरी होगी, चलने की मजबूरी होगी ।

तेरा बिगड़ा प्राण रह जाये, मुख से जप ले नमः शिवाय ॥

॥ तेरा पल पल बीता जाए... ॥

शिव पूजन में मस्त बने जा, भक्ति सुधा रस पान किये जा ।

दर्शन विश्वनाथ के पाय, मुख से जप ले नमः शिवाय ॥

॥ तेरा पल पल बीता जाए... ॥

तेरा पल पल बीता जाए, मुख से जप ले नमः शिवाय ।

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ॥

राधा

राधे तेरे चरणों की

राधे तेरे चरणों की, श्यामा तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये ।
सच कहता हूँ बस मेरी तकदीर संवर जाये ॥

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है ।
एक बूंद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये ॥

ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करु ।
इसे जितना समझाऊँ, उतना ही मचल जाये ॥

नजरोँ से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना ।
नजरोँ से जो गिर जाये, मुश्किल ही सम्हल पावे ॥

राधे इस जीवन की बस एक तमन्ना है ।
तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये ॥

अब तलक निभाई है आगे भी निभा देना ।
मेरी जीवन नैया को प्रभु पार लगा देना ॥

हम शरण पड़े तेरे हृदय से लगा लेना ।
ऐसा ना हो जाये हम राह भटक जायें ॥

मन भूल मत जइयो, राधा रानी के चरण

मन भूल मत जइयो, राधा रानी के चरण,
राधा रानी के चरण, महारानी के चरण,
मन भुल मत जइयो, राधा रानी के चरण...

राधा राधा रटत ही, सब व्याधा मिट जाए,
कोटि जनम की आपदा, कोटि जनम की आपदा,
नाम लेत मिट जाए, मन भुल मत जइयो,
राधा रानी के चरण...

राधे तू बड़ भागिनी, कौन तपस्या किन,
तीन लोक के है जो स्वामी, तीन लोक के है जो स्वामी,
वो तेरे आधीन, मन भुल मत जइयो,
राधा रानी के चरण...

वृन्दावन के वृक्ष का, मरम ना जाने कोई,
डार डार और पात पात पे, डार डार और पात पात पे,
राधे राधे होए, मन भुल मत जइयो,
राधा रानी के चरण...

राधे तू है स्वामिनी, और मैं तेरा दास,
जनम जनम मोहे दीजियो, जनम जनम मोहे दीजियो,
वृन्दावन को वास, मन भुल मत जइयो,
राधा रानी के चरण ।।

एक नजर कृपा की कर दो

एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।
श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे

दासी की झोली भरदो, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।

माना की मैं पतित बहुत हूँ, माना की मैं पतित बहुत हूँ,
तेरो पतित पावन है नाम, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।

जो तुम मेरे अवगुण देखो, जो तुम मेरे अवगुण देखो,
मत रखना कोई हिसाब, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।

चंद्रा सखी भज बल कृष्णा छवि, चंद्रा सखी भज बल कृष्णा छवि,
तेरे चरणों में जाऊ बलिहार, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।

श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे, श्री राधे

एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।
एक नजर कृपा की कर दो, लाडली श्री राधे ।

मीठे रस से भरी रे, राधा रानी लागे

मीठे रस से भरयोड़ी राधा रानी लागे, महारानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे x2

यमुना मैया कारी-कारी, राधा गोरी-गोरी
वृंदावन में धूम मचावे बरसाने री छोरी x2

बृजधाम राधा ज्यु की रजधानी लागे, रजधानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पानी लागे
हो, म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे

ना भावे म्हने माखन, मिसरी, अब ना कोई मिठाई
म्हारे जीवड़िया ने भावे अब तो राधा नाम मलाई x2

वृषभानु की लली तो गुड़धानी लागे, गुड़धानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पानी लागे
मीठे रस से भरयोड़ी राधा-रानी लागे, महारानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे

राधा-राधा नाम रटत है जो नर आठों याम
तिनकी बाधा दूर करत है राधा-राधा नाम x2

राधा नाम से सफल ज़िंदगानी लागे, ज़िंदगानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे
मीठे रस से भरयोड़ी राधा-रानी लागे, महारानी लागे
म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे

म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे
ओ, म्हाने खारो-खारो यमुना जी रो पाणी लागे

राधा कौन से पुण्य किये तूने

राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥
राधा जब सोलह शृंगार करे,
प्रभ दर्पण आप दिखाते है,
राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥

राधा जब पनघट पे जावे,
प्रभु मटकी आप उठाते है,
राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥

राधा जब भोग तैय्यार करे,
हरी आकर भोग लगाते है,
राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥

राधा जब कुँजन मे जावे,
प्रभु आकर रास रचाते है,
राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥

राधा कौन से पुण्य किये तूने,
हरि रोज तेरे घर आते हैं ॥

नन्द के आनंद भयो

आनंद उमंग भयो, जय हो नन्द लाल की ।
नन्द के आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
बृज में आनंद भयो, जय यशोदा लाल की ।
हाथी घोडा पालकी, जय कन्हिया लाल की ॥
जय हो नंदलाल की, जय यशोदा लाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
आनंद उमंग भयो, जय हो नन्द लाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
कोटि ब्रह्माण्ड के अधिपति लाल की ।
हाथी घोडा पालकी, जय कन्हिया लाल की ॥
गौ चरने आये, जय हो पशुपाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
कोटि ब्रह्माण्ड के अधिपति लाल की । नन्द के आनंद...
गौ चरने आये, जय हो पशुपाल की । नन्द के आनंद...
पूनम के चाँद जैसी शोभी है बाल की ।
हाथी घोडा पालकी, जय कन्हिया लाल की ॥
आनंद उमंग भयो, जय हो नन्द लाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
भक्तो के आनंदकनद जय यशोदा लाल की ।
हाथी घोडा पालकी, जय कन्हिया लाल की ॥
जय हो यशोदा लाल की, जय हो गोपाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥
आनंद से बोलो सब जय हो बृज लाल की ।
हाथी घोडा पालकी, जय कन्हिया लाल की ॥
जय हो बृज लाल की, पावन प्रतिपाल की ।
गोकुल में आनंद भयो, जय कन्हिया लाल की ॥

राधे तू राधे, राधे तू राधे, तेरा नाम रटूँ मैं

राधे तू राधे, राधे तू राधे, तेरा नाम रटूँ मैं,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

सावन का महिना होगा उसमें होंगे झूले,
राधे तू झूले, तेरी डोर बनूँ मैं, तेरी डोर बनूँ मैं...
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

भादो का महिना होगा उसमें होंगे बादल,
राधे तू बादल, राधे तू बादल, तेरा नीर बनूँ मैं, तेरा नीर बनूँ मैं
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

कार्तिक का महिना होगा उसमें होंगे दीपक
राधे तू दीपक, राधे तू दीपक, तेरी ज्योत बनूँ मैं, तेरी ज्योत बनूँ मैं...
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

फागुन का महिना होगा उसमें होगी होली,
राधे तू होली, राधे तू होली तेरा रंग बनूँ मैं, तेरा रंग बनूँ मैं...
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

छीके ऊपर छीका होगा उस में होगा माखन,
राधे तू माखन चित चोर बनूँ मैं,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

राधे तू राधे, राधे तू राधे, तेरा नाम रटूँ मैं,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं...

श्री कृष्ण

श्री गोवर्धन महाराज महाराज

श्री गोवर्धन महाराज महाराज, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो ॥

तोपे पान चढ़े तोपे फूल चढ़े, तोपे पान चढ़े तोपे फूल चढ़े,
तोपे चढ़े दूध की धार, ओ धार, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो,
श्री गोंवर्धन महाराज महाराज...

तेरे कानन कुंडल साज रहे, तेरे कानन कुंडल साज रहे,
ठोड़ी पे हिरा लाल, ओ लाल, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो,
श्री गोंवर्धन महाराज महाराज...

तेरे गले में कंठा सोने को, तेरे गले में कंठा सोने को,
तेरी झांकी बनी विशाल, विशाल, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो,
श्री गोंवर्धन महाराज महाराज...

तेरी सात कोस की परिक्रमा, तेरी सात कोस की परिक्रमा,
और चकलेश्वर विश्राम, विश्राम, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो,
श्री गोंवर्धन महाराज महाराज...

श्री गोवर्धन महाराज महाराज,
तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो ॥

श्री राधे गोविन्द गोपाल काट भव जाल

श्री राधे गोविन्द गोपाल काट भव जाल
गोवर्धन धारी में आयो शरण तिहरी

मस्तक पर मुकुट विराजत है, और अंग पीतांबर राजत है ।
गल विच सोहे कुंजन की माला प्यारी, में आयो...
कानों में कुण्डल सोहत है, बाजू बंद मन को मोहत है ।
कटी रत्न जड़ित करधनीय की छवि प्यारी, में आयो...
छवि ललित त्रिभंगी राजत है, पयान में नूपुर बाजत है ।
चरणों की आशा अरुण कमल मन हारी, में आयो...
कर कमलन मुरली सोह रही, मुस्कान मधुर मन मोह रही ।
भक्तान के जीवन प्राण और अति प्यारी, में आयो...
मन मोहन मन के हो राजा, एक बार तो मंदिर में आज ।
दर्शन देना हमको हे कृष्ण मुरारी, में आयो...
निषदिन में ध्यान लगाता हूँ, श्री गोविंद तुम्हें बुलाता हूँ ।
आजाओ मोहन करके गरुंड सवारी, में आयो...
भोजन में स्वयं बनाता हूँ, और भोग तुम्हारे लगता हूँ ।
पा जाना प्रेम प्रसादी हे बनवारी, में आयो...
जिन जिन ने तुमको ध्याया है, उन्हें प्रकट हो दर्श दिखाया है ।
अब क्यों कर राखी देर हमारी बारी, में आयो...
चरणों में शीश झुकाता हूँ, और सविनय विनय सुनाता हूँ ।
कर देना भाव से नैया पार हमारी, में आयो...

अकेली घेर लई मधुवन में

अकेली घेर लई मधुवन में, श्याम तैने कैसी ठानी रे,

श्याम मोहे वृंदावन जानो लौट कर बरसाने आनो
मेरी कर जौरो की मानो अब होय है देर
लड़े घर सास जेठानी रे, इकली घेर लई मधुवन में...
दान दही को दे जा मोय, ग्वालन तभी जान दऊं तोय
नहीं तक़रार बहुत सी होय, जो करि दे इंकार होय तेरी खेंचा तानी रे
इकली घेर लई मधुवन में...

दान हम कबहुं नही दियो, रोक मेरा मारग काहे लियो
बहुत सो उधम अब ही कियो, आज तक क्या बृज में कोई हुआ ना दानी रे
इकली घेर लई मधुवन में...

ग्वालन बातें बड़ी बनाये, ग्वाल बालों को लऊं बुलाय
दाऊं तेरा माखन अब लुटवाये, इठलावे हर बार बार तोय छाई जवानी रे
इकली घेर लई मधुवन में...

कंस राजा ते करूँ पुकार, मूशक बाँध दिलवाऊं मार
तेरी ठकुराई देऊं निकार, जुल्म करे ना डरे तके तू नार वीरानी रे
इकली घेर लई मधुवन में...

कंस क्या खसम लगे तेरो, मार के कर ढूँगा केरो
वाही को जन्म भयो मेरो, करूँ कंस निरवंश
मिठाय दऊँ नाम निशानी रे, इकली घेर लई मधुवन में...
इतने में आ गए सब ग्वाल, पड़े आँखन में डोरा लाल
घूम के चलें अदा की चाल, लुट गई मारग में ग्वालिन
घर को गई खिसियानी रे...

सिर पर सीताराम फ़िकर फ़िर क्या करना

सिर पर सीताराम फ़िकर फ़िर क्या करना
तेरे बिगड़े बनेगे काम्, फ़िकर फ़िर क्या करना

पितु रघुबर श्री जानकी मैया, फ़िर क्यों परेशान हो भैया
तेरे कटेगे कष्ट तमाम्, फ़िकर फ़िर क्या करना

जो जन रामकथा सत्संगी, उनके सहायक श्री बजरंगी
अतुलित बल के धाम फ़िकर फ़िर क्या करना

अगर प्रबु मन मानी करेगे नही शरनाघत पीड हरेगे
होगा बिरद बदनाम फ़िकर फ़िर क्या करना

अब राजेश ना आह भरो तुम, नहीं व्यर्थ परवाह करो तुम
रटो राम जी का नाम, फ़िकर फ़िर क्या करना
सिर पर सीताराम, फ़िकर फ़िर क्या करना...

यशोदा जायो ललना मैं वेदन में सुन आई

यशोदा जायो ललना मैं वेदन में सुन आई,
मैं वेदन में सुन आई, पुरानन में सुन आई,
यशोदा जायो ललना...

मथुरा में कान्हा जन्म लिया है,
गोकुल मैं बजे नगाड़े री मैं बेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

ले वसुदेव चली गोकुल को,
यमुना ने चरण पखारे री मैं वेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

श्याम बदन पर पीली रंगोलियां,
याकेनैना भरे कजरारे री मैं बेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

कर शृंगार पूतना आई,
वाके क्षण में प्राण निकाले री मैं वेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

चंदन के पलना में कान्हा जी विराजे,
वाकी यशोदा नजर उतारे री मैं वेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

चंद्र सखी बाल कृष्ण छवि,
सब गांव में गीत बधाई री मैं वेदन में सुन आई, यशोदा जायो ललना...

होली

होली खेलन आयो श्याम आज

होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री
होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री ॥
रंग में बोरो री... आज याहि रंग में बोरो री
होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री

कोरे-कोरे कलश मँगाओ, रंग केसर घोरो री ।
रंग-बिरंगो करो आज, याहि कारे से गोरो री ॥
होली खेलन आयो श्याम, आज याहि रंग में बोरो री ॥
रंग में बोरो री... आज याहि रंग में बोरो री, होली खेलन...

पास-पड़ौसिन बोलि, याहि आँगन में घेरो री ।
पीताम्बर लेउ छीन याहि, पहराय देउ लहँगो री ॥
होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री ॥
रंग में बोरो री... आज याहि रंग में बोरो री, होली खेलन...

हरे बाँस की बाँसुरिया, याहि तोड़-मरोड़ी री ।
तारी दे दे याहि नचावो, तारी दे दे याहि नचावो, अपनी ओरो री ॥
होली खेलन आयो श्याम, याहि रंग में बोरो री ॥
रंग में बोरो री... आज याहि रंग में बोरो री, होली खेलन...

चन्द्रसखी की यही विनती, करे निहोरो री ।
हा हा खाय पड़े जब पैया, तब याहि छोरो री ॥
होली खेलन आयो श्याम आज, याहि रंग में बोरो री ॥
रंग में बोरो री... आज याहि रंग में बोरो री

होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री
होली खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरो री

नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय

नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय ।
खेली ना जाय, होरी खेली ना जाय ॥
नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई...

क्यों रे लंगर लंगराई मोते कीनी । केसर कीच कपोलन दीनी ।
लिए गुलाल वो तो ठाड़ो मुस्काये । वो तो ठाड़ो मुस्काये ।
होरी खेली ना जाय ।
नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय ।

नैक न कान करत काहू की । नजर बचावे बलदाऊ की ।
पनघट सौँ घर लो बतराय । घर लौँ बतराय ।
होरी खेली ना जाय ।
नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय ।

औचक कुचन कुमकुमा मारै । रंग सुरंग सीस ते ढारै ।
यह ऊधम सुनि सासु रिसियाय । सुनि सासु रिसियाय ।
होरी खेली ना जाय ।
नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय ।

होरी के दिनन मोते दूनौ दूनौ अटकै । सालिगराम कोण जाहे हटकै ।
अंग लिपटि हँसि हा -हा खाय । हँसि हा -हा खाय ।
होरी खेली ना जाय ।
नैनन मे पिचकारी दर्ई, मोहे गारी दर्ई, होरी खेली ना जाय ।

एकादशी

गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा

गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ, बिन ग्यारस के व्रत कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ...
बालू की भीत अटारी को चढ़नो, ओछे की प्रीत कटारी को मरना,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ...
प्रीत करे तो कपट हो कैसे, मन ना मिले तो मिलन नहीं है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ...
गुरु से कपट मित्र से चोरी, या होवे निर्धन या होवे कोड़ी,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...
मां बिन लाड पिता बिन आदर, बिन भाई व्यवहार कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...
सास बिन लाज ससुर बिन पर्दा, बिन रे पति के श्रंगार कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...
धन बिन मान पुरुष बिन आदर, बिन रे पुत्र परिवार कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...
पोथी बिन पंडित खड़ग विन क्षत्रिय, बिन सुमिरन के स्वर्ग कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...
गंगा ना नहाई वा को नहाना कहाँ है, दान ना दिया वा को पुण्य कहाँ है,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...

गुरुजी के कारण मैंने कुटुंब सजायो,
नंद जी का लाला मेरे अंगना में आयो,
गुरु बिन ज्ञान, गंगा बिन तीरथ रामा...

ग्यारस माता से मिलन कैसे होय

मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी,
ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

पहली खिड़की खोल के देखू, वहां मकड़ी का जाल,
मोपे इतना ना बनी मेरे राम, झाड़ू तो या मैं मारती चलूं,
ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय, मेरा हरी से मिलन कैसे होय,
खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

दूजी खिड़की खोल कर देखू उसमे घोर अंधेरा, मोपे इतना ना बनी मेरे राम,
दिया तो यामे जोड़ती चलूं, ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय,
मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

तीजी खिड़की खोल कर देखू वहां गंगा की धार, मोपे इतना ना बनी मेरे राम,
गोता तो यामे मारती चलूं, ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय,
मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

चौथी खिड़की खोलकर देखू उसमें कपिला गाय, मोपे इतना ना बनी मेरे राम,
सेवा तो यामे करती चलूं, ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय,
मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

पांचवी खिड़की खोल कर देखू वहां तुलसी का बाग,
मोपे इतना ना बनी मेरे राम,
तुलसी की बगिया सीचती चलूं, ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय,
मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

छठवीं खिड़की खोल कर देखू उसमे कन्हैया आप,
मैंने दर्शन किए भरपूर खिड़की तो सारी खुली पड़ी,
ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय, मेरा हरी से मिलन कैसे होय,
खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

सातवीं खिड़की खोल कर देखू वहां मैया जी आप, मेरा जन्म सफल हुआ आज,
खिड़की तो सातो खुली पड़ी,
मैंने सेवा करी दिन रात खिड़की तो सातों खुली पड़ी,
ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय, मेरा हरी से मिलन कैसे होय,
खिड़की तो सातो बंद पड़ी...

मेरा हरी से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातो बंद पड़ी,
ग्यारस मैया से मिलन कैसे होय, खिड़की तो सातों बंद पड़ी...

सत्संगी भजन

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने,
वही ये सृष्टि चला रहे है,

जो पेड़ हमने लगाया पहले, उसी का फल हम अब पा रहे है,
रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है ॥

इसी धरा से शरीर पाए, इसी धरा में फिर सब समाए,
है सत्य नियम यही धरा का, है सत्य नियम यही धरा का,
एक आ रहे है एक जा रहे है,
रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है ॥

जिन्होंने भेजा जगत में जाना, तय कर दिया लौट के फिर से आना,
जो भेजने वाले है यहाँ पे, जो भेजने वाले है यहाँ पे,
वही तो वापस बुला रहे है,
रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है ॥

बैठे है जो धान की बालियों में, समाए मेहंदी की लालियों में,
हर डाल हर पत्ते में समाकर, हर डाल हर पत्ते में समाकर,
गुल रंग बिरंगे खिला रहे है,
रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है ॥

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है,
जो पेड़ हमने लगाया पहले, उसी का फल हम अब पा रहे है,
रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही ये सृष्टि चला रहे है ॥

यदि नाथ का नाम दयानिधि है

यदि नाथ का नाम दयानिधि है,
तो दया भी करेंगे कभी ना कभी

दुःख हारी हर दुखियाँ जन के दुःख कलेश हरेगे कभी न कभी,
यदि नाथ का नाम दया निधि है

जिस अंग की शोभा सुहावनी है,
जिस सवाली रंग में मोहनी है,
उस रूप सुधा के सनेहियो के,
दीर्घ प्याले भरे गे कभी न कभी न,

करुणानिधि नाम सुनाया जिन्हे,
चरणामित पान करवाया जिन्हे,
सरकार अदालत में गवाह सभी गुजरे गे कभी न कभी,

हम द्वार पे आप के आके पड़े,
मुदत से इसी जिद पे है अड़े,
भव सिंधु तरे जो बड़े जो बड़े,
बिंदु तरे गे कभी न कभी,
यदि नाथ का नाम दयानिधि है तो दया भी करेंगे कभी ना कभी

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥
ऊँचे शिखर गिरी के आकाश चूमते हैं ।
वृक्षों के झुरमुटे भी वायु में झूमते हैं ।
सरिताएं बहती कल कल शीतल से नीर वाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

कही वृक्ष है रसीले कही झाड़ है कटीले ।
कही रेत के है टीले सरोवर कही है नीले ।
ये आसमान देखो कैसी सजी दिवाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

सब प्राणियों के जग में तूने बनाए जोड़े ।
दुर्जन अधीक बनाए सज्जन बनाए थोड़े ।
घोड़े बनाए तूने सिंह हाथी शक्तिशाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

जुगनू की दूम में तूने कैसा बल्ब लगाया ।
बरसात की निशाँ में जंगल है जगमगाया ।

बिजली चमक है कैसी घन की घटा है काली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

संसार की नदी सब सागर में जा रही हैं ।
सागर की तरंगें भी गुण तेरे ही गा रही हैं ।
इस विश्व वाटिका का केवल प्रभु है माली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

बच्चे किसी पे दर्जन टुकड़ों के भी हैं लाले ।
संतान बिन किसी के घर पे लगे हैं ताले ।
यूनान का सिकंदर गया करके हाथ खाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

आवागमन का देखो कैसा ये सिलसिला है ।
थे कर्म जिसके जैसे वैसा ही फल मिला है ।
अंगूर कैसे मिलते बोई थी जब निम्बोली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

फूलों का चूस के रस कैसा मधु बनाए ।
मधुमक्खी में तूने क्या यंत्र है लगाए ।

मधु सबके मन को है भाय चाहे लाला हो या लाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

पत्तो को खाके कीड़ा रेशम बना रहा है ।
है कौन जो उदर में चरखा चला रहा है ।
बुन बुन के आ रहा है रेशम का लच्छा जाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

बरसात के दिनों में लेंटर टपकते देखा ।
बैये के घोसले में पाई ना जल की रेखा ।
क्या तकनिकी सिखाई तूने हे शिल्प शाली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली ।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली ॥

सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है

सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

चलो सत्संग में चलें, हमें हरि गुण गाना है ।
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

मीरां पुकार रही, आओ मेरे गिरधारी ।
विष भरे प्याले को, अमृतमय बनाना है ।
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

द्रोपती पुकार रही, आवो मेरे बनवारी ।
चीर बढा जाओ है, मेरी लाज को बचाना है ॥
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

शबरी पुककर रही, आओ मेरे रघुराई ।
खट्टे मीठे बेरों का तोहे भोग लगाना है ॥
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

मथुरा में ढूँढा तुझे, गोकुल में पाया है ।
वृन्दावन की गलियों में, मेरे श्याम का ठिकाना है ॥
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

चलो सत्संग में चलें, हमें हरि गुण गाना है ।
सांवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है ॥

राम नाम के हीरे मोती

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली गली ।
कृष्ण नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली गली ।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ।
ले लो रे कोई श्याम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ।

माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा ।
धन दौलत और माल खजाना, यही पड़ा रह जायेगा ।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली गली ॥
बोलो राम बोलो राम, बोलो राम राम राम । ले लो रे...

क्यों करता तू मेरा मेरी, यह तो तेरा मकान नहीं ।
झूठे जन में फंसा हुआ है, वह सच्चा इंसान नहीं ।
जग का मेला दो दिन का है, अंत में होगी चला चली ॥ ले लो रे...

जिन जिन ने यह मोती लुटे, वह तो माला माल हुए ।
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर वह कंगाल हुए ।
चांदी सोने वालो सुन लो, बात सुनाऊँ खरी खरी ॥
बोलो राम बोलो राम, बोलो राम राम राम । ले लो रे...

दुनिया को तू कब तक पगले, अपनी कहलायेगा ।
ईश्वर को तू भूल गया है, अंत समय पछतायेगा ।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कलि कलि ॥
बोलो राम बोलो राम, बोलो राम राम राम । राम नाम के...

ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ।
ले लो रे कोई श्याम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ।

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फ़ायदा ।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं, बाद आंसू बहाने से क्या फ़ायदा ॥

मैं तो मंदिर गया, पूजा आरती की, पूजा करते हुए यह ख़याल आ गया ।
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं, सिर्फ़ पूजा के करने से क्या फ़ायदा ॥

मैं तो सतसंग गया, गुरु वाणी सुनी, गुरु वाणी को सुन कर ख़याल आ गया ।
जनम मानव का ले के दया ना करी, फिर मानव कहलाने से क्या फ़ायदा ॥

मैंने दान किया मैंने जप तप किया दान करते हुए यह ख़याल आ गया ।
कभी भूखे को भोजन खिलाया नहीं दान लाखों का करने से क्या फ़ायदा ॥

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया, गंगा नहाते ही मन में ख़याल आ गया ।
तन को धोया मनर मन को धोया नहीं फिर गंगा नहाने से क्या फ़ायदा ॥

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े, शास्त्र पढते हुए यह ख़याल आ गया ।
मैंने ज्ञान किसी को बांटा नहीं, फिर ग्यानी कहलाने से क्या फ़ायदा ॥

माँ पिता के ही चरणों में ही चारो धाम है, आज्ञा आज्ञा यही मुक्ति का धाम है ।
पिता माता की सेवा की ही नहीं फिर तीर्थों में जाने का क्या फ़ायदा ॥

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का

ये तन है जंगल की लकड़ी
आग लगे जल जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है कागज की पुड़िया
हवा चले उड़ जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है माटी का ढेला
बूँद पड़े गल जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है फूलों का बगीचा
धुप पड़े मुरझाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है कच्ची है हवेली
पल में टूट जाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

ये तन है सपनो की माया
आँख खुले कुछ नाही, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का...

श्री गंगा मैया तेरी लहर मन भाई

श्री गंगा मैया तेरी लहर मन भाई,

हरिचरणन से निकसी सुरसरि, ब्रह्म कमंडल आई ।
भागीरथ ने तपस्या कीन्ही शिव लै शीश चढाई ॥ श्री गंगा ॥

हरि क्षेत्र होय, सूकर क्षेत्र होय, कर्ण क्षेत्र को धायीं ।
प्रयागराज यमुना में मिलकर, काशी भेंटी जाई ॥ श्री गंगा ॥

भारत भुमि पावन कीन्ही, तारे अधम अधाई ।
साठ हजार सगर सुत तारे, गंगा सागर धाई ॥ श्री गंगा ॥

नंद दास गंगा की महिमा मोपे कही ना जायी ।
जो गंगा कौ महत्ततम गावे, भाव सागर तर जायी ॥ श्री गंगा ॥

श्री गंगा मैया तेरी लहर मन भाई

श्री यमुना मैया तेरो दरस मोहे भाए ।

सुख देनी दुख हरणी श्री यमुना जी, जो जन प्रात उठ न्हावे ।
श्री गोकुल के निकट बहत हो, लहरन की छवि आवे ॥१॥

वृन्दावन में रास रच्यो हे, मोहन मुरली बजावे ।
मदन मोहन जू की खरी प्यारी, पटरानी जू कहावें ॥२॥

सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को, वेद विमल जस गावें ॥३॥

गुरु जी के भजन

मेरे सर पर रख दो गुरुवर

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, अपने ये दोनो हाथ ।
गुरुवर हम को दीजिये, जन्म-जन्म साथ ॥

सुना है हमने शारणागत को, अपने गले लगाते हो ।
ऐसा हमने क्या मांगा जो, देने से घबराते हो ।
चाहे सुख में रखो या दुख में, बस थामे रहना हाथ ॥

गम की आग में झूलस रहे हैं, प्यार की छाया कर दे तूं ।
बिन मांझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तूं ।
मेरा रस्ता रोशान कर दो-२, छायी अंधियारी रात ॥

बिन गुरु ज्ञान कहां से पाये, जीवन में अंधियारा है ।
संत समागम हो जाये तो, जीवन में उजियारा है ।
कशल गुरु से मांगते, बस इतना आशीव्वाद ॥

हे मेरे गुरुदेव करुणा

हे मेरे गुरुदेव करुणा, सिंधु करुणा कीजिए,
हूं अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिए,

खा रहा गोते हूं मै, भव सिंधु के मझधार मैं,
आसरा है दूसरा कोई न, अब संसार में,
हे मेरे गुरुदेव करुणा, सिंधु करुणा कीजिए,
हूं अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिए,

पाप बोझे से लदी नैया, भंवर में जा रही,
नाथ दौड़ो अब बचालो, जल्दी डूबी जा रही,
हे मेरे गुरुदेव करुणा, सिंधु करुणा कीजिए,
हूं अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिए,

आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहां जाऊंगा मैं,
भव सागर को नाथ कैसे, पार कर पाऊंगा मैं,
हे मेरे गुरुदेव करुणा, सिंधु करुणा कीजिए,
हूं अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिए,

सब जगह मंजिल भटक कर अब शरण ली आपकी,
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी,
हे मेरे गुरुदेव करुणा, सिंधु करुणा कीजिए,
हूं अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिए ।

संतन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी

संतन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी,
अच्छी बनेगी तेरी बिगड़ी बनेगी,
अच्छी बनेगी तेरी तेरी किस्मत जगेगी,
जाग सके तो जाग रे तेरी अच्छी बनेगी ।।

ध्रुव जी की बन गई, प्रहलाद जी की बन गई,
ध्रुव जी की बन गई, प्रहलाद जी की बन गई,
हरी कीर्तन में लाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।

कागा से तोहे हंस बनावे, कागा से तोहे हंस बनावे,
मिट जाए दिल के दाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।

संतन के संग भक्ति बढेगी, संतन के संग भक्ति बढेगी,
राम चरण अनुराग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।

मोह रात्रि में बहुत दिन सोया, मोह रात्रि में बहुत दिन सोया,
जाग सके तो जाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, कहत कबीर सुनो भाई साधो,
होये तेरो बडो भाग रे, तेरी अच्छी बनेगी ।।

संतन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी,
अच्छी बनेगी तेरी बिगड़ी बनेगी,
अच्छी बनेगी तेरी तेरी किस्मत जगेगी,
जाग सके तो जाग रे तेरी अच्छी बनेगी ।।

गुरु चरण में जब

गुरु चरण में जब मेरा मन होगा ।
तब ही सफल मेरा जीवन होगा ॥

बचपन बीता खेल में, जवानी में तू फूला रे ।
माया का गुलाम बना, राम को तू भूला रे ॥
आयेगा बुढ़ापा नहीं सुमिरन होगा ॥

यह तन का नहीं कोई भी ठिकाना रे ।
आज नहीं तो कल सबको है जाना रे ॥
यह तन चिता का, जलावन होगा ॥

प्रेम से पुकार करो हरि को अपना लो रे ।
गुरु जी को अपने हृदय में बसालो रे ॥
लगन बिना नहीं दर्शन होगा ॥

हनुमान जी

जय जय जय हनुमान जी राम राम

जय जय जय हनुमान जी राम राम

सोने के सिंगासन पर बेटे मेरे राम जी, चरणों में बेटे हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

केसर तिलक लगये मेरे राम जी, लाल सिंदूर हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम,

कौशल्या नंदन कहाए मेरे राम जी, अंजनी के लाल हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

सारी रामायण में है मेरे राम जी, सुंदरकांड हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

मुक्ति के दाता है देखो मेरे राम जी, भक्ति के दाता हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

पीला पीतांबर पहने मेरे राम जी, लाल लंगोट हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

फल और मेवा खाए मेरे राम जी, लड्डुअन का भोग हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

सरे जगत के मालिक मेरे राम जी, हमारे तो मालिक हनुमान जी राम राम,
जय जय जय हनुमान जी राम राम

वीर हनुमाना अति बलवाना

वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे, मेरे मन बसियो रे
तू राम राम रटियो रे मेरे मन बसियो रे
वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे

बजरंगी बाला फेरू तेरी माला विनती सुनियो रे, मेरे मन बसियो रे
तू राम राम रटियो रे मेरे मन बसियो रे
वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे
जो कोई आये अर्ज लगाये सब की सुनियो रे
मेरे मन बसियो रे

ना कोई संगी हाथ की तंगी जल्दी हरियो रे, मेरे मन बसियो रे
तू राम राम रटियो रे मेरे मन बसियो रे
वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे

अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी कृपा करियो रे, मेरे मन बसियो रे
तन पे लंगोटा हाथ में सोंटा चिंता हरियो रे, मेरे मन बसियो रे
संकट मोचन नाम तिहारो संकट हरियो रे, मेरे मन बसियो रे
तू राम राम रटियो रे मेरे मन बसियो रे
वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे

राम जी का प्यारा सिया का दुलारा
दर्शन दीजो रे मेरे मन बसियो रे
तू राम राम रटियो रे मेरे मन बसियो रे
वीर हनुमाना अति बलवाना राम राम रटियो रे

दुनिया चले ना श्री राम के बिना

दुनिया चले ना श्री राम के बिना,
राम जी चले ना हनुमान के बिना ।

जब से रामायण पढ़ ली है, एक बात मैंने समझ ली है,
रावण मरे ना श्री राम के बिना, लंका जले ना हनुमान के बिना ॥

लक्ष्मण का बचना मुश्किल था, कौन बूटी लाने के काबिल था,
लक्ष्मण बचे ना श्री राम के बिना, बूटी मिले ना हनुमान के बिना ॥

सीता हरण की कहानी सुनो, बनवारी मेरी जुबानी सुनो,
वापिस मिले ना श्री राम के बिना, पता चले ना हनुमान के बिना ॥

बैठे सिंघासन पे श्री राम जी, चरणों में बैठे हैं हनुमान जी,
मुक्ति मिले ना श्री राम के बिना, भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ॥

आज मंगलवार है महावीर का वार है

आज मंगलवार है महावीर का वार है, ये सच्चा दरबार है ।
सच्चे मन से जो कोई धयावे, उसका बेडा पार है ॥
आज मंगलवार है महावीर का वार है
चेत सुति पूनम मंगल का जनम वीर ने पाया है,
लाल लंगोट गदा हाथ में सर पर मुकुट सजाया है ।
शंकर का अवतार है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
ब्रह्मा जी के ब्रह्म ज्ञान का बल भी तुमने पाया है,
राम काज शिव शंकर ने वानर का रूप धारिया है ।
लीला अप्रम पार है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
बाला पन में महावीर ने हरदम ध्यान लगाया है,
श्रम दिया ऋषिओं ने तुमको ब्रह्म ध्यान लगाया है ।
राम नाम आधार है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
राम जनम हुआ अयोध्या में कैसा नाच नचाया है,
कहा राम ने लक्ष्मण से यह वानर मन को भाया है ।
राम चरण से प्यार है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
पचवटी से माता को जब रावण लेकर आया है,
लंका में जाकर तुमने माता का पता लगाया है ।
अक्षय को मारा है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
मेघनाथ ने ब्रह्मपाश में तुमको आन फसाया है,
ब्रह्मपाश में फस कर के ब्रह्मा का मान बढ़ाया है ।
बजरंगी वाकी मार है, महावीर का वार है, सच्चे मन से जो...॥
लंका जलायी आपने जब रावण भी घबराया है,
श्री राम लखन को आकर माँ का सन्देश सुनाया है ।
सीता शोक अपार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई धयावे, उसका बेडा पार है ॥
आज मंगलवार है महावीर का वार है, ये सच्चा दरबार है ।
सच्चे मन से जो कोई धयावे, उसका बेडा पार है ॥
आज मंगलवार है महावीर का वार है

शालिग्राम

श्री शालिग्राम जी सुनो विनती

श्री शालिग्राम जी सुनो विनती हमारी अर्ज हमारी
जो वरदान दया कर पाऊ,

प्रात समय उठ मंजन कर के प्रेम सहित मैं अस्नान करवाऊ,
चन्दन धुप दीप तुलसी धर वर्ण वर्ण के पुष्प चढाऊ,
श्री शालिग्राम जी सुनो विनती हमारी

आप विराजो प्रभु रतन सिंगासान घंटा शंख मिरधंग बजाओ
इक बूंद च्नामित लेके कुटम्ब सहित बैकुंठ पठाऊ,
श्री शालिग्राम जी सुनो विनती हमारी

जो कुछ भोग मिले प्रभु मोकु भोग लगा के भोजन पाऊ,
जो कुछ पाप किया काया से परिकर्मा के साथ बहाऊ
श्री शालिग्राम जी सुनो विनती हमारी

डर लागत मोहे भवसागर को जम के द्वार प्रभु नही जाऊ
माधव दास आस प्रभु की हरी दासन को दास कहौउ
श्री शालिग्राम जी सुनो विनती हमारी

आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी

आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
दुल्हन बनी है तुलसा दुल्हन बनी है...

आओ मेरी सखियों मुझे टीका पहना दो,
बिंदिया लगा के मुझे सुंदर सजा दो,
मांग भरेंगे शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी...

आओ मेरी सखियों मुझे हरवा पहना दो,
नथनी पहनाकर मुझे सुंदर सजा दो,
माला पहनावे शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी...

आओ मेरी सखियों मुझे मेहंदी लगा दो,
चूड़ियां पहना कर मुझे सुंदर सजा दो,
छल्ला पहनावे शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी...

आओ मेरी सखियों मुझे पायल पहना दो,
महावर लगाकर मुझे सुंदर सजा दो,
संग संग नाचे शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी...

आओ मेरी सखियों मुझे लहंगा पहना दो,
चुनरी उड़ा के मुझे सुंदर सजा दो,
घुंघटा उठामें शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी,
आज दूल्हा बने शालिग्राम तुलसा दुल्हन बनी...

तुलसी महारानी नमो-नमो

तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

धन तुलसी पूरण तप कीनो, शालिग्राम बनी पटरानी ।
जाके पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति कमल चरण लपटानी ॥

तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

धूप-दीप-नवैद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी ।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक ना मानी ॥

तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

सभी सखी मैया तेरो यश गावें, भक्तिदान दीजै महारानी ।
नमो-नमो तुलसी महारानी, तुलसी महारानी नमो-नमो ॥

तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

मिश्री से मीठे बोल हमारी राधा रानी के

मिश्री से मीठे बोल हमारी राधा रानी के,
राधा रानी के हमारी ब्रज पटरानी के,
मिश्री से मीठे बोल हमारी राधा रानी के...

लंबे लंबे बाल हमारी राधा रानी के,
यामें गजरा करे कमाल हमारी राधा रानी के, मिश्री से...

मोटे मोटे नैन हमारी राधा रानी के,
यामें कजरा करे कमाल हमारी राधा रानी के, मिश्री से...

पतले पतले होठ हमारी राधा रानी के,
लाली करे कमाल हमारी राधा रानी के, मिश्री से...

गोरे गोरे हाथ हमारी राधा रानी के,
यामें मेहंदी करे कमाल हमारी राधा रानी के, मिश्री से...

छोटे छोटे पैर हमारी राधा रानी के,
यामें पायल करे कमाल हमारी राधा रानी के, मिश्री से...

गोरा गोरा रूप हमारी राधा रानी का,
यामें लहंगा करें कमाल हमारी राधा रानी के,
मिश्री से मीठे बोल हमारी राधा रानी के...

श्याम चंदा है श्यामा चकोरी

श्याम चंदा है श्यामा चकोरी,
बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी,

मोर मुकुट पीतांबर धरैइयां, मुरलीधर है यह कृष्ण कन्हैया,
नीलांबर धर है भानु किशोरी, बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी

श्याम रसिया है श्यामा रसीली, कृष्ण छलिया है राधा शर्मिली,
कृष्ण काला है राधा है गोरी, बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी

गिरधर गोपाल गोकुल का राजा, बृज की सरकार है रानी राधा,
प्राणजीवन परम धन तिजोरी, बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी

दोनों ही रूप रस की है की है धारा, जिसमें डूबा है संसार सारा,
नंद नंदन के भानु की किशोरी, बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी

दोनों में प्रेम है इतना ज्यादा, राधा मोहन तो मोहन है राधा,
कृष्ण मन का 'मधुप' राधा गोरी, बड़ी सुंदर है दोनों की जोड़ी

मेरे बाँके बिहारी लाल

मेरे बाँके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी, नज़र तोहे लग जाएगी
मेरे बाँके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी
तेरी सूरतिया पे मन मोरा अटका
प्यारा लागे तेरा पीला पटका x2

तेरी टेढ़ी-मेढ़ी चाल...

तेरी टेढ़ी-मेढ़ी चाल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी
तेरी मुरलिया पे मन मोरा अटका
प्यारा लागे तेरा नीला पटका x2

तेरे घूँघर वाले बाल...

तेरे घूँघर वाले बाल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी
तेरी कमरिया पे मन मोरा अटका
प्यारा लागे तेरा काला पटका x2

तेरे गल में वैजंती माल...

तेरे गल में वैजंती माल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी
प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी

मेरे बाँके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो शृंगार
नज़र तोहे लग जाएगी प्यारे, नज़र तोहे लग जाएगी

बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?

बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा? (बसा दोगे तो क्या होगा)
हाँ, बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा? (बसा दोगे तो क्या होगा?)
हाँ, बसा दोगे तो क्या होगा, बसा दोगे तो क्या होगा?

कृपा करके जो वृंदावन बुला लोगे तो क्या होगा? x2
हाँ, बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?

कभी तुम सामने आते, कभी फिर दूर हो जाते (कभी फिर दूर हो जाते) x2
प्यारे, कभी फिर दूर हो जाते

हमारे बीच का परदा हटा दोगे तो क्या होगा? x2

हो, बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?

तेरा दीदार पाने को तरसती हैं मेरी नज़रें (तरसती हैं मेरी नज़रें) x2
प्यारे, तरसती हैं मेरी नज़रें

अगर दासी को चरणों से लगा लोगे तो क्या होगा? x2

हाँ, बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?

सुना है, "तुमने वृंदावन में दावा नल बुझाया था" (दावा नल बुझाया था)
सुना है, "तुमने वृंदावन में दावा नल बुझाया था" (दावा नल बुझाया था)
हो, दावा नल बुझाया था

मेरी विरहा की अग्नि को बुझा दोगे क्या होगा? x2

हो, बिहारी ब्रज में घर मेरा बसा दोगे तो क्या होगा?

दुर्गा माता

मंदिर में उड़े रे गुलाल गुलाबी रंग प्यारा लगे

मंदिर में उड़े रे गुलाल गुलाबी रंग प्यारा लगे,
हो मंदिर में उड़े रे गुला गुलाबी रंग प्यारा लगे
गुलाबी रंग प्यारा लगे गुलाबी रँग प्यारा लगे
मंदिर में उड़े रे गुलाल गुलाबी रंग प्यारा लगे

मैया की बिंदी चम चम चमके,
चम चम चमके, चम चम चमके,
मैया जी की बिंदी चम चम चमके,
सिन्दूर लालो में लाल, गुलाबी रँग प्यारा लगे ।
मंदिर में उड़े रे गुलाल, गुलाबी रंग प्यारा लगे ।

मैया की चुडिया, चम चम चमके,
चम चम चमके, चम चम चमके,
मैया की चुडिया, चम चम चमके,,
मेहंदी लालो में लाल, गुलाबी रँग प्यारा लगे ।
मंदिर में उड़े रे गुलाल, गुलाबी रंग प्यारा लगे ।

मैया के बिछुए चम चम चमके,
चम चम चमके, चम चम चमके,
महावर लालो में लाल, गुलाबी रँग प्यारा लगे ।
मंदिर में उड़े रे गुलाल, गुलाबी रंग प्यारा लगे ।

मैया का लंहगा चम चम चमके,
चम चम चमके, चम चम चमके,
चुनरी लालो में लाल, गुलाबी रँग प्यारा लगे ।
मंदिर में उड़े रे गुलाल, गुलाबी रंग प्यारा लगे ।

प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी....
बड़ा न्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी
भगतो की लगी है कतार भवानी

ऊँचे पर्वत भवन निराला, आके शीश नवावे संसार भवानी
तेरे भक्तों की लगी है कतार भवानी
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी ...

जग मग जग मग जोत जगे है, तेरे चरणों में गंगा की धार भवानी
तेरे भक्तों की लगी है कतार भवानी
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

लाल चुनरिया लाल लाल चूड़ा, गले लाल फुलोंके सोये हार भवानी
तेरे भक्तों की लगी है कतार भवानी
बड़ा प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

सावन महीना मैया झूला झूले, कोयल गाये मल्हार भवानी
तेरे भक्तों की लगी है कतार भवानी
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

पल में भरती झोली खाली, तेरे खुल्ले दया के भंडार भवानी
तेरे भगतो की लगी है कतार भवानी
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

लखवा को है तेरा सहारा माँ, कर दे अपने 'सरल' का बेड़ा पर भवानी
बड़ा प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी
भक्तों की... तेरे भक्तों की... यहाँ भक्तों की लगी है कतार भवानी
प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

मैय्या है मेरी शेरोवाली

मैय्या है मेरी शेरोवाली, शान है माँ की बड़ी निराली,
सच्चा है माँ का दरबार, मैय्या का जवाब नहीं ॥

ऊँचे पर्वत भवन निराला, भवन मे देखो सिंघ विशाला,
सिंघ पे है मैय्या जी सवार, मैय्या का जवाब नहीं ॥ ॥

माथे की बिंदियां चम चम चमके, हाथो का कंगना खन खन खनके,
लाल गले मे हार, मैय्या का जवाब नहीं ॥ ॥

माँ है दुर्गा माँ है काली, भक्तो की झोली भरने वाली मैया,
करती बेड़ा पार, मैय्या का जवाब नहीं ॥ ॥

नंगे पेरौ अकबर आया, ला सोने छत्र चढ़ाया,
दुर किया अहंकार, मैय्या का जवाब नहीं ॥ ॥

मैय्या है मेरी शेरोवाली, शान है माँ की बड़ी निराली,
सच्चा है माँ का दरबार, मैय्या का जवाब नहीं ॥

भोग

आज हरी आये, विदुर घर पावना ॥

आज हरी आये, विदुर घर पावना ॥

आज हरी आये, विदुर घर पावना ॥

विदुर नहीं घर मैं विदुरानी, आवत देख सारंग प्राणी ।
फूली अंग समावे न चिंता ॥ भोजन कंहा जिमावना ॥

केला बहुत प्रेम से लारीं, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख मांही ॥ लगे बहुत सुहावना,

इतने में विदुरजी घर आये, खरे खोटे वचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम मुख मांही ॥ कँहा गवाई भावना,

केला लीन्ह विदुर हाथ मांही, गिरी देत गिरधर मुख मांही ।
कहे कृष्ण जी सुनो विदुर जी ॥ वो स्वाद नहीं आवना,

बासी कूसी रूखी सूखी, हम तो विदुर जी प्रेम के भूखे ।
शम्भू सरवी धन्य धन्य विदुरानी ॥ भक्तन मान बढावना ।

थाली भरकर ल्याइँ रै खीचड़ौ

थाली भरकर ल्याइँ रै खीचड़ौ, उपर घी की बाटकी,
जीमो म्हारो श्याम धणी, जिमावै बेटी जाट की ।

बाबो म्हारो गांव गयो है, ना जाने कद आवैलो,
ऊके भरोसे बैठयो रहयो तो, भूखो ही रह जावैलो ।
आज जिमाऊं तैने रे खीचड़ो, काल राबड़ी छाछ की,
थाली भरकर ल्याइँ रै...

बार-बार मंदिर न जुड़ती, बार-बार में खोलती,
कईया कोइनी जीमे रे मोहन, करडी-2 बोलती ।
तू जीमे तो जद मैं जिमूं, मानू ना कोई लाट की,
जीमो म्हारो श्याम धणी, जिमावै बेटी जाती की ।।
थाली भरकर ल्याइँ रै...

परदो भूल गई सांवरियो, परदो फेर लगायो जी,
सा परदो की ओट बैठ के, श्याम खीचड़ौ खायो जी,
भोला-भाला भगता सूं, सांवरिया कइंया आंट की ।
थाली भरकर ल्याइँ रै...

भक्ति हो तो करमा जैसी सावरियों घर आवेलो,
भक्ति भाव से पूर्ण होकर हर्ष-2 गुण गावेलो ।
सांचो प्रेम प्रभु से होतो मूरत बोले काठ की,
थाली भरकर ल्याइँ रै...

आओ आओ सावरिया बेगा आओ

मीठो है नमकीन है बाबा चरपरो थोड़ो खाटो
सोने की थाली में परोसेयो ढाल चांदी को बाटो
टाबरिया मनोहार करे बाबा देखूं थे कहीया नाटो
भोग लगाओ श्याम धनि रे थारा बाकि भक्ता ने बांटो

आओ आओ सावरिया बेगा आओ, जी मोजी भोग लगाओ,
है छप्पन भोग तैयार जी, थारा टाबरिया करे मनुहार जी,

केसरिया बरफी कलाकंद रबड़ी पैड़ा इमरती बालूशाही,
लड्डू बूँदिया जलेबी रसगुल्ला गाजर पाक रसमलाई,
गुलाब जामुन शकरपारा घेवर न्यारा न्यारा,
जिमन आओ ना तोरा और घलबो, है छप्पन...

दाल मोठ पकोड़ी कचोरी भुजिया पापड़ चिवड़ो
कढ़ी राबड़ी साग सांगरी को बाजरे का बाबा खीचड़ो,
रायता में जीरा को तडको पीओ मार सबरको,
साग काचरे की चट्नी चटाओ जिमो जिब हॉग लगाओ, है छप्पन...

काजू किस्मीस गोजा खुरमानी खोपरा छुआरा बादाम लेओ,
जीम झूठ और आचमन करके फिर थोरी आराम लेवो,
सौंफ इलाइची हाजिर कर दी सागे मिशरी धर दी,
सोई नागरिया पान चवाबो जिमो जी भोग लगाओ, है छप्पन...

आम अमरूद अंगूर अनानास आलू बुखारा अनार धरो,
केला सेब पपीता चिकू संतरा मौसम्बी रसधार धरो,
काकड़िया रे लाल मतिरा और टमाटर खीरा
नींबू खाटो थोड़ो छिड़काओ जिमो जी भोग लगाओ, है छप्पन...

छप्पन भोग परोसया थारे भगता श्याम घनी स्वीकार करो,
सरल बावलो महिमा गावे अन्न धन्न से भंडार भरो,
लीला थारी सब जाग जानी जय हो शीश का दानी,
बिगड़ी लख्वा की थे हो तो बनाओ जिमो जी भोग लगाओ, है छप्पन...

सीता मैया ने करी ज्योनार

सीता मैया ने करी ज्योनार पवनसुत हरे हरे पवनसुत न्योत दिये

ब्रम्हा न्योते विष्णु न्योते न्योते भोलेनाथ,
सारी वानर सेना न्योती न्योत दिये हनुमान,
पवनसुत हरे हरे पवनसुत न्योत दिये

ब्रम्हा आये विष्णु आये आये भोलेनाथ,
सारी वानर सेना आई आय गये हनुमान,
पवनसुत हरे हरे पवनसुत न्योत दिये

पूड़ी परसी कचौड़ी परसी लड्डू परसे चार,
खीर रायता सब ही परसो रबड़ी तो पारसी लच्छेदार, पवनसुत...

ब्रम्हा खा गये विष्णु खा गये खा गये भोलेनाथ,
सारी वानर सेना खा गयी हनुमत को भरो नाही पेट, पवनसुत...

राम जी बोले सुन लो सीता ध्यान से मेरी बात,
एक दल तुलसी पत्ता परसो हनुमत को भर जाये पेट, पवनसुत...

दौड़ी दौड़ी सीता मैया गई तुलसी के पास,
एक दल तुलसी पत्ता परसो हनुमत को भर गयो पेट,
पवनसुत हरे हरे पवनसुत न्योत दिये

आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन

आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...

दुर्योधन को मेवा त्यागो,
साग विदुर घर खायो प्यारे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
भिलनी के बैर सुदामा के तंडुल
रूचि रूचि भोग लगाओ प्यारे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
वृदावन की कुञ्ज गली मे,
आओं रास रचाओ मेरे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
राधा और मीरा भी बोले,
मन मंदिर में आओ मेरे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
गिरी, छुआरा, किशमिश मेवा,
माखन मिश्री खाओ मेरे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
सत युग त्रेता दवापर कलयुग,
हर युग दरस दिखाओ मेरे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
जो कोई तुम्हारा भोग लगावे
सुख संपत्ति घर आवे प्यारे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
ऐसा भोग लगाओ प्यारे मोहन
सब अमृत हो जाये प्यारे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...
जो कोई ऐसा भोग को खावे
सो तयारा हो जाये प्यारे मोहन, आओ भोग लगाओ प्यारे मोहन...



डॉ राम अवतार अग्रवाल

का जन्म मध्यम वर्गीय परिवार में जगनेर ज़िला आगरा में हुआ था। पिता श्री नत्थी लाल सिद्धांतवादी तथा माता धार्मिक विचारों की थी। दोनों का ही प्रभाव राम अवतार पर रहा। प्रारंभिक शिक्षा जगनेर में तथा उसके बाद राजकीय इंटर कॉलेज आगरा में हुई।

प्रथम प्रयास में ही पी.एम.टी. में चयन के बाद एम.बी. बी.एस. और एम.डी. (रेस्पिरेटरी मेडिसिन) की शिक्षा रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज उदयपुर राजस्थान में हुई। डॉ. अग्रवाल ने राजस्थान सरकार के चिकित्सा विभाग में विभिन्न पदों पर ३० वर्षों तक उच्च स्तरीय सेवाएँ दी जिसके लिये ज़िला कलेक्टर एवं राजस्थान सरकार द्वारा कई बार सम्मानित किया गया।

प्रारंभ से ही डॉ. राम अवतार का झुकाव आध्यात्म और भारतीय संस्कृति की ओर रहा। अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी निभाते हुए मंदिर निर्माण, मोक्ष धाम, दीन हीनों की सेवा में समय समय पर भरपूर सहयोग किया। सामूहिक विवाह सम्मेलन में दंपत्तियों को आजीवन निःशुल्क चिकित्सा सेवाएँ देने का वचन दिया।

गरीब चिकित्सा से वंचित ना रहें इसलिए न्यूनतम शुल्क पर अपने निजी अस्पताल में ज़िला मुख्यालय धौलपुर राजस्थान में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

नयी पीढ़ी अपने प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान एवं भारतीय संस्कृति से अपरिचित न रहें यह सोच कर ही इस पुस्तक को संकलित किया गया है।

उनके जीवन का मूल सिद्धांत राजा रंतिदेव के इस श्लोक पर है -

न त्वहम् कामये राज्यम् न स्वर्गम् न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानम् प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अर्थात् न तो मुझे राज्य की कामना है और न ही स्वर्ग चाहिए, न ही पुनर्जन्म चाहिए। मुझे तो दुःख में जलते हुए प्राणियों की पीड़ा का नाश करने की शक्ति चाहिए।



यह पुस्तक दिये गये URL पर निःशुल्क उपलब्ध है

<https://dharmsangrah.in/>

